

# आवासध्वनि



## 56<sup>वीं</sup> वार्षिक सामान्य बैठक

24 अगस्त 2026 | नई दिल्ली



अर्बन इन्वेस्टर विंडो  
एक विंडो। अनेक अवसर।

सहयोग करें। निवेश करें। बदलाव लाएँ। सतत शहरी भविष्य के लिए साथ मिलकर आगे बढ़ें।

**हाउसिंग एंड अर्बन डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन लिमिटेड**



दिनांक 19 अगस्त, 2026 को नराकास (दिल्ली उपक्रम-2) की छमाही बैठक एवं पुरस्कार वितरण समारोह में श्रीमती अंशुली आर्या, सचिव राजभाषा, गृह मंत्रालय, भारत सरकार के कर कमलों से हडको को विशेष प्रशंसा शील्ड से सम्मानित किया गया। यह पुरस्कार हडको द्वारा नवीन पहल के रूप में आयोजित की गई राजभाषा ओलंपियाड प्रतियोगिता एवं हडको की गृह पत्रिका 'आवास ध्वनि' के उत्कृष्ट प्रकाशन हेतु प्रदान किया गया जिसे श्री शैलेश प्रकाश त्रिपाठी, वरिष्ठ कार्यकारी निदेशक (रा.भा.) एवं डॉ. रेखा चन्दोला, राजभाषा अधिकारी, हडको ने प्राप्त किया। साथ ही इस अवसर पर अन्य सदस्य कार्यालयों द्वारा आयोजित अनुवाद प्रतियोगिता में श्री एस. एन. गुप्ता, एजीएम (विधि) तथा प्रश्न-मंच प्रतियोगिता में विजेता श्रीमती पूर्णिमा कोहलीवाल, एजीएम (रा.भा.) को भी पुरस्कृत किया गया। राजभाषा के प्रचार-प्रसार के क्षेत्र में हडको के लिए यह विशेष उपलब्धि रही।



## विषय सूची

| क्रम संख्या | विषय                                                       | लेखक का नाम                | पृष्ठ संख्या |
|-------------|------------------------------------------------------------|----------------------------|--------------|
| 1.          | संदेश                                                      |                            | 3-4          |
| 1           | वैश्विक बाजार की भाषा के रूप में हिंदी : कल, आज और कल      | डॉ. रवि शर्मा              | 5-8          |
| 2           | हिंदी को रोमन लिपि से बढ़ता खतरा                           | श्री हरेन्द्र प्रताप सिंह  | 9-11         |
| 3           | हरेला पर्व का संदेश: प्रकृति, मातृत्व और भविष्य की हरियाली | श्री संजय भार्गव           | 12-13        |
| 4           | हिंदी भाषा का महत्व                                        | श्रीमती संतोष सिल्योकर     | 14-16        |
| 5           | डिजिटल युग में हिंदी भाषा                                  | डॉ. अरुण राणा              | 17-21        |
| 6           | राजभाषा हिन्दी की व्यवहार्यता                              | डॉ. इंदर सेंगर             | 22-25        |
| 7           | कार्यालय में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा                     | श्रीमती पूर्णिमा कोहलीवाल  | 26-29        |
| 8           | भाषा के प्रक्षेपास्त्र                                     | डॉ. अशोक बत्रा             | 30-33        |
| 9           | बच्चों में मोबाईल फोन का बढ़ता उपयोग सुविधा या चुनौती?     | श्री अजय कुमार अरोड़ा      | 34-36        |
| 10          | सुदृढ़ ऋण प्रबंधन : विकास वित्त की आधारशिला                | श्री संजीव कुमार सैनी      | 37-40        |
| 11          | भारतीय स्वाधीनता संग्राम में पूर्वोत्तर की भूमिका          | श्री विकास भक्त            | 41-44        |
| 12          | कृत्रिम बुद्धिमत्ता और रोजगार का भविष्य                    | श्री दीपक                  | 45-49        |
| 13          | उन्नत तकनीकी युग में हिंदी: प्रशासन से जनसंपर्क तक         | श्री अनीश गोस्वामी         | 50-54        |
| 14          | राजभाषा एवं क्षेत्रीय भाषाएँ                               | श्री शुभम कुमार            | 55-57        |
| 15          | एएलएम विंग की प्रमुख उपलब्धियाँ                            | श्री अश्विनी कुमार         | 58-61        |
| 16          | वर्षा ऋतु                                                  | श्रीमती मंजू बाला          | 62-64        |
| 17          | नई शिक्षा नीति में हिंदी एवं भारतीय भाषाओं का भविष्य       | श्री धीरज कुमार            | 65-69        |
| 18          | पर्यावरण संरक्षण                                           | श्रीमती मीतू शर्मा         | 70-72        |
| 19          | आधुनिक कार्यस्थल और हिंदी : एक प्रभावी सेतु                | श्री यशोदीप सिंह           | 73-77        |
| 20          | अंतरराष्ट्रीय योग दिवस-2026 : हडको की प्रेरक सहभागिता      | श्री हर्षित खंडेलवाल       | 78-80        |
| 21          | डिजिटल युग में गलत सूचना और फेक न्यूज़                     | श्री मयंक मोहन             | 81-83        |
| 22          | जल : जीवन, विज्ञान और अध्यात्म का अद्भुत संगम              | श्री राकेश कुमार डागर      | 84-87        |
| 23          | नए दौर में हिंदी: व्हाट्सएप, मीम्स और सोशल मीडिया          | श्री सुमित कुमार गुप्ता    | 88-92        |
| 24          | हडको में राजभाषा का वर्चस्व                                | डॉ. रेखा चन्दोला           | 93-95        |
| 25          | मैं अच्छा हूँ                                              | डॉ विभा द्विवेदी रत्नगर्भा | 96           |

## संपादकीय

हडको की अर्द्धवार्षिक गृह पत्रिका  
वर्ष 2026-27 (नौवां अंक)

**संरक्षक**

**श्री संजय कुलश्रेष्ठ**

अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

**उप संरक्षक**

**श्री एम नागराज**

निदेशक (कॉर्पोरेट प्लानिंग)

**श्री दलजीत सिंह खतरी**

निदेशक (वित्त)

**संपादक**

**श्री शैलेश प्रकाश त्रिपाठी**

वरि. कार्यकारी निदेशक (राजभाषा)

**उप-संपादक**

**डॉ. रेखा चन्दोला**

वरि. प्रबन्धक (राजभाषा)

**विशेष सहयोग**

**श्रीमती पूर्णिमा कोहलीवाल**

सहा. महाप्रबन्धक (सचि.-रा.भा.)

**श्री सुरेश कुमार**

वरि.प्रबन्धक (प्रशासन)

**श्रीमती सुनीता**

वरि.प्रबन्धक (आई.टी.)

**श्री अनीश गोस्वामी**

प्रशिक्षु अधिकारी (राजभाषा)

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं की मौलिकता एवं आंकड़ों के लिए लेखक स्वयं जिम्मेदार हैं।  
हडको भवन, कोर 7ए, इंडिया हैबिटेड सेंटर, लोधी रोड, नई दिल्ली - 110003



## लक्ष्य

"जीवन स्तर को ऊँचा  
उठाने के लिए सुदृढ़  
पर्यावास विकास को  
बढ़ावा देना"

## उद्देश्य

"जनमानस के आजीविका  
बदलाव के लिए सुदृढ़ पर्यावास  
विकास को बढ़ावा देते हुए  
अग्रणी तकनीकी-वित्तीय  
संगठनों में स्थान बनाना"



## संदेश

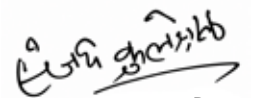


प्रिय साथियो,

राजभाषा हिंदी प्रशासनिक दक्षता के साथ-साथ भावनात्मक एकात्मता की भी सशक्त वाहक है। हडको में हिंदी का बढ़ता प्रयोग इस तथ्य का प्रमाण है कि भाषा तभी सार्थक होती है, जब वह कार्य, विचार और व्यवहार- तीनों का स्वाभाविक माध्यम बन जाए। यह पत्रिका उसी सकारात्मक सोच की सजीव अभिव्यक्ति है। मुझे विश्वास है कि 'आवास ध्वनि' का यह अंक भी हडको के विविध आयामों को प्रभावी ढंग से रेखांकित करते हुए कार्मिकों की रचनात्मक ऊर्जा को नई दिशा प्रदान करेगा। किसी भी संस्था की वास्तविक शक्ति केवल उसकी उपलब्धियों में ही नहीं, बल्कि उसके मूल्यों, विचारों और कार्य प्रणाली में भी निहित होती है। हडको अपनी विकास यात्रा में केवल आवास एवं शहरी अवसंरचना के वित्तपोषण तक ही सीमित नहीं है बल्कि अपने सतत् प्रयासों से समाज के बुनियादी विकास में उत्तरोत्तर वृद्धि करते हुए अपनी विशिष्ट पहचान बनाए हुए है।

इसी क्रम में 'आवास ध्वनि' गृह पत्रिका का प्रकाशन हडको की संस्थागत चेतना और राजभाषा के प्रति उसकी प्रतिबद्धता को अभिव्यक्ति प्रदान करने का एक सार्थक प्रयास है। इस उत्कृष्ट अंक के प्रकाशन से जुड़े संपादकीय मंडल, सभी लेखकों, रचनाकारों तथा सहयोगी कार्मिकों को मैं हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रभावी संवर्धन के प्रति हमारी सामूहिक प्रतिबद्धता को निरंतर नई ऊर्जा और व्यापक आयाम प्रदान करती रहेगी।

शुभकामनाओं सहित,



संजय कुलश्रेष्ठ

अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक



## संदेश



हडको आवास एवं शहरी विकास के क्षेत्र में अपनी विशिष्ट पहचान स्थापित करते हुए, भारत सरकार के "विकसित भारत" के संकल्प को साकार करने में निरंतर योगदान दे रहा है। यह उपलब्धि हमारे दूरदर्शी नेतृत्व, उत्कृष्ट प्रशासनिक व्यवस्था, वित्तीय अनुशासन तथा सभी कार्मिकों के समर्पित प्रयासों का परिणाम है। राजभाषा के क्षेत्र में हडको गृह पत्रिका 'आवास ध्वनि' का प्रत्येक अंक संस्थान की विविध गतिविधियों, उपलब्धियों तथा कार्मिकों की सृजनात्मक अभिव्यक्तियों का संकलन है। मुझे विश्वास है कि यह अंक भी ज्ञानवर्धक, प्रेरणादायी एवं संग्रहणीय होने के साथ-साथ पाठकों को हडको की विकास-यात्रा से आत्मीय रूप से जोड़ने में सफल रहेगा।

मैं इस अंक के सफल प्रकाशन हेतु संपादकीय मंडल, सभी लेखकों, रचनाकारों एवं सहयोगियों को हार्दिक बधाई देता हूँ। साथ ही, आशा करता हूँ कि हम सभी राजभाषा के प्रभावी प्रयोग को और अधिक सुदृढ़ करते हुए उत्कृष्टता और पारदर्शिता के संकल्प के साथ राष्ट्र निर्माण की दिशा में निरंतर अग्रसर रहेंगे।

शुभकामनाओं सहित,

*एम नागराज*

**एम नागराज**

निदेशक (कॉर्पोरेट प्लानिंग)





## वैश्विक बाज़ार की भाषा के रूप में हिंदी : कल, आज और कल

वैश्विक बाज़ार अर्थात् एक ऐसा बाज़ार जहाँ पूरे विश्व के लोग व्यापार कर सकें। दूसरे शब्दों में - वह बाज़ार, जहाँ प्रत्येक राष्ट्र का व्यापारी माल खरीद सके या अपना माल बेच सके। बीसवीं शती के उत्तरार्ध में पूंजीवादी विश्व के प्रतिनिधि अमेरिका तथा साम्यवादी विश्व के प्रतिनिधि सोवियत रूस में शीत युद्ध अपने चरम उत्कर्ष पर पहुँच गया था। दोनों महाशक्तियाँ एक दूसरे पर परोक्ष रूप से घात-प्रतिघात कर रही थीं। अंततः पूंजीवादी महाशक्ति ने साम्यवादी महाशक्ति को घुटने टेकने पर विवश कर दिया। सोवियत संघ खंड-खंड हो गया। उसका महाशक्ति का स्वरूप विघटित हो गया। अमेरिका स्वतः ही विश्व की एकमात्र महाशक्ति के रूप में विश्व पर छा गया।

पूँजीवादी शक्तियाँ संतोष धन, विद्या धन आदि से अधिक महत्त्व लक्ष्मी धन को ही देती हैं। वे इस धन की उत्तरोत्तर वृद्धि के लिए सतत प्रयासरत रहती हैं। नित्य नई नीतियाँ, योजनाएँ, छलकपट, प्रपंच, षड्यंत्र कुछ भी अपनाकर वे धनमार्ग पर सरपट आगे-ही-आगे दौड़ती जाती हैं। अपने माल को खपाने तथा नए संसाधन जुटाने के लिए वे निरंतर नए बाज़ारों की खोज में रहती हैं। ऐसे में, तीसरी दुनिया के देश तथा भारत जैसे तेज़ी से उभरते विकासशील देश उनकी निगाह से कैसे बच सकते हैं ?

सन् 1980 के आस-पास आधुनिकीकरण, उदारीकरण, वैश्वीकरण या भूमंडलीकरण की तिकड़ी ने भारत में प्रवेश किया और देखते-ही-देखते पूरे देश को अपने आगोश में ले लिया। आधुनिक तकनीक, नवीन यंत्र, जनसंचार के साधन मानो मिलकर इस तिकड़ी के स्वागत में पलक - पाँवड़े बिछाकर खड़े हो गए। बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ भारत को एक बड़े बाज़ार के रूप में ललचाई नजरों से देख रही थीं। भारतीय मध्य वर्ग की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ हो रही थी, उसकी क्रय शक्ति भी बढ़ रही थी, किंतु सदियों से डाली गई बचत की आदत, 'सादा जीवन उच्च विचार' जैसी मान्यताओं तथा जैसे-तैसे काम चलाने की प्रवृत्ति के कारण मध्यवर्ग भौतिक वस्तुओं को क्रय करने में अधिक विश्वास नहीं रखता था। यह बात लाभोन्मुखी बहुराष्ट्रीय कंपनियों को भला कैसे गवारा होती ? उन्होंने समस्या के समाधान सोचने शुरू किए। समाधान का अचूक नुस्खा मिला-विज्ञापन। कंपनियों ने माँग पैदा करने पर जोर दिया और परंपरागत अर्थशास्त्रीय सिद्धांत 'माँग एवं आपूर्ति' को पलट दिया। पहले आपूर्ति की तैयारी करो, फिर माँग पैदा करो। इसीलिए हज़ारों करोड़ रुपए का विज्ञापन का व्यवसाय पूरे विश्व में फैल गया।

इस पूरे वैश्विक परिदृश्य को हिंदी भी बहुत निकट से तथा ध्यान से देख रही थी। अंग्रेज़ी की भाँति हिंदी भी एक जीवित भाषा है। लचीलापन उसकी विशेषता है और अपनी इसी विशेषता के कारण विगत एक हज़ार वर्षों में हिंदी न केवल जीवित रही, अपितु अनेक षड्यंत्रों, बाधाओं, आक्रमणों पर विजय पाती हुई निरंतर पल्लवित-पुष्पित होती रही। पिछले तीन दशकों में हिंदी समय तथा परिस्थितियों के साथ कदम-से-कदम मिलाते हुए हिंदी भाषी प्रदेशों की भाषा से आगे बढ़कर भारत की संपर्क भाषा, राष्ट्रभाषा, केंद्र की राजभाषा, दस राज्यों की राज्य भाषा, तीन राज्यों की द्वितीय भाषा जैसे पड़ावों को पार करते हुए विश्व भाषा बनने की ओर अग्रसर है।



आज हिंदी विश्व में सर्वाधिक बोली एवं समझी जाने वाली भाषा है। भले ही भाषा प्रयोक्ताओं की संख्या की दृष्टि से चीन की भाषा चीनी (या मैण्डिन) प्रथम स्थान पर है, किंतु हिंदी की ही एक शैली उर्दू के प्रयोक्ताओं की संख्या जोड़ लेने पर हिंदी चीनी से कहीं आगे है। दूसरी महत्वपूर्ण बात यह है कि चीनी भाषा के प्रयोक्ता चीन से बाहर उतने नहीं हैं, जितने हिंदी भाषा के हैं।

नेपाल, पाकिस्तान, बांग्लादेश, बर्मा, भूटान जैसे पड़ोसी देशों, मॉरिशस, फिजी, सूरीनाम, त्रिनिडाड, टोबेगो, गयाना जैसे भारतवंशी बहुल देशों तथा खाड़ी देश, इंग्लैंड, अमेरिका, कनाडा, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड जैसे अप्रवासी भारतीय बहुल देशों में हिंदी के प्रयोक्ता लाखों की संख्या में हैं। विश्व के लगभग 150 देशों में हिंदी पढ़ने, लिखने, बोलने, समझने का काम यानी संपर्क स्थापित करने का काम करती है। (अधिक जानकारी के लिए देखें - ग्लोकल हिंदी (पुस्तक) लेखक - डॉ. रवि शर्मा)

वैश्विक बाज़ार में टिके रहने के लिए आवश्यक है कि हिंदी का साहित्यिक रूप के साथ-साथ प्रयोजनमूलक रूप भी विकसित हो। संविधान में राजभाषा के रूप में 14 सितंबर, 1949 को स्वीकृत हो जाने के बाद हिंदी में कार्यालयी पत्राचार और टिप्पण की आवश्यकता बढ़ी। इसके लिए प्रारंभ में अनुवाद का सहारा लिया गया। धीरे-धीरे हिंदी में कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक, आलोचना ही नहीं, विज्ञापन लेखन, व्यावसायिक पत्राचार, प्रिंट एवं इलेक्ट्रॉनिक मीडिया लेखन, ब्लॉग लेखन आदि भी प्रचुर मात्रा में हुआ। हिंदी में अरबी-फारसी की तरह अंग्रेज़ी शब्दों का भी खूब धड़ल्ले से प्रयोग होने लगा है।

एक हिंदी भारतेंदु के समय में 1873-74 के आसपास नई चाल में ढली थी, दूसरी हिंदी सन् 2000 के बाद नई चाल में ढल रही है। हिंदी भाषा में अंग्रेज़ी शब्दों की बहुलता जहाँ एक ओर चिंता पैदा करता है, वहीं दूसरी ओर इतिहास गवाह है कि संस्कृत से पालि-पाकृत और अपभ्रंश से सरलीकृत होते-होते ही हिंदी का विकास हुआ था। अरबी-फारसी के हजारों शब्द हिंदी ने अपने में खपा लिए, इससे हिंदी मरी नहीं, अपितु और भी बड़े समुदाय में फैली, उसकी लोकप्रियता तथा स्वीकार्यता उर्दू भाषियों में भी बढ़ी। इसी प्रकार, हो सकता है कि आने वाले 40-50 वर्षों में हजारों अंग्रेज़ी शब्दों को आत्मसात करके हिंदी फिर नए रूप-रंग आगे बढ़े और अंग्रेज़ी भाषियों के बीच भी स्वीकार्य हो जाए। इसका प्रमाण यह है कि विदेशों में बसे करोड़ों हिंदी भाषियों की महत्ता के फलस्वरूप अंग्रेज़ी शब्दकोशों में भी अनेक हिंदी के शब्द स्वीकृत होते जा रहे हैं।

विगत वर्षों में एक नई प्रवृत्ति हिंदी के पक्ष में विकसित हो रही है। भारत सरकार की देखरेख में आयोजित हो चुके ग्यारह विश्व हिंदी सम्मेलनों के समानांतर अब कुछ संस्थाओं तथा व्यक्तियों के प्रयासों से अंतरराष्ट्रीय हिंदी सम्मेलन आयोजित होने लगे हैं। इस प्रकार के कई सम्मेलन संयुक्त अरब अमीरात, नेपाल, थाइलैंड, वियतनाम, मॉरिशस, रूस, सिंगापुर, इंडोनेशिया आदि देशों में हो चुके हैं। विदेशों में इसी प्रकार अनेक रामायण सम्मेलन, भोजपुरी सम्मेलन भी हो चुके हैं। इन सम्मेलनों के माध्यम से हिंदी भाषियों में आत्मगौरव का संचार होता है, वे एकजुट होते हैं तथा उन सब देशों में हिंदी के पक्ष में एक सकारात्मक वातावरण निर्मित होता है।

वैश्विक बाज़ार की भाषा के रूप में हिंदी को आगे बढ़ाने में मीडिया (विशेषतः इलेक्ट्रॉनिक मीडिया) की अत्यधिक महत्वपूर्ण भूमिका है। भारत में जब विदेशी चैनल शुरू हुए थे तो स्टार, सोनी, डिस्कवरी, कार्टून नेटवर्क आदि सभी चैनल केवल अंग्रेज़ी के कार्यक्रम दिखाते थे। जल्दी ही इन्होंने समझ लिया कि यदि भारत में टिकना है तथा लाभ कमाना है, तो अंग्रेज़ी से काम नहीं चलेगा। शीघ्र ही ये चैनल अपने कार्यक्रम हिंदी में डब करके दिखाने लगे। धीरे-धीरे अन्य भारतीय भाषाओं में भी कार्यक्रम डब किए जाने लगे। हॉलीवुड में बनने वाली अंग्रेज़ी फिल्मों पहले



कई महीनों बाद हिंदी में भारत में रिलीज़ होती थीं। आज अनेक अंग्रेज़ी फिल्मों एक साथ अंग्रेज़ी, हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं में रिलीज़ होती हैं। क्यों ? क्या विदेशियों के हिंदी या भारतीय भाषाओं के प्रति प्रेम के कारण ? नहीं, बिलकुल नहीं। मुख्य कारण है - लाभ।

आज हिंदी लाभ की भाषा है। हिंदी के पास बड़ा बाज़ार है। प्रत्येक कंपनी को अपने उत्पाद बेचने के लिए विज्ञापन की आवश्यकता है। हिंदी आज विज्ञापन की भाषा है। टी.वी. पर दिखाए जाने वाले लोकप्रिय हिंदी धारावाहिक तथा हिंदी फिल्मों को सर्वाधिक विज्ञापन मिलते हैं। प्रायः सभी विज्ञापन हिंदी या अन्य भारतीय भाषाओं में बनाए जाते हैं। इस प्रकार, भारत ही नहीं, पूरे विश्व में फैले भारतीयों तक अपने उत्पादों की जानकारी पहुँचाने का सरल-सशक्त साधन है - हिंदी।

वैश्विक बाज़ार की ज़रूरतों के मुताबिक हिंदी अपने को ढाल रही है। नवीन संचार माध्यमों-इंटरनेट, सोशल नेटवर्किंग साइट्स, ब्लॉग्स आदि पर हिंदी बहुत तेज़ी से अपनी उपस्थिति दर्ज करा रही है। कंप्यूटर के आगमन से हिंदी में टाईप करने की समस्या का समाधान हो गया। आज हिंदी टाईप करने के लिए अलग की बोर्ड या कंप्यूटर की आवश्यकता नहीं है। हिंदी के फॉण्टों की विविधता के कारण जो समस्या उत्पन्न हुई थी, उसे यूनिकोड ने हल कर दिया है। अब यूनिकोड पर टाईप की गई सामग्री को किसी भी कंप्यूटर पर पढ़ा जा सकता है तथा उसे ई मेल भी किया जा सकता है।

इंटरनेट पर हिंदी की सामग्री निरंतर बढ़ रही है। हिंदी में अनेक साहित्यिक वेबसाइट प्रतिदिन शुरू हो रही हैं। हिंदी के लगभग सभी समाचार पत्र इंटरनेट पर उपलब्ध हैं। अनेक ई-पत्रिकाएँ हिंदी में चल रही हैं। हिंदी में ब्लॉग लेखन एक विधा का रूप ले रहा है। ट्विटर, फेस बुक जैसी लोकप्रिय सोशल नेटवर्किंग साइट्स पर हिंदी दृढ़ता से अपने पाँव आगे बढ़ा रही है। देश-विदेश में अनेक रेडियो चैनल हिंदी के कार्यक्रम प्रसारित करते हैं। विश्व में सर्वाधिक समाचार चैनल, मनोरंजन चैनल, ज्ञानवर्धक चैनल हिंदी में चल रहे हैं और भरपूर लाभ कमा रहे हैं। भारत में नित्य नए-नए हिंदी चैनलों का शुरू होना, इसका प्रमाण है।

वैश्विक बाज़ार में हिंदी की बढ़ती लोकप्रियता के कारण अब हिंदी में रोज़गार के परंपरागत क्षेत्रों के साथ-साथ नवीन क्षेत्रों में भी अपार संभावनाएँ पैदा हो रही हैं। हिंदी शिक्षण के लिए भारत के बाहर के देशों में भी शिक्षकों को माँग बढ़ने लगी है। अनेक विदेशी कई कारणों से हिंदी सीख रहे हैं। अनुवादक तथा दुभाषिण के रूप में कुशल कार्मिकों की आवश्यकता सभी देशों में होने लगी है। मीडिया के क्षेत्र में समाचार पत्रों, पत्रिकाओं, रेडियो, टी.वी. चैनलों को बड़ी संख्या में पत्रकार, संवाददाता, प्रस्तोता, अनुवादक, कॉपी राइटर, कॉपी एडिटर, डबिंग आर्टिस्ट चाहिए।

इन सब सकारात्मक स्थितियों के बीच कुछ नकारात्मक स्थितियाँ भी जन्म ले रही हैं, जिनसे हिंदी के भविष्य को खतरा उत्पन्न हो सकता है। ये स्थितियाँ हैं - अंग्रेज़ी शब्दों की हिंदी के वाक्यों में बढ़ती अनावश्यक घुसपैठ, देवनागरी लिपि का कम होता प्रयोग, अंग्रेज़ी माध्यम से बच्चों को पढ़ाने की बढ़ती चाह, पूरे देश में प्राथमिक कक्षाओं में भाषा एवं शिक्षण माध्यम के रूप में अंग्रेज़ी को थोपना, घरों में धीरे-धीरे हिंदी तथा उसकी बोलियों के स्थान पर अंग्रेज़ी का बढ़ता प्रयोग, बिना हिंदी विषय के उच्च शिक्षा तक पढ़ाई संभव, जबकि अंग्रेज़ी अनिवार्य भाषा के रूप में लादी जा रही है, भरती परीक्षाओं में अंग्रेज़ी की अनिवार्यता, हिंदी की बोलियों यथा मैथिली, भोजपुरी, हरियाणवी आदि को हिंदी से काटकर उन्हें अलग भाषा का दर्जा देकर हिंदी के संख्याबल को कम करने का कुचक्र, बहुराष्ट्रीय कंपनियों, प्राइवेट या विदेशी बैंकों आदि पर भारत सरकार की राजभाषा नीति का लागू न होना, विदेशों में स्थित भारतीय



दूतावासों या उच्चायोगों के अधिकारियों द्वारा हिंदी की उपेक्षा आदि अनेक ऐसे बिंदु हैं, जो वैश्विक बाज़ार के इस दौर में हिंदी के विकास पथ पर अवरोध उत्पन्न करने का प्रयास कर रहे हैं।

आज आवश्यकता इस बात की है कि सभी हिंदी प्रेमी व्यक्तियों तथा संस्थाओं को अलग-अलग नहीं, एकजुट होकर हिंदी के विरुद्ध चल रहे षड्यंत्रों का मुँहतोड़ जवाब देना होगा। उन्हें आपसी मतभेद, व्यक्तिगत अहं या निजी हितों को त्यागकर हिंदी हित में उठ खड़े होना होगा। अपने घरों में, हिंदी भाषी प्रदेशों में, हिंदी को मजबूती से जमाना होगा। हिंदी भाषियों को कंप्यूटर-इंटरनेट से जुड़कर हिंदी के प्रचार-प्रसार में योगदान देना होगा, हिंदी में मनोरंजन के साथ-साथ ज्ञान का साहित्य भी अधिकाधिक रचना होगा, तभी हम सच्चे अर्थों में हिंदी की सेवा कर पाएँगे, वैश्विक बाज़ार के इस दौर में हिंदी को समर्थ-सक्षम बना पाएँगे तथा हिंदी का आने वाला कल उज्ज्वल बना पाएँगे।

**प्रो. रवि शर्मा 'मधुप'**

प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग  
श्री राम कॉलेज ऑफ कॉमर्स





## हिंदी को रोमन लिपि से बढ़ता खतरा !

आगामी चौदह सितंबर को फिर से हिंदी दिवस मनाया जा रहा है। हर साल इसे हम मनाते हैं। चौदह सितंबर से आगे-पीछे हम हिंदी पखवाड़ा भी आयोजित करते हैं। कहीं-कहीं इस अवसर पर हिंदी मास भी आयोजित किया जाता है। यह राजभाषा का सालाना हिंदी उत्सव है जो आजकल दिल्ली से बाहर निकल कर हिंदी महोत्सव भी बन जा रहा है। इस पावन अवसर पर हम हिंदी में विभिन्न प्रकार की सृजनात्मक लेखन एवं काव्य पाठ प्रतियोगिताओं का आयोजन करते हैं। हिंदी में सभी काम करने के वादे को हम फिर से दोहराते हैं। यह सब सरकारी स्तर पर होता है। गैर-सरकारी स्तर पर क्या होता है ? कभी हमने इस बारे में कुछ सोचा है ? नहीं, कभी नहीं ! लेकिन अब वक्त आ गया है कि सरकारी स्तर के साथ-साथ हम गैर-सरकारी स्तर पर भी हिंदी दिवस, हिंदी पखवाड़ा और हिंदी मास का आयोजन करें। यह विशेष रूप से राष्ट्रीय स्तर तथा प्रादेशिक स्तर और जिला स्तर पर आयोजित किये जाने की आवश्यकता है। गैर-हिंदी क्षेत्र में इस तरह के आयोजन को पंचायत स्तर पर ले जाने की आवश्यकता है और वहां उनकी प्रथम भाषा के विस्तार पर आधारित उत्सव भी आयोजित किए जाने की आवश्यकता है।

हिंदी दिवस और पखवाड़ा पर हम हिंदी के उपयोग को प्रोत्साहित करने के लिए हर प्रयास करने के साथ-साथ यह भी समीक्षा करें कि पिछले दिनों और आगामी दिनों में कौन सी गतिविधियां हिंदी के विकास के रास्ते में बाधक बन रही हैं। वह कौन सी गतिविधि है जो हमारे लिखने-पढ़ने-बोलने की शैली को प्रभावित कर रही है ? हिंदी के संदर्भ में इसका उत्तर है सोशल मीडिया और रोमन लिपि ! ये दोनों मिलकर हिंदी समेत सभी भारतीय भाषाओं के सामने गंभीर चुनौती प्रस्तुत कर रहे हैं। हिंदी के मासिक उत्सव के अवसर पर इन चुनौतियों के समाधान पर भी व्यापक विचार-विमर्श किया जाना चाहिए।

भारत की खासियत यह है कि हर समस्या का समाधान उसके पास है। रोमन लिपि की समस्या का भी समाधान है बशर्ते हमारे अंदर उस समाधान को अंगीकार करने की इच्छाशक्ति होनी चाहिए। इसके लिए सबसे जरूरी है हिंदी से जुड़ी सभी डिजिटल प्रौद्योगिकी को सरल से सरलतम करना। साथ ही सरकारी तथा गैर-सरकारी स्तर पर हिंदी में रोमन लिपि के प्रयोग को हतोत्साहित किये जाने की आवश्यकता है। इस मामले में हमें सबसे पहले डिजिटल संदेश पर गंभीरतापूर्वक विचार करने की आवश्यकता है। यदि हम तमिलनाडु में हैं तो हमें अधिक से अधिक डिजिटल संदेश को तमिल में ही लिखने की आदत डालनी चाहिए। तमिल के लिए जहां उपयोग में वैकल्पिक भाषा को चुनने की आवश्यकता है, वहां हिंदी यानी देवनागरी लिपि का प्रयोग करना चाहिए। दक्षिण भारत में अंग्रेजी का प्रयोग तीसरे नंबर पर किया जाना चाहिए। इसी प्रकार हिंदी क्षेत्र में संदेश के लिए डिजिटल व्यवस्था में एकमात्र लिपि देवनागरी का प्रयोग करना चाहिए। जहां बहुत जरूरी हो, वहां विकल्प के तौर पर उस क्षेत्र विशेष की दूसरी प्रमुख भारतीय भाषा का प्रयोग करना चाहिए जैसे राजस्थानी,



हरियाणवी, भोजपुरी, मैथिली, अंगिका इत्यादि। हिंदी क्षेत्र में किसी भी सूरत में विकल्प के रूप में अंग्रेजी के उपयोग का अवसर नहीं दिया जाना चाहिए। विशेष परिस्थिति में तीसरी भाषा के रूप में रोमन लिपि के प्रयोग का प्रावधान किया जा सकता है अन्यथा उससे पूरी तरह परहेज करना चाहिए। अब समय आ गया है कि हम अंग्रेजी को विदेशी भाषा के रूप में व्यवहार करें, न कि भारतीय भाषा के रूप में।

इन प्रयासों को आदत के रूप में विकसित करने के लिए हम सबसे पहले व्हाट्सएप पर हिंदी लिपि तथा अन्य भारतीय भाषाओं के प्रयोग को अनिवार्य करें तथा उसमें हिंदी के प्रयोग को बिल्कुल आसान बना दें। साथ ही जहां-जहां मशीनी भाषा का उपयोग हो रहा है, वहां से अंग्रेजी को हटाने का उपाय करें। कुछ विभागों में दैनिक स्तर पर लिपि का प्रयोग होता है जैसे बैंक, डाकघर, अस्पताल, रेलवे स्टेशन, एयरपोर्ट, रिसेप्शन, शिकायत विभाग, पुलिस स्टेशन, जिला न्यायालय, जिला प्रशासन इत्यादि। इनमें अंग्रेजी के प्रयोग को धीरे-धीरे कम कर हिंदी के लिए अधिक से अधिक रास्ता तैयार करना चाहिए। सरकारी विभागों में आंतरिक रूप से संदेशों के आदान-प्रदान के लिए जब हम व्हाट्सएप का प्रयोग करते हैं तो यह ध्यान रखें कि हिंदी में देवनागरी लिपि का ही इस्तेमाल करें, रोमन लिपि से पूरी तरह परहेज करें। एक अनुमान के मुताबिक पिछले कुछ वर्षों में व्हाट्सएप पर हिंदी को रोमन लिपि यानी इंग्लिश अल्फाबेट में लिखने का चलन तेजी से बढ़ा है। इससे राजभाषा हिंदी तथा भारतीय संस्कृति दोनों के लिए यह सचेत होने का समय है। इसमें सबसे दुखद पहलू यह है कि कुछेक विभागों में स्वयं राजभाषा अनुभाग में कार्यरत अधिकारी भी अपने-अपने व्हाट्सएप में हिंदी को रोमन में लिख रहे हैं। यह सर्वाधिक चिंता का विषय है। जिन लोगों पर हिंदी भाषा के प्रयोग के अनुपालन को सुनिश्चित कराने का दायित्व है, वे यदि स्वयं देवनागरी लिपि की जगह रोमन लिपि का प्रयोग करेंगे तो बाकी विभागों में कार्यरत अधिकारियों तथा कर्मचारियों के बीच हिंदी की क्या दशा रह जाएगी, यह विचारणीय है।

मशीनी भाषा के रूप में हिंदी को ईमेल तथा ई-ऑफिस में भी अधिक से अधिक उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित किए जाने की आवश्यकता है। वहां भी रोमन लिपि के प्रयोग से बचने की कोशिश करें। इसी तरह जब हम अनुवाद करते हैं तो अधिक से अधिक मौलिक अनुवाद पर जोर दें तथा चैट जीपीटी और ए आई से परहेज करते हुए चलें। इससे अनुवाद का अभ्यास कायम रहेगा तथा उसका स्तर भी बचा रहेगा अन्यथा कामचलाऊ व्यवस्था के अमल के चक्कर में सब कुछ खत्म हो जाएगा। इसी तरह की आदत शोध के क्षेत्र में विकसित किये जाने की आवश्यकता है। वार्षिक रिपोर्ट, पुस्तक, पत्रिका तथा योजना के मामले में अनुवाद को लेकर और गंभीर होने की आवश्यकता है।

हिंदी को यदि सुरक्षित रखना है तो सबसे पहले हमें अपनी सोच बदलनी पड़ेगी। बैंक में ए टी एम से लेकर चेक तक में अब हिंदी का उपयोग स्वाभाविक रूप से बढ़ना चाहिए। सरकारी स्तर पर बढ़ते हुए प्रयोग से प्रभावित होकर ही गैर-सरकारी स्तर पर भी विभिन्न व्यापारिक संस्थान हिंदी की ओर ध्यान दे सकेंगे। इसके लिए अभी से सरकारी स्तर पर प्रयास करना चाहिए। गैर-सरकारी स्तर के क्षेत्र का दायरा बहुत बड़ा है। वहां हिंदी की स्थिति भी बहुत मजबूत है। बस, वहां भी देवनागरी लिपि को फिर से स्थापित किये जाने की आवश्यकता है। क्योंकि रोमन लिपि ने वहां आजादी के बाद से ही तेजी से पैर पसारने शुरू कर दिये थे। विभिन्न शहरों तथा कस्बों में दुकान के साइन बोर्ड रोमन लिपि में बाजार में छा गए। इंग्लिश का साम्राज्य हिंदी की जड़ों को खोखला करता रहा। यहां तक कि जो भी नये प्रोडक्ट बाजार में आये, अधिकतर अंग्रेजी नामकरण के साथ। वहां कागजी काम भी अंग्रेजी में आसान हो गया। इसलिए देखते-देखते हिंदी



भारतीय बाजार से ओझल हो गई। हिंदी के पुराने स्थान को ससम्मान वापस दिलाना आवश्यक है। इस मामले में बिजनेस के बड़े घरानों को आगे आ कर स्वयं अधिक से अधिक हिंदी एवं देवनागरी लिपि का प्रयोग करना चाहिए तथा अन्य लोगों को भी व्यावसायिक गतिविधि हिंदी में करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। प्रांतीय तथा राष्ट्रीय स्तर पर निजी क्षेत्र यदि हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग करते हैं तो निश्चित रूप से भारतीय बाजार में देवनागरी लिपि की पुनर्वापसी हो सकती है। गौरतलब है कि भारत अंतरराष्ट्रीय तथा वैश्विक स्तर पर भी हिंदी को लगातार बढ़ावा दे रहा है। माननीय प्रधानमंत्री के विदेश दौरों से हिंदी का भी व्यापक रूप से वैश्विक विकास हुआ है। हिंदी को वैश्विक विकास तथा बाजार की भाषा बनाने के लिए भी विभिन्न स्तरों पर प्रयास जारी है। इसके लिए विश्व हिंदी सचिवालय तथा विभिन्न विश्व हिंदी सम्मेलन के आयोजन भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। इन प्रयासों में देवनागरी लिपि के प्रयोग को अनिवार्य बनाने की आवश्यकता है ताकि रोमन लिपि के आक्रमणों से हिंदी को सिर्फ बचाया ही नहीं जा सके, बल्कि उसे लगातार आगे बढ़ने का सुगम्य रास्ता मिलता रह सके।

रोमन लिपि से हिंदी को खतरा सिर्फ भारत में ही नहीं है, बल्कि फिजी और मारीशस समेत उन सभी गिरमिटिया तथा गैर गिरमिटिया देशों में है जहां हिंदी प्रयोग में है तथा वहां के विद्यालयों-विश्वविद्यालयों में अध्ययन के एक विषय के रूप में पढ़ाई जा रही है। उन जगहों पर हिंदी को रोमन लिपि में प्रयोग करने या अध्ययन करने का चलन काफी बढ़ गया है। इस समस्या को विदेश स्थित भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद् के विभिन्न सांस्कृतिक केंद्रों के सहयोग से कम या खत्म किया जा सकता है। इस मामले में भारतीय दूतावास भी प्रमुख भूमिका निभा सकते हैं तथा विदेश में हिंदी सीखने के इच्छुक लोगों को देवनागरी लिपि में हिंदी सीखने के लिए प्रेरित कर सकते हैं। विदेश में विभिन्न सांस्कृतिक तथा अन्य आयोजनों में हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं के अधिकाधिक प्रयोग को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

सरकारी स्तर पर भारत में हिंदी की एक बहुत बड़ी दुनिया है। एक नज़र डालिए इस दुनिया पर। ये हैं राजभाषा विभाग, केंद्रीय हिंदी निदेशालय, हिंदी के तथा हिंदी पढ़ाने वाले विभिन्न विद्यालय-महाविद्यालय-विश्वविद्यालय, भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद्, केंद्रीय हिंदी संस्थान, प्रकाशन विभाग, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग तथा अन्य कार्यालय। इन सब जगहों पर राजभाषा हिंदी को गंभीरता से आगे बढ़ाने तथा बदलते समय के अनुरूप हिंदी को और सरल तथा रोचक बनाने की आवश्यकता है ताकि रोमन लिपि के लगातार आक्रमण के दुष्प्रभाव को कम किया जा सके और देवनागरी लिपि के साथ-साथ अन्य भारतीय भाषाओं को भी बचाया जा सके। इसी क्रम में जब हम हिंदी पखवाड़ा या हिंदी कार्यशाला का आयोजन करते हैं तो उनमें हिंदी के देवनागरी लिपि के प्रयोग एवं विस्तार को विशेष रूप से बढ़ावा मिलना चाहिए तथा हिंदी की विभिन्न परियोजनाओं तथा प्रतियोगिताओं में देवनागरी लिपि के संवैधानिक प्रयोग को गंभीरता से लिया जाना चाहिए।

**हरेन्द्र प्रताप सिंह**

पूर्व वरिष्ठ पत्रकार, नवभारत टाइम्स एवं  
संयुक्त निदेशक, भारत सरकार



## “हरेला पर्व” का संदेश: प्रकृति, मातृत्व और भविष्य की हरियाली

उत्तराखंड का लोकपर्व हरेला केवल एक पारंपरिक पर्व नहीं, बल्कि प्रकृति के प्रति श्रद्धा, पर्यावरण संरक्षण और जीवन के प्रति संवेदनशीलता का उत्सव है। यह पर्व हमें याद दिलाता है कि मानव और प्रकृति का संबंध अटूट है तथा पर्यावरण का संरक्षण ही आने वाली पीढ़ियों के सुरक्षित भविष्य की आधारशिला है।



इसी भावना को आगे बढ़ाते हुए देहरादून क्षेत्रीय कार्यालय, हडको ने धाद संस्था के सहयोग से “एक पेड़ माँ के नाम” अभियान के अंतर्गत वृक्षारोपण कार्यक्रम आयोजित किया। इस अभियान का संदेश अत्यंत भावनात्मक और प्रेरणादायी है, जिस प्रकार माँ हमें जीवन, संरक्षण और संस्कार प्रदान करती है, उसी प्रकार एक वृक्ष पृथ्वी को जीवन, शुद्ध वायु, जल संरक्षण और जैव विविधता का आधार प्रदान करता है। माँ के सम्मान में लगाया गया प्रत्येक पौधा प्रकृति के प्रति हमारी कृतज्ञता और जिम्मेदारी का प्रतीक बन जाता है।

आज जब जलवायु परिवर्तन, बढ़ता प्रदूषण और घटते वन क्षेत्र वैश्विक चिंता का विषय है, तब केवल पौधे लगाना ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि उनका संरक्षण और संवर्धन भी उतना ही आवश्यक है। यदि प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन में कम से कम एक वृक्ष लगाकर उसकी देखभाल का संकल्प ले, तो पर्यावरण संरक्षण की दिशा में एक बड़ा जनआंदोलन खड़ा किया जा सकता है।

हडको द्वारा सतत् विकास के प्रति अपनी प्रतिबद्धता के अंतर्गत पर्यावरण संरक्षण, हरित अवसंरचना और सामाजिक उत्तरदायित्व से जुड़े कार्यक्रमों को निरंतर बढ़ावा दिया जा रहा है। हरेला पर्व पर आयोजित यह वृक्षारोपण अभियान इसी सोच का सशक्त उदाहरण है, जिसमें समाज, संस्थाओं और नागरिकों की सहभागिता ने यह संदेश दिया कि पर्यावरण संरक्षण किसी एक संस्था का नहीं, बल्कि हम सभी का साझा दायित्व है।



आइए, हरेला के इस पावन अवसर पर हम सभी "एक पेड़ माँ के नाम" लगाने और उसके संरक्षण का संकल्प लें ताकि आने वाली पीढ़ियों के उज्ज्वल भविष्य हेतु हम अपना उत्कृष्ट योगदान दे सकें ।

**संजय भार्गव**  
क्षेत्रीय प्रमुख, देहरादून, हडको

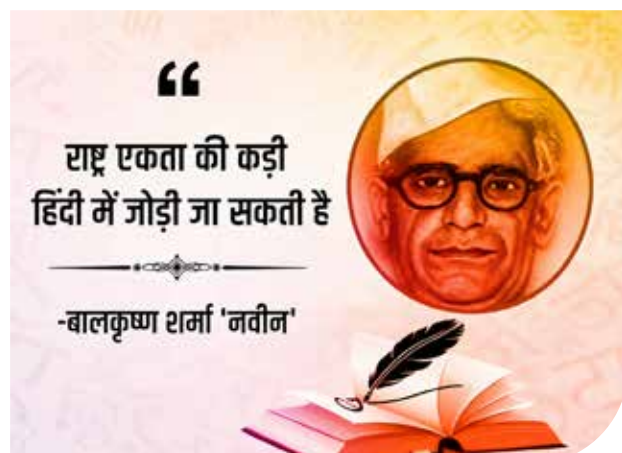
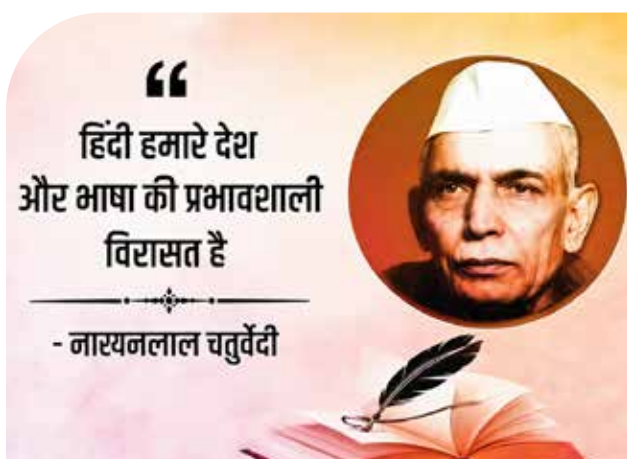




## हिंदी भाषा का महत्त्व

**निज भाषा उन्नति अहै सब उन्नति को मूल  
बिनु निज भाषा ज्ञान के मिटै न हिय को सूल**

इस भाव को आत्मसात करते हुए भारत सरकार ने हिंदी को 14 सितम्बर 1949 को राजभाषा के रूप में मान्यता देकर इसे गौरवमयी पद पर आसीन किया। हमारा देश विविध भाषाओं, बोलियों एवं संस्कृतियों का देश है। भारतीय सभ्यता, संस्कृति, साहित्य एवं दर्शन का गौरवपूर्ण इतिहास हिंदी भाषा में उपलब्ध है। हिंदी हमारे देश की संपर्क भाषा है और यह विश्व में भी अपनी पहचान स्थापित कर चुकी है व्यापार और वाणिज्य सहित संस्कृति और अध्यात्म तथा पर्यटन के माध्यम से विश्व भर के लोग हिंदी सीखने के प्रति आकर्षित हो रहे हैं। ऐसे समय में यह आवश्यक हो जाता है की हम हिंदी भाषा के प्रयोग को बढ़ावा दे। हिंदी भाषा की सबसे बड़ी विशेषता इसकी मौलिकता सरलता सुबोधता तथा स्वीकार्यता है। इन गुणों के बल पर हिंदी ने सम्पूर्ण राष्ट्र को एकता के सूत्र में पिरोकर अनेकता में एकता की भावना को आम जनता में जागृत रखा है।

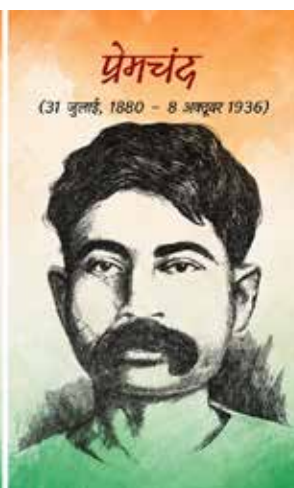
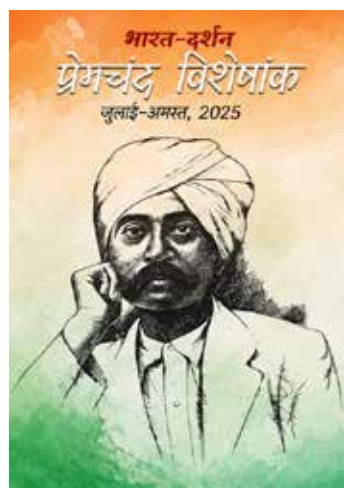


एक भाषा के रूप में हिंदी न सिर्फ भारत की पहचान है बल्कि यह हमारे जीवन मूल्यों, संस्कृति एवं संस्कारों की सच्ची संवाहक, संप्रेषक और परिचायक भी है। बहुत सरल, सहज और सुगम भाषा होने के साथ हिंदी विश्व की संभवतः सबसे वैज्ञानिक भाषा है जिसे दुनिया भर में समझने, बोलने और चाहने वाले लोग बहुत बड़ी संख्या में मौजूद हैं। यह विश्व में तीसरी सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा है जो हमारे पारंपरिक ज्ञान, प्राचीन सभ्यता और आधुनिक प्रगति के बीच एक सेतु भी है। हिंदी भारत संघ की राजभाषा होने के साथ ही ग्यारह राज्यों और तीन संघ शासित क्षेत्रों की भी प्रमुख राजभाषा है।

किसी भी लोकतांत्रिक देश में जनता और शासन के मध्य जन भाषा के रूप में सार्थक भूमिका अदा कर सकती है। हिंदी भारत की सबसे अधिक बोली और समझी जाने वाली भाषा है। हिंदी एक उन्नत, समृद्ध और वैज्ञानिक भाषा है। हिंदी ने अपनी मौलिकता सरलता और सुबोधता के बल पर ही भारतीय संस्कृति और साहित्य को जीवंत बनाए रखा है। हिंदी ने ही सम्पूर्ण राष्ट्र को एकता के सूत्र में पिरोकर अनेकता में एकता की भावना को आम जनता में निरंतर जागृत रखा है। अपनी भाषा में मौलिक लेखन से अभिव्यक्ति सरल सहज और स्वाभाविक होती है और ऐसा अनुवादित भाषा के माध्यम से संभव नहीं है।

हिंदी भाषा ने बाकि स्थानीय भाषाओं को भी बल देने का प्रयास किया है। हर राज्य की भाषा को हिंदी ताकत देती है। हिंदी की प्रतिस्पर्धा कभी भी स्थानीय भाषाओं से नहीं रही यह बात पूरे भारत के जनमानस में स्पष्ट होने की जरूरत है। 26 जनवरी 1950 को लागू भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 में यह प्रावधान रखा गया की संघ की राजभाषा हिंदी और लिपि देवनागरी होगी। अनुच्छेद 351 के अनुसार भारत की अन्य भाषाओं के प्रयुक्त रूप शैली और पदों को आत्मसात करते हुए, जहाँ आवश्यक हो या वांछनीय हो, वहाँ उसके शब्द भण्डार के लिए मुख्यतः संस्कृत से और गौणतः अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए हिंदी की समृद्धि सुनिश्चित की जानी है।

संघ की राजभाषा नीति का आधार सद्भावना, प्रेरणा एवं प्रोत्साहन है और उस से सम्बंधित अनुदेशों का अनुपालन उसी प्रकार दृढ़तापूर्वक किया जाना चाहिए जिस प्रकार अन्य सरकारी अनुदेशों का अनुपालन किया जाता है। संवैधानिक दायित्वों का निर्वहन करने के लिए



आवश्यक है कि सरकारी कामकाज अनुवाद की अपेक्षा मूल रूप से हिंदी में किया जाये और अन्य स्थानीय भाषाओं में इसका अनुवाद किया जाए। हिंदी में सरकारी कामकाज करने से सरकार और जनता के बीच परस्पर विश्वास बढ़ता है।



राजभाषा के प्रयोग को बढ़ाने और कार्यालय स्तर पर हिंदी में लेखन को प्रोत्साहित एवं प्रेरित करने में, हिंदी गृह पत्रिकाओं का विशेष महत्त्व है। भारत सरकार के कामकाज में राजभाषा हिंदी का महत्त्व प्रशासनिक सुगमता, लोकतांत्रिक पारदर्शिता और राष्ट्रीय एकता सुनिश्चित करने के लिए सर्वोपरि है। यह आम जनता को सरकार से जोड़ती है और भाषायी समानता बनाए रखने में मदद करती है।

सरकारी नीतियों, योजनाओं और कानूनों को आम नागरिक तक उनकी ही भाषा में पहुँचाने के लिए राजभाषा अत्यंत आवश्यक है, जिससे लोकतंत्र में जनता की सीधी भागीदारी सुनिश्चित होती है। मंत्रालयों का कार्य सीधे तौर पर जनसामान्य से जुड़ा हुआ होता है इसलिए आवश्यकता इस बात की है कि हम हिंदी को सरलतम रूप में अपनाकर सरकारी कामकाज में अधिक से अधिक इसका प्रयोग करें। हम स्वयं अपना मूल कार्य हिंदी में करते हुए अन्य सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को राजभाषा नियमों का अनुपालन सुनिश्चित करने और दैनिक सरकारी कामकाज में हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग काने के लिए प्रेरित करें।

अंततः भाषा वही जीवित रहती है जिसका प्रयोग जनता करती है। भारत में लोगों के बीच संवाद का सबसे बेहतर माध्यम हिन्दी है। वास्तव में हिंदी की यह प्रकृति ही देश की एकता की परिचायक है और इस प्रकृति ने ही उसे इतना व्यापक रूप दिया है। वह केवल कुछ मुट्ठीभर लोगों की भाषा नहीं है; वह देश के कोटि-कोटि कंठों की पुकार है हिंदी के सूत्र के सहारे कोई भी व्यक्ति देश के एक कोने से चलकर दूसरे कोने तक जा सकता है और अपना काम चला सकता है। देश में फैली हुई अनेक भाषाओं और संस्कृतियों के बीच यदि भारतीय जीवन की उदात्तता एवं एकात्मकता किसी एक भाषा में दिखाई देती है तो वह हिंदी में ही है। चाहे सब लोग हिंदी न जानते हों लेकिन फिर भी वो इसके द्वारा अपना काम चला लेते हैं और इसमें उन्हें कोई कठिनाई नहीं होती। आवश्यकता इस बात की है कि हिंदी को सरलतम रूप में अपना कर राजकीय कामकाज में अधिक से अधिक इसका प्रयोग किया जाए।

**सन्तोष सिल्योकर**

निदेशक, राजभाषा

आवासन और शहरी कार्य मंत्रालय





## डिजिटल युग में हिंदी भाषा

डिजिटल युग ने हिंदी भाषा को अभूतपूर्व अवसर प्रदान किए हैं। आज हिंदी केवल साहित्य और दैनिक संवाद की भाषा नहीं, बल्कि तकनीक, शिक्षा, सूचना और नवाचार की भी महत्वपूर्ण भाषा बन चुकी है। डिजिटल माध्यमों ने हिंदी को राष्ट्रीय सीमाओं से बाहर निकालकर वैश्विक मंच तक पहुँचाया है। आने वाले वर्षों में कृत्रिम बुद्धिमत्ता, मशीन अनुवाद और डिजिटल नवाचारों के साथ हिंदी की भूमिका और भी अधिक व्यापक होने की संभावना है।

इक्कीसवीं शताब्दी को सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी का युग कहा जाता है। इंटरनेट, स्मार्टफोन, सोशल मीडिया, क्लाउड कंप्यूटिंग, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, बिग डेटा और डिजिटल संचार ने मानव जीवन के लगभग प्रत्येक क्षेत्र को प्रभावित किया है। इस परिवर्तन ने भाषा के स्वरूप, प्रयोग और प्रसार के तरीकों में भी व्यापक बदलाव लाया है। पहले जहाँ डिजिटल माध्यमों पर अंग्रेजी का प्रभुत्व दिखाई देता था, वहीं आज हिंदी तेजी से डिजिटल दुनिया में अपना स्थान मजबूत कर रही है। आज लाखों वेबसाइट, समाचार पोर्टल, ब्लॉग, ऑनलाइन पाठ्यक्रम वीडियो मंच और सरकारी सेवाएँ हिंदी में उपलब्ध हैं। डिजिटल युग ने हिंदी को केवल संचार की भाषा तक सीमित नहीं रखा, बल्कि उसे ज्ञान-विज्ञान, तकनीक, शिक्षा,



व्यापार, मनोरंजन, प्रशासन और वैश्विक संवाद की भाषा के रूप में विकसित होने का अवसर प्रदान किया है। इस प्रकार हिंदी आज पारंपरिक और आधुनिक दोनों युगों को जोड़ने वाली सशक्त भाषा बनकर उभर रही है।

### डिजिटल युग में हिंदी भाषा का महत्व

डिजिटल तकनीक ने हिंदी को नई पहचान और नई संभावनाएँ प्रदान की हैं। पहले इंटरनेट पर अधिकांश सामग्री अंग्रेजी में उपलब्ध होती थी, जिससे हिंदी भाषी लोगों को कठिनाई का सामना करना पड़ता था। किंतु आज स्थिति बदल चुकी है। समाचार, सरकारी सेवाएँ, शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि, रोजगार और मनोरंजन से संबंधित बड़ी मात्रा में सामग्री हिंदी में उपलब्ध है। डिजिटल माध्यमों ने हिंदी को केवल पढ़ने-लिखने की भाषा नहीं रहने दिया, बल्कि उसे ज्ञान और सूचना के लोकतंत्रीकरण का प्रभावी माध्यम बना दिया है। अब ग्रामीण क्षेत्रों का व्यक्ति भी अपने मोबाइल फोन के माध्यम से हिंदी में सरकारी योजनाओं की जानकारी प्राप्त कर सकता है, ऑनलाइन शिक्षा ले सकता है, बैंकिंग सेवाओं का उपयोग कर सकता है तथा अपने व्यवसाय का प्रचार-प्रसार कर सकता है। हिंदी में उपलब्ध सामग्री ने उन करोड़ों लोगों को डिजिटल दुनिया से जोड़ा है, जो अंग्रेजी में सहज नहीं हैं। इससे डिजिटल समावेशन को भी बढ़ावा मिला है।



## इंटरनेट और हिंदी का विकास

इंटरनेट के प्रारंभिक वर्षों में हिंदी सामग्री बहुत सीमित थी। हिंदी टाइपिंग कठिन मानी जाती थी और विभिन्न फॉन्ट के कारण तकनीकी समस्याएँ उत्पन्न होती थीं। लेकिन यूनिकोड के विकास ने इस समस्या का समाधान कर दिया। अब किसी भी कंप्यूटर, मोबाइल या टैबलेट पर हिंदी आसानी से पढ़ी और लिखी जा सकती है। आज हजारों समाचार वेबसाइट, ब्लॉग, शैक्षिक पोर्टल, ई-पुस्तकें और डिजिटल पत्रिकाएँ हिंदी में उपलब्ध हैं। ऑनलाइन विश्वकोश, सरकारी वेबसाइट और डिजिटल पुस्तकालय भी हिंदी सामग्री का विशाल भंडार प्रस्तुत कर रहे हैं। परिणामस्वरूप हिंदी इंटरनेट की सबसे तेजी से बढ़ती भाषाओं में शामिल हो गई है। इसके अतिरिक्त, वॉयस टाइपिंग भाषण से पाठ, पाठ से भाषण और स्वचालित अनुवाद जैसी सुविधाओं ने हिंदी के उपयोग को और अधिक सरल एवं सुविधाजनक बना दिया है।

## डिजिटल शिक्षा में हिंदी की भूमिका

शिक्षा के क्षेत्र में डिजिटल तकनीक ने अभूतपूर्व परिवर्तन किए हैं। आज विद्यालयों, महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों के साथ-साथ अनेक ऑनलाइन मंच हिंदी माध्यम में गुणवत्तापूर्ण अध्ययन सामग्री उपलब्ध करा रहे हैं। ई-पुस्तकें, वीडियो व्याख्यान, डिजिटल नोट्स, ऑनलाइन परीक्षाएँ और वर्चुअल कक्षाएँ शिक्षा को अधिक सुलभ बना रही हैं। ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यार्थियों के लिए यह परिवर्तन विशेष रूप से लाभकारी सिद्ध हुआ है। जिन छात्रों के पास बड़े शहरों में जाकर अध्ययन करने के संसाधन नहीं हैं, वे इंटरनेट के माध्यम से घर बैठे उच्च गुणवत्ता की शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं। प्रतियोगी परीक्षाओं—जैसे यूपीएससी, एसएससी, बैंकिंग, रेलवे तथा राज्य लोक सेवा आयोगों—की तैयारी के लिए भी हिंदी माध्यम में पर्याप्त सामग्री उपलब्ध होने लगी है। डिजिटल शिक्षा ने भाषा संबंधी बाधाओं को कम किया है।



## सोशल मीडिया और हिंदी भाषा

डिजिटल युग में सोशल मीडिया ने संचार के स्वरूप को पूरी तरह बदल दिया है। आज फेसबुक, इंस्टाग्राम, एक्स (पूर्व में ट्विटर), यूट्यूब, व्हाट्सएप, टेलीग्राम और अन्य डिजिटल मंचों पर करोड़ों लोग प्रतिदिन हिंदी में संवाद करते हैं। पहले जहाँ इंटरनेट पर अंग्रेजी का प्रभुत्व था, वहीं अब हिंदी सामग्री की लोकप्रियता लगातार बढ़ रही है। लोग अपने विचार, अनुभव, कविताएँ, कहानियाँ, लेख, समाचार तथा सामाजिक संदेश हिंदी में साझा कर रहे हैं। सोशल मीडिया ने हिंदी को केवल अभिव्यक्ति का माध्यम ही नहीं बनाया, बल्कि सामान्य नागरिक को भी अपनी बात व्यापक स्तर पर रखने का अवसर प्रदान किया है। आज कोई भी व्यक्ति अपने मोबाइल फोन से हिंदी में वीडियो बनाकर, लेख लिखकर या पॉडकास्ट प्रस्तुत करके लाखों लोगों तक पहुँच सकता है। इस प्रकार डिजिटल मंचों ने हिंदी भाषा के लोकतांत्रिक विस्तार में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।



## ई-गवर्नेंस और हिंदी

भारत सरकार तथा विभिन्न राज्य सरकारों ने नागरिक सेवाओं को डिजिटल माध्यम से उपलब्ध कराने के लिए अनेक पहल की हैं। सरकारी वेबसाइट, पोर्टल और मोबाइल

अनुप्रयोगों में हिंदी भाषा का समावेश होने से करोड़ों नागरिकों के लिए सरकारी सेवाओं तक पहुँच आसान हुई है। आज जन्म प्रमाण-पत्र, आय प्रमाण-पत्र, आधार सेवाएँ, पेंशन, छात्रवृत्ति, भूमि अभिलेख, कर भुगतान, शिकायत निवारण तथा अनेक अन्य सेवाएँ हिंदी में उपलब्ध हैं। इससे विशेष रूप से ग्रामीण और अर्धशहरी क्षेत्रों के नागरिकों को लाभ मिला है, क्योंकि वे अपनी परिचित भाषा में सरकारी जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। ई-गवर्नेंस में हिंदी के बढ़ते उपयोग ने प्रशासन और नागरिकों के बीच संवाद को अधिक प्रभावी तथा पारदर्शी बनाया है। यह लोकतंत्र को अधिक सहभागी और जनोन्मुख बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है।

### ई-कॉमर्स और व्यापार में हिंदी

डिजिटल अर्थव्यवस्था के विकास के साथ व्यापार के स्वरूप में भी व्यापक परिवर्तन आया है। आज अनेक ऑनलाइन कंपनियाँ अपने ग्राहकों को हिंदी भाषा में सेवाएँ प्रदान कर रही हैं। उत्पादों का विवरण, ग्राहक सहायता, भुगतान संबंधी जानकारी तथा मोबाइल ऐप का इंटरफेस हिंदी में उपलब्ध होने से उपभोक्ताओं की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। छोटे व्यापारियों और स्थानीय उद्यमियों के लिए भी हिंदी डिजिटल विपणन का प्रभावी माध्यम बन गई है। वे सोशल मीडिया, वेबसाइट और ऑनलाइन विज्ञापनों के माध्यम से अपने उत्पादों का प्रचार हिंदी में कर रहे हैं। इससे स्थानीय व्यवसायों को नए ग्राहक मिल रहे हैं और डिजिटल अर्थव्यवस्था को भी गति मिल रही है। डिजिटल भुगतान प्रणालियों के हिंदी संस्करणों ने उन लोगों को भी ऑनलाइन लेन-देन से जोड़ा है, जो अंग्रेजी का सीमित ज्ञान रखते हैं। परिणामस्वरूप डिजिटल वित्तीय समावेशन को बढ़ावा मिला है।

### ऑनलाइन पत्रकारिता और हिंदी

समाचार जगत में भी डिजिटल माध्यमों ने क्रांतिकारी परिवर्तन किए हैं। आज अधिकांश प्रमुख समाचार संस्थानों के हिंदी संस्करण उपलब्ध हैं। नागरिक अब मोबाइल फोन के माध्यम से देश-विदेश की घटनाओं की जानकारी तुरंत प्राप्त कर सकते हैं। ऑनलाइन पत्रकारिता ने समाचारों को अधिक त्वरित, सुलभ और संवादात्मक बनाया है। पाठक केवल समाचार पढ़ते ही नहीं, बल्कि अपनी प्रतिक्रिया भी व्यक्त करते हैं। इससे जनमत निर्माण की प्रक्रिया अधिक सक्रिय हुई है। हालाँकि डिजिटल पत्रकारिता के साथ फर्जी समाचार (फेक न्यूज), भ्रामक सूचनाएँ तथा अपुष्ट जानकारी जैसी चुनौतियाँ भी बढ़ी हैं। इसलिए हिंदी पत्रकारिता में तथ्य-जाँच, विश्वसनीयता और नैतिक मूल्यों का पालन अत्यंत आवश्यक है।

### मनोरंजन के क्षेत्र में हिंदी

डिजिटल मनोरंजन के क्षेत्र में हिंदी की लोकप्रियता निरंतर बढ़ रही है। आज फिल्में, वेब सीरीज, संगीत, ऑडियोबुक, पॉडकास्ट और शैक्षिक वीडियो हिंदी में बड़ी संख्या में उपलब्ध हैं। यूट्यूब जैसे मंचों पर हिंदी सामग्री के करोड़ों दर्शक हैं। मनोरंजन के साथ-साथ ज्ञानवर्धक सामग्री भी हिंदी में तेजी से विकसित हुई है। विज्ञान, इतिहास, साहित्य, स्वास्थ्य, कृषि, प्रौद्योगिकी और व्यक्तित्व विकास जैसे विषयों पर हिंदी में उच्च गुणवत्ता के वीडियो और पॉडकास्ट उपलब्ध हैं। इससे ज्ञान का प्रसार व्यापक स्तर पर हो रहा है। डिजिटल मंचों ने हिंदी साहित्य को भी नया जीवन दिया है। अनेक लेखक अपनी रचनाएँ ई-पुस्तकों, ब्लॉगों और ऑनलाइन पत्रिकाओं के माध्यम से प्रकाशित कर रहे हैं। इससे नए लेखकों को पहचान मिल रही है और पाठकों को विविध साहित्य सुलभ हो रहा है।

### हिंदी और डिजिटल संस्कृति

डिजिटल संस्कृति ने हिंदी भाषा को आधुनिक अभिव्यक्ति का नया स्वरूप प्रदान किया है। आज मीम, ब्लॉग, व्लॉग, पॉडकास्ट, डिजिटल कहानियाँ, वेब पत्रिकाएँ और ऑनलाइन साहित्यिक मंच हिंदी की नई पहचान बन रहे हैं। युवा वर्ग



भी रचनात्मक लेखन, कविता, कहानी और सामाजिक विमर्श में हिंदी का व्यापक उपयोग कर रहा है। डिजिटल माध्यमों ने हिंदी को केवल पारंपरिक भाषा के रूप में नहीं, बल्कि नवाचार और रचनात्मकता की भाषा के रूप में स्थापित किया है। इससे हिंदी का स्वरूप अधिक गतिशील, समकालीन और वैश्विक बनता जा रहा है।

### कृत्रिम बुद्धिमत्ता और हिंदी भाषा

वर्तमान समय में कृत्रिम बुद्धिमत्ता तकनीकी विकास का सबसे महत्वपूर्ण क्षेत्र बनकर उभरा है। एआई ऐसी तकनीक है जिसके माध्यम से कंप्यूटर और मशीनें मानव जैसी समझ, विश्लेषण और निर्णय लेने की क्षमता प्राप्त करती हैं। भाषा के क्षेत्र में एआई ने अनुवाद, वॉइस असिस्टेंट, भाषण पहचान, चैटबॉट और डिजिटल सामग्री निर्माण को सरल बनाया है। हिंदी भाषा के विकास में भी कृत्रिम बुद्धिमत्ता की भूमिका तेजी से बढ़ रही है। आज वॉयस टाइपिंग की सुविधा के कारण लोग बोलकर हिंदी में लिख सकते हैं। मोबाइल फोन और कंप्यूटर में उपलब्ध हिंदी कीबोर्ड तथा भाषा आधारित उपकरणों ने हिंदी लेखन को अधिक आसान बना दिया है। मशीन अनुवाद के क्षेत्र में भी हिंदी को लाभ मिला है। अब हिंदी से अंग्रेजी तथा अन्य भाषाओं में और अन्य भाषाओं से हिंदी में अनुवाद पहले की अपेक्षा अधिक सरल और तेज हो गया है। इससे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हिंदी सामग्री की पहुँच बढ़ रही है।

### मशीन अनुवाद और हिंदी का विस्तार

वैश्वीकरण के इस युग में भाषाओं के बीच संवाद की आवश्यकता बढ़ गई है। मशीन अनुवाद ने इस आवश्यकता को पूरा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। पहले किसी भाषा के अनुवाद के लिए विशेषज्ञों पर निर्भर रहना पड़ता था, लेकिन अब डिजिटल उपकरणों की सहायता से कुछ ही क्षणों में अनुवाद संभव हो गया है। हिंदी के संदर्भ में मशीन अनुवाद ने शिक्षा, व्यापार, पर्यटन, प्रशासन और अंतरराष्ट्रीय संवाद को आसान बनाया है। विदेशी लोग भी हिंदी सामग्री को समझने लगे हैं और हिंदी साहित्य, संस्कृति तथा भारतीय ज्ञान परंपरा तक उनकी पहुँच बढ़ रही है। मशीन अनुवाद के कारण सरकारी दस्तावेजों, शोध सामग्री और तकनीकी जानकारी को हिंदी में उपलब्ध कराने का कार्य भी तेजी से हो रहा है। इससे हिंदी को ज्ञान-विज्ञान की भाषा के रूप में विकसित करने में सहायता मिल रही है।



### डिजिटल युग में हिंदी के सामने चुनौतियाँ

जहाँ डिजिटल युग ने हिंदी को अनेक अवसर प्रदान किए हैं, वहीं कुछ चुनौतियाँ भी सामने आई हैं।

#### 1. भाषा की शुद्धता की चुनौती

सोशल मीडिया और डिजिटल संवाद में अक्सर हिंदी के साथ अंग्रेजी शब्दों का अत्यधिक प्रयोग किया जाता है। कई बार लोग देवनागरी के स्थान पर रोमन लिपि में हिंदी लिखते हैं। इससे भाषा की मूल संरचना और शुद्धता प्रभावित हो सकती है।

#### 2. गुणवत्तापूर्ण सामग्री की कमी

यद्यपि हिंदी में डिजिटल सामग्री तेजी से बढ़ रही है, फिर भी विज्ञान, तकनीक, चिकित्सा और उच्च शिक्षा जैसे क्षेत्रों में उच्च गुणवत्ता वाली सामग्री की आवश्यकता बनी हुई है।



### 3. तकनीकी संसाधनों की आवश्यकता

हिंदी के लिए बेहतर भाषा तकनीक विकसित करने हेतु बड़े स्तर पर शोध और निवेश की आवश्यकता है। हिंदी के विभिन्न रूपों और बोलियों को समझने वाली तकनीक विकसित करना अभी भी एक चुनौती है।

### 4. डिजिटल साक्षरता की कमी

देश के कई क्षेत्रों में अभी भी लोगों को डिजिटल उपकरणों और इंटरनेट के उपयोग का पर्याप्त ज्ञान नहीं है। हिंदी आधारित डिजिटल सेवाओं का लाभ उठाने के लिए डिजिटल शिक्षा को बढ़ावा देना आवश्यक है।

### डिजिटल युग में हिंदी को सशक्त बनाने के सुझाव

हिंदी को डिजिटल क्षेत्र में और अधिक मजबूत बनाने के लिए निम्नलिखित उपाय किए जा सकते हैं :-

- \* **उच्च गुणवत्ता वाली हिंदी सामग्री का निर्माण**  
शिक्षा, और शोध से संबंधित अधिक से अधिक सामग्री हिंदी में तैयार की जानी चाहिए।
- \* **भाषा तकनीक का विकास**  
हिंदी के लिए बेहतर अनुवाद प्रणाली, वॉइस तकनीक और कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित उपकरण विकसित किए जाने चाहिए।
- \* **डिजिटल साक्षरता को बढ़ावा देना**  
लोगों को हिंदी आधारित डिजिटल सेवाओं के उपयोग के लिए प्रशिक्षित किया जाना चाहिए।
- \* **मानक हिंदी का प्रयोग**  
डिजिटल मंचों पर सरल, प्रभावी और व्याकरण सम्मत हिंदी का उपयोग बढ़ाया जाना चाहिए।
- \* **युवाओं को प्रोत्साहन देना**  
युवाओं को हिंदी में डिजिटल सामग्री निर्माण और नवाचार के लिए प्रेरित करना चाहिए।

### उपसंहार

डिजिटल युग हिंदी भाषा के लिए परिवर्तन और विकास का महत्वपूर्ण दौर है। इंटरनेट, सोशल मीडिया, कृत्रिम बुद्धिमत्ता और आधुनिक तकनीकों ने हिंदी को नई पहचान प्रदान की है। आज हिंदी शिक्षा, व्यापार, प्रशासन, मनोरंजन, पत्रकारिता और तकनीक के क्षेत्रों में अपनी मजबूत उपस्थिति दर्ज करा रही है।

अंततः कहा जा सकता है कि डिजिटल युग हिंदी भाषा के लिए एक सुनहरा अवसर है। यदि हम तकनीक का सही उपयोग करते हुए हिंदी को आगे बढ़ाएँ, तो हिंदी आने वाले समय में विश्व की प्रमुख डिजिटल भाषाओं में अपना महत्वपूर्ण स्थान स्थापित कर सकती है। हिंदी और डिजिटल तकनीक का यह संबंध भारत के ज्ञान, संस्कृति और विकास को नई दिशा देने में सहायक सिद्ध होगा।

डॉ. अरुण राणा  
क्षेत्रीय प्रमुख, लखनऊ, हडको



## राजभाषा हिन्दी की व्यवहार्यता

हमारे दैनिक जीवन में भाषा की विशेष महत्ता है। हम अपने भावों, विचारों और अनुभूतियों को व्यक्त करने के लिए जिस माध्यम का सहारा लेते हैं, उसे ही व्यापक अर्थ में भाषा कहा जाता है। भाषा का लिखित रूप प्रदान करने वाले माध्यम को हम लिपि कहते हैं। लिपियाँ दो प्रकार की होती हैं—चित्रात्मक लिपि और ध्वन्यात्मक लिपि। भारत में आदिकाल से दो प्रकार की ध्वन्यात्मक लिपियाँ मिलती हैं, जिन्हें खरोष्ठी और ब्राह्मी नाम से जाना जाता है। जिस लिपि में हिन्दी लिखी जाती है, उसे नागरी लिपि कहते हैं। यह लिपि ब्राह्मी लिपि की ही वंशजा है। यह लिपि विश्व की लिपियों में सबसे ज्यादा वैज्ञानिक है क्योंकि इस लिपि में जो लिखा जाता है, वही पढ़ा भी जाता है। यह लिपि सब लिपियों से सरल है और भाषा विज्ञान की सभी कसौटियों पर खरी उतरती है। इस लिपि में विश्वभर की भाषाओं को व्यक्त करने की क्षमता है। इसी विशेषता के फलस्वरूप हिन्दी आज विश्व मंच पर छा चुकी है।

लगभग दो शताब्दियों की परतंत्रता के उपरान्त 15 अगस्त, 1947 ई. को जब भारत को स्वतंत्रता मिली, दासता का अन्धकार तिरोहित हुआ, स्वावलम्बन और स्वाभिमान के सूर्य का उदय हुआ, तो देश ने नई उमंगों के साथ अपनी समस्याओं के निरसन की दृढ़ संकल्पना की। देश के शासन की बागडोर जननायक पं. जवाहरलाल नेहरू के सशक्त हाथों में आई। कई वर्षों के अनवरत परिश्रम के उपरान्त भारत के संविधान निर्माताओं ने देश को अपना नूतन संविधान प्रदान किया, जो राष्ट्र की सर्वांगीण समृद्धि की कल्पना का साकार रूप है। इस संविधान को भारत की जनता ने, भारत को एक सम्पूर्ण प्रभुता सम्पन्न, लोक तन्त्रात्मक गणराज्य बनाने के लिए, दृढ़ संकल्प होकर अधिनियमित और अंगीकृत किया है। इसमें यदि एक ओर नागरिकों के मौलिक अधिकारों, उनके उत्थानप्रद मार्गदर्शक सिद्धान्तों, केंद्र और राज्यों के सम्बन्धों, न्यायपालिका और अर्थव्यवस्था के नियंत्रण आदि से सम्बन्धित व्यवस्थाओं का समुचित समावेश है तो दूसरी ओर प्रशासन के सुचारु संचालन के लिए, संघ की राजभाषा के रूप में, देवनागरी में लिखित हिन्दी के प्रयोग की समुचित व्यवस्था भी की गई है।

हिन्दी को राजभाषा होने का महत्व मात्र इसलिए नहीं दिया गया कि यह सारी भारतीय भाषाओं में ऊँची है, बल्कि इसे राजभाषा के रूप में इसलिए अनुमोदित किया गया कि हिन्दी को जानने, समझने और बोलने वाले देश के कोने-कोने में विद्यमान हैं। यह लोग भले ही व्याकरण की भूलें करते हों, अशुद्ध उच्चारण करते हों, परन्तु बोलते हिन्दी ही हैं और उसी में अपने भाव व्यक्त करते हैं तथा दूसरों की बात भी समझ लेते हैं। यह केवल एक धर्म विशेष या क्षेत्र विशेष के मुट्ठी भर लोगों की भाषा नहीं है, प्रत्युत यह देश के कोटि-कोटि कंठों की पुकार और उनके हृदय का सुरभित हार है।

मेरी ऐसी मान्यता है कि सरकारी काम-काज में हिन्दी पत्राचार में अभिवृद्धि करने के लिए आम बोलचाल की भाषा का प्रयोग किया जाना चाहिए। हिन्दी में काम-काज करने वाले कर्मचारी और अधिकारी कार्यालयीन भाषा में कठिन शब्दों का प्रयोग करके उसे बोझिल न बनाएँ। यदि हम सच्चे अर्थों में हिन्दी का प्रचार-प्रसार करके भारत सरकार के संकल्प को पूरा करना चाहते हैं, तो हमारा यह नैतिक कर्तव्य है कि सरल से सरल भाषा का प्रयोग करें। इसे सरल भाषा में व्यक्त



करने का सबसे सहज तरीका है कि संबंधित कर्मचारी उसे सरल हिन्दी में सोच कर तैयार करें। उसके बारे में पहले अंग्रेजी में सोचना और फिर उसे हिन्दी में तैयार करना दोगुनी ऊर्जा और समय का अपव्यय करना होगा, जो आज की यांत्रिक व्यस्तता के युग में अव्यावहारिक ही नहीं अपितु राजभाषा हिन्दी की व्यवहार्यता के प्रतिकूल भी है।

सार्वजनिक उपक्रमों में दैनिक व्यवहार के बहुत से पत्र ऐसे होते हैं, जिनको यदि एक बार हिन्दी में मानक रूप में तैयार करके मुद्रित करा लिया जाए और उनका प्रयोग शुरू कर दिया जाए तो हिन्दी में किए गए पत्राचार का प्रतिशत कई गुना बढ़ सकता है। उदाहरण के लिए जिन उपक्रमों से किसी भी प्रकार का भुगतान होता है, वहाँ चेक के साथ भेजने वाले अग्रेषण पत्र को मानक रूप में हिन्दी में मुद्रित कराके हिन्दी पत्राचार की प्रतिशतता में पर्याप्त वृद्धि की जा सकती है। उपक्रमों में तैनात कर्मचारियों और अधिकारियों के द्वारा अन्य विभागों में सेवा के लिए भेजे जाने वाले आवेदन पत्रों के अग्रेषण पत्रों को भी हिन्दी में, मानक रूप में तैयार कराके मुद्रित करा लिया जाए तो हिन्दी पत्राचार के आँकड़े पर्याप्त बढ़ सकते हैं।

इसी प्रकार जिन उपक्रमों का आम जनता से प्रायः समान प्रवृत्ति का पत्राचार होता रहता है, उन पत्रों को भी यदि हिन्दी में मानक रूप में तैयार कराके मुद्रित करा लिया जाए तो हिन्दी पत्राचार के आँकड़े काफी संख्या में बढ़ सकते हैं।

हमें अपने राष्ट्र की भाषा के निस्सीम प्रचार-प्रसार के लिए विदेशों से प्रेरणा लेनी चाहिए। फ्रांस में अंग्रेजी बोलने अथवा लिखने पर 6 महीने का कारावास या 50,000 फ्रैंक का जुर्माना है। इतना ही नहीं चीन, फ्रांस, जापान, जर्मनी और रूस ने यह सिद्ध कर दिया है कि तकनीकी विकास के लिए अंग्रेजी अनिवार्य नहीं है। इन सभी देशों ने अपनी टेक्नोलॉजी को अपनी भाषा में विकसित किया है, और एक हम हैं कि यही बहाना छू लेते हैं कि हमारा उपक्रम या विभाग तकनीकी किस्म का है इसलिए हिन्दी में काम नहीं हो सकता है। जबकि हिन्दी तो अगाध समुद्र के समान उदार है जिसके विशाल हृदय में किसी भी भाषा का शब्द आया वह उसका अपना हो गया। हिन्दी में ऐसे अनेक विदेशी शब्द हैं, जो आज हिन्दी के आंचल में हंस-खेल रहे हैं। 'रेल' अंग्रेजी का शब्द है, 'सिग्नल' अंग्रेजी का शब्द है। 'ट्रेन लेट हैं' इसमें दो शब्द अंग्रेजी के हैं, मात्र एक शब्द 'हैं' ने ही पूरा वाक्य हिन्दी का बना दिया। इसी के अनुसरण में मेरा आपसे अनुरोध है कि यदि कोई तकनीकी अथवा गैर तकनीकी ऐसा शब्द है जिसका आपको हिन्दी पर्याय नहीं आता तो उसे देवनागरी में जैसे का तैसा लिखने की आपको पूर्ण स्वतंत्रता है।

हमारे देश में सार्वजनिक उपक्रमों का जाल बिछा हुआ है। अधिकांश उपक्रम आम जनता की आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं। कार्यवृत्ति के आधार पर उपक्रमों का और जनता का संबंध आपूर्तिकर्ता और उपभोक्ता का होता है। इन दोनों के बीच आदान-प्रदान का अटूट रिश्ता व्यापार-प्रक्रिया का ही एक स्वरूप है। आप यह भली प्रकार से जानते हैं कि व्यापार की अपनी निजी कोई भाषा नहीं होती। व्यापार की भाषा वह होती है जो उपभोक्ता जनमानस की भाषा होती है। अतः उपक्रमों में हिन्दी में कार्य व्यापार चलाया जाना उनकी व्यापारिक अनिवार्यता है। परिवहन के क्षेत्र में आने वाले 'केन्द्रीय अन्तर्देशीय जल परिवहन निगम', 'भारतीय अन्तर्देशीय जलमार्ग प्राधिकरण', 'दिल्ली परिवहन निगम', 'भारतीय पर्यटन विकास निगम', सभी उपक्रम जनता के उपयोग के लिए बने हैं। इनका जनता से अत्यन्त निकट का सम्पर्क है, वाहनों में विभिन्न प्रकार के लिखित निर्देश, उनके कार्य व्यवहार, तत्सम्बन्धी कागजात से हिन्दी के विस्तार का पर्याप्त अवसर मिलता है।

जीवन बीमा से संबंधित अनेक उपक्रम हैं, जैसे- 'भारतीय जीवन बीमा निगम', 'नेशनल इंश्योरेंस कॉर्पोरेशन (लि.)', 'ऑरियन्टल बीमा कम्पनी', 'भारतीय यूनिट ट्रस्ट', 'कर्मचारी राज्य बीमा निगम', (ई. एस. आई. कॉर्पोरेशन) आदि उपक्रमों



का जनता से एकदम सीधा संबंध है। बीमा पॉलिसी हिन्दी और अंग्रेजी में जारी की जा रही है। 'कर्मचारी राज्य बीमा निगम' में अधिकांश कार्य हिन्दी में ही हो रहा है। सभी हिदायतें हिन्दी में भी उपलब्ध होती हैं। अतः हमारे किसान भी इन संस्थाओं के साथ आसानी से हिन्दी में पत्राचार कर लेते हैं।

इस क्षेत्र में भारतीय बैंक भी पीछे नहीं है। 'बैंक ऑफ इंडिया', 'पंजाब एण्ड सिन्ध बैंक', 'पंजाब नेशनल बैंक', 'विजया बैंक', 'भारतीय स्टेट बैंक', 'सिण्डीकेट बैंक', 'आन्ध्रा बैंक' आप किसी भी बैंक में चले जाएँ, पैसे जमा करने के लिए अथवा निकालने के लिए आप निःसंकोच हिन्दी का प्रयोग कर सकते हैं। आपको किसी भी प्रकार की... अड़चन नहीं होगी। बैंकों में ऋण आवेदन पत्र भी हिन्दी-अंग्रेजी दोनों भाषाओं में मिल जाते हैं। 'पंजाब एण्ड सिन्ध बैंक' के मुख्यालय से तो एक पत्रिका का भी प्रकाशन होता है, जिसमें हिन्दी, अंग्रेजी और गुरुमुखी तीनों भाषाओं में सामग्री प्रकाशित होती है।

अब हम विकास सम्बन्धी उपक्रमों की ओर आते हैं 'राष्ट्रीय बीज निगम', 'लघु किसान विकास निगम', 'राष्ट्रीय सहकारी विकास निगम', 'राष्ट्रीय औद्योगिक विकास निगम', 'राष्ट्रीय वस्त्र निगम', 'कृषको' आदि निगमों में भी हिन्दी किसी भी रूप में विकलांग नहीं है। अब एक नजर ट्रस्टों पर भी डाल लें। 'चिल्ड्रन बुक ट्रस्ट', 'नेशनल बुक ट्रस्ट' अपनी साहित्यिक पुस्तकें प्रकाशित करके पूरे विश्व में हिन्दी की जो पावन भागीरथी प्रवाहित कर रहे हैं, उनका प्रयास सराहनीय है। ये दोनों ट्रस्ट भारत की संस्कृति का पूरे विश्व में प्रचार-प्रसार करके अपना उच्चतम स्थान प्राप्त कर चुके हैं।

राजभाषा हिन्दी की व्यवहार्यता की संवृद्धि में शैक्षणिक संगठनों की भूमिका निस्संदेह महत्वपूर्ण है। केंद्रीय विद्यालय संगठन, केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान आदि संस्थानों द्वारा शिक्षा के माध्यम के रूप में जो राजभाषा हिन्दी का व्यवहार्य स्वरूप छात्रों को पाठ्य-पुस्तकों के माध्यम से प्रदान किया जाता है उसे ही छात्र अपने में आत्मसात् करके अपने ज्ञान का अमित भंडार भरते हैं। साथ ही इन संगठनों के पास अनुभवी शिक्षाविदों और अध्यापकों की बहुलता होती है अतः राजभाषा हिन्दी की व्यवहार्यता को साकार करने में इनका भी भरपूर सहयोग लिया जा सकता है।

ध्यातव्य है कि सभी सार्वजनिक उपक्रम आर्थिक सम्पन्नता में कामधेनु के समान हैं, जो हमारे राष्ट्र के लिए सुदृढ़ मेरुदण्ड का काम करते हैं और भाषायी क्षेत्र में ऐसे कल्पवृक्ष हैं, जिन्हें राजभाषा प्रयोग के लिए किसी का मुंह ताकना नहीं पड़ता है। जन सामान्य से जुड़े रहने के कारण यदि एक ओर से आम जनता से कार्य व्यवहार द्वारा अर्थ प्राप्ति करके देश को सशक्त बनाते हैं तो दूसरी ओर जनता से ही अर्थ के साथ-साथ शब्द-सम्पदा प्राप्त करके ये राजभाषा शब्द कोश की वृद्धि में भी अपना अनुपम योगदान करते हैं। यहाँ मैं विशेष उल्लेख करना चाहूँगा कि सार्वजनिक उपक्रम अर्थ-व्यवस्था जैसे किसी भी मामले में स्वतंत्र हो सकते हैं लेकिन राजभाषा नीति के उल्लंघन के लिए उन्हें किसी भी प्रकार की छूट नहीं है।

आपके मानस में इस समय अनेक ऐसी समस्याएँ घुमड़ रही होंगी, जिनसे आप हिन्दी में काम करने में हिचक महसूस करते हैं। आपकी यह हिचक निर्मूल है। यह आपकी हिचक नहीं प्रत्युत आपके मानस में बैठे अविश्वास का भूत है। विश्वास जगाकर अभ्यास करने से हर रास्ता आसान बन जाता है। हमें अपने मानस में हिन्दी में काम करने की चाह की किरण को आलोकित करना होगा, हिचक का अन्धकार स्वयं भाग जाएगा। अब तक हम अंग्रेजी की बैसाखियों पर बहुत चल लिए, मेरा विनम्र निवेदन है कि आप हिन्दी के हिंडोले में एक बार बैठकर देखें। आपको असीम आनन्द की अनुभूति होगी। इस आनन्द की अनुभूति का वर्णन करते हुए सुकवि पं. हरिशंकर शर्मा ने सत्य ही कहा है—



बिहारो बिहारी की बिहार वाटिका में चाहे,  
सूर की कुटी में अड़ आसन जमाइए।  
केशव की कुंज में कलोल केलि कीजिए या,  
तुलसी के मानस में डुबकी लगाइए।  
देव की दरी में दुर दिव्यता निहारिये या,  
भूषण की सेना के सिपाही बन जाइये।  
अन्य भाषा भाषियो मिलेगा मन माना सुख,  
हिन्दी के हिंडोले में जरा तो बैठ जाइए।

आइये हम सभी संकल्प लें राजभाषा हिन्दी की निःस्वार्थ सेवा करने का, इसके स्पंदन को निरंतर प्रेम के पंथ पर बढ़ाते रहने का, इसके प्रचार-प्रसार के लिए प्रेरणा, प्रोत्साहन जैसे अभिप्रेरक तत्वों की सक्रियता को बढ़ाने का, इसे सहज और सुबोध भाषा बनाकर इसकी व्यवहार्यता को जन-मानस तक पहुँचाने का। जय हिन्दी।

**डॉ. इंदर सेंगर**

से.नि. (रा. भा. अधिकारी)

जहाजरानी मंत्रालय, भारत सरकार





## कार्यालय में हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा

हिन्दी भाषा को 14 सितम्बर, 1949 में राजभाषा का दर्जा दिया गया। संविधान की अनुच्छेद 343(1) के अनुसार, संघ की राजभाषा हिन्दी और लिपि देवनागरी है। इसके अलावा, संविधान की आठवीं अनुसूची में हिन्दी सहित कुल 22 भाषाओं को शामिल किया गया है। हिन्दी भारत की प्रमुख भाषाओं में से एक है। यह केवल एक भाषा नहीं, बल्कि हमारी संस्कृति, परंपरा और राष्ट्रीय पहचान का महत्वपूर्ण आधार है। भारत के विभिन्न राज्यों में रहने वाले करोड़ों लोग हिन्दी बोलते और समझते हैं। यही कारण है कि हिन्दी देश के विभिन्न क्षेत्रों के लोगों को आपस में जोड़ने का कार्य करती है।

हिन्दी भाषा सरल, मधुर और वैज्ञानिक लिपि वाली भाषा है। इसमें साहित्य, कविता, कहानी, उपन्यास और नाटक जैसी अनेक विधाओं का समृद्ध भंडार है। कबीर, तुलसीदास, प्रेमचंद, महादेवी वर्मा और हरिवंश राय बच्चन जैसे महान साहित्यकारों ने हिन्दी साहित्य को नई उँचाइयाँ प्रदान की हैं।



आज के आधुनिक युग में हिन्दी का महत्व लगातार बढ़ रहा है। शिक्षा, मीडिया, सिनेमा, इंटरनेट और सोशल मीडिया के माध्यम से हिन्दी का व्यापक प्रचार-प्रसार हो रहा है। विश्व के अनेक देशों में भी हिन्दी पढ़ाई बोली जाती है। 14 सितम्बर को प्रत्येक वर्ष "हिन्दी दिवस" मनाकर इसके महत्व को याद किया जाता है।

हमें अपनी मातृभाषा और राजभाषा के प्रति सम्मान का भाव रखना चाहिए तथा दैनिक जीवन में हिन्दी का अधिक से अधिक प्रयोग करना चाहिए। अन्य भाषाओं का ज्ञान भी आवश्यक है, लेकिन अपनी भाषा का सम्मान करना हमारा कर्तव्य है।

### कार्यालयों में हिन्दी का प्रयोग:

कार्यालयों में हिन्दी को लोकप्रिय बनाने के लिए इसे सहज, उपयोगी और सम्मानजनक तरीके से अपनाना सबसे प्रभावी होता है।

आज के समय में कार्यस्थल पर प्रभावी संवाद सफलता की कुंजी है। भारत जैसे बहुभाषी देश में हिन्दी एक प्रमुख भाषा है, इसलिए कार्यालय में हिन्दी सीखना कर्मचारियों के लिए बहुत लाभदायक साबित हो सकता है।

कार्यालय में हिन्दी सीखने से सहकर्मियों के साथ बातचीत आसान हो जाती है। इससे टीमवर्क बेहतर होता है और कार्यों



को समझने तथा समझाने में सुविधा मिलती है जिन कर्मचारियों की मातृभाषा हिंदी नहीं है, उनके लिए हिंदी सीखना नए अवसरों के द्वार खोल सकता है।

हिंदी सीखने के लिए प्रतिदिन कुछ नए शब्द याद करना, सहकर्मियों से हिंदी में बातचीत करना, हिंदी समाचार पढ़ना और हिंदी वीडियो देखना उपयोगी उपाय हैं। इसके अलावा, छोटे-छोटे वाक्यों का नियमित अभ्यास भाषा पर पकड़ मजबूत करता है।

कार्यालयों में हिंदी का ज्ञान न केवल संचार को बेहतर बनाता है, बल्कि आत्मविश्वास भी बढ़ाता है। इससे कार्यस्थल का वातावरण अधिक सहयोगपूर्ण और सकारात्मक बनता है। इसलिए प्रत्येक कर्मचारी को अपनी आवश्यकता और सुविधा के अनुसार हिंदी सीखने का प्रयास करना चाहिए।

कार्यालयों में हिंदी सीखना केवल एक भाषा सीखना नहीं है, बल्कि बेहतर संवाद, मजबूत संबंध और पेशेवर विकास की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

### **कार्यालयी कार्य में हिंदी भाषा के सरल उपाय:**

कुछ व्यावहारिक उपाय अपनाकर हम हिंदी को सहज, सरल और कार्यालयी कार्य में सार्थक बना सकते हैं :-

- खुद से शुरुआत करें – सहकर्मियों से रोजमर्रा की बातचीत में सरल और स्पष्ट हिंदी का उपयोग करें।
- द्विभाषी संचार रखें – ईमेल, नोटिस या प्रस्तुतियों में हिंदी के साथ-साथ अंग्रेजी भी शामिल करें अर्थात् द्विभाषी रूप में, ताकि मझ सकें।
- हिंदी दिवस और अन्य कार्यक्रम आयोजित करें – भाषण, निबंध, प्रश्नोत्तरी या कविता पाठ जैसी गतिविधियाँ कर्मचारियों की रुचि बढ़ाती हैं।
- सरल हिंदी का प्रयोग करें – बहुत कठिन या अत्यधिक साहित्यिक शब्दों की जगह सामान्य बोलचाल की हिंदी का उपयोग करें।
- प्रशिक्षण और कार्यशालाएँ आयोजित करें – कर्मचारियों को कार्यालयी हिंदी और आधिकारिक लेखन का प्रशिक्षण दें।
- हिंदी में कार्यालयी सामग्री उपलब्ध कराएँ – फॉर्म, सूचना-पट्ट, दिशा-निर्देश और आवश्यक दस्तावेज हिंदी में भी उपलब्ध हों।
- प्रोत्साहन दें – जो कर्मचारी हिंदी का प्रभावी उपयोग करें, उन्हें प्रशंसा या पुरस्कार देकर प्रेरित करें।
- तकनीकी साधनों का उपयोग करें – हिंदी टाइपिंग टूल, यूनिकोड फॉन्ट और अनुवाद सॉफ्टवेयर सुविधाओं का उपयोग आसान बनाएँ।

इन उपायों से हिंदी का प्रयोग स्वाभाविक रूप से बढ़ेगा और कार्यालय में एक सकारात्मक, समावेशी भाषा के प्रयोग में वृद्धि होगी।



### हडको में हिन्दी के प्रचार-प्रसार हेतु राजभाषा अनुभाग द्वारा उठाए गए कदम का संक्षिप्त विवरण:

- राजभाषा अनुभाग द्वारा हडको कार्मिकों को कंप्यूटर पर यूनिकोड के माध्यम से हिन्दी टंकण प्रशिक्षण दिया जाता है।



- ई-ऑफिस में क्लिक नोटिंग के माध्यम से कार्मिकों को हिन्दी वाक्यांश उपलब्ध करवाए गए हैं, जिससे उन्हें हिन्दी में नोटिंग करने में सुविधा हो। इसके अतिरिक्त इंटरनेट पर अंग्रेजी-हिन्दी शब्दकोष भी उपलब्ध है।
- समय-समय पर हिन्दी से संबंधित तकनीकी तथा अन्य हिन्दी भाषा से संबंधित ज्ञानवर्धक कार्यशालाओं का आयोजन किया जाता है जिससे हडको के कार्मिकों को लाभ प्राप्त हो सके।



- राजभाषा अनुभाग में हिन्दी पुस्तकालय उपलब्ध है जिसका लाभ हडको के सभी कार्मिक ले सकते हैं। इसके अतिरिक्त प्रोत्साहन योजनाओं के अंतर्गत रु.1000/- की राशि से हिन्दी की पुस्तकों/पत्रिकाओं की खरीद का भी प्रावधान है।



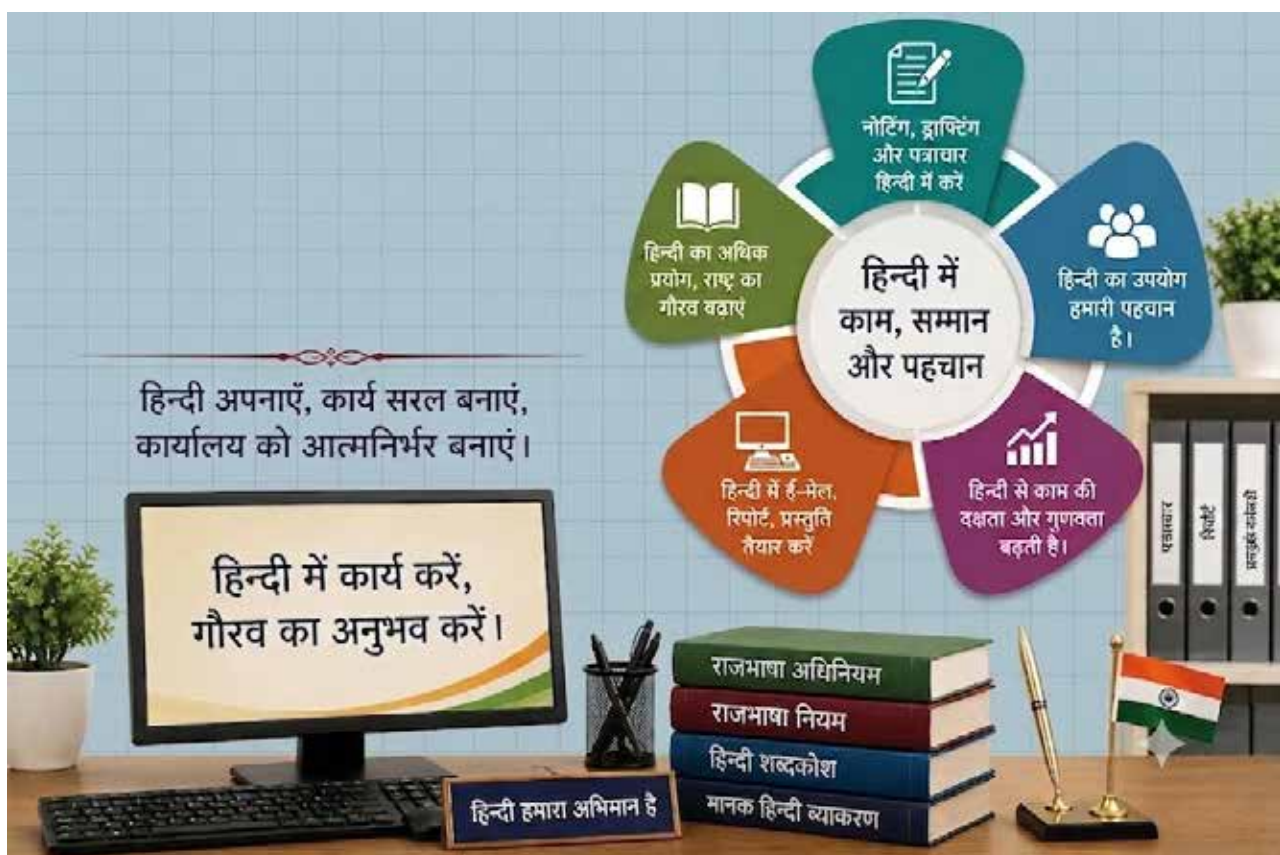
- हडको इंटरनेट पर उपलब्ध प्रत्येक वित्त वर्ष के आधार पर प्रोत्साहन योजनाओं का भी प्रावधान है जिसके अंतर्गत कार्मिक अपने द्वारा पूरे वर्ष हिन्दी में किए गए पत्राचार / ई-मेल / टिप्पण आदि का ब्यौरा दे सकते हैं और निर्धारित पात्रता के अनुसार पुरस्कार प्राप्त कर सकते हैं।
- हडको की छमाही गृह-पत्रिका 'आवास ध्वनि' में लेख और कविता छपवाने के लिए दे सकते हैं जिसके लिए निर्धारित मानदेय प्रदान किया जाता है।
- प्रत्येक वर्ष पखवाड़े के दौरान कई प्रतियोगिताओं/कार्यक्रमों/संगोष्ठियों आदि आयोजित कर कार्मिकों में हिन्दी के प्रचार-प्रसार हेतु कार्य किया जाता है।

उपरोक्त के अतिरिक्त राजभाषा अनुभाग द्वारा समय-समय पर कार्यालय में हिन्दी को बढ़ावा देने के लिए अन्य उल्लेखनीय कार्य भी किए जाते हैं।

अंत में कहा जा सकता है कि कार्यालयों में हिंदी का प्रयोग केवल राजभाषा नीति का पालन नहीं है, बल्कि यह आम नागरिकों को प्रशासन से जोड़ने का प्रभावी माध्यम भी है। हिंदी का अधिकाधिक उपयोग देश की भाषा, संस्कृति और प्रशासनिक व्यवस्था को मजबूत बनाता है।

**पूर्णमा कोहलीवाल**

सहायक महाप्रबंधक (सचि.-रा.भा.), हडको





## ‘भाषा के प्रक्षेपास्त्र’

भाषा माध्यम है--सूचना का और संवेदना का। सूचना के लिए सरल, सीधी और इकहरी भाषा चाहिए। उससे वही अर्थ निकले जो लिखा या कहा गया हो! किसी प्रकार की सांकेतिकता की उसमें कोई जगह नहीं होती। संकेत और इशारे हुए नहीं कि चतुर और शातिर व्याख्याकार बात का बतंगड़ बना देते हैं। सच कहूँ तो सूचनात्मक भाषा में बात का बतंगड़ बनाने जैसे मुहावरे की भी जगह नहीं होती। इसी मुहावरे को खींचखाँच कर मुख्य मुद्दे से भटका-भटकाया जा सकता है। मैंने सुना है कि एक अदालत में घोड़ागाड़ी को राजपथ पर चलाने के लिए दण्ड दिया जा रहा था। शातिर वकील ने बताया कि वह घोड़ागाड़ी थी ही नहीं, उस गाड़ी में घोड़ियाँ जुती थीं। भाषा के इसी झोल से अभियुक्त बरी हो गया। इसीलिए सूचनात्मक भाषा का मापदंड यह है कि उसमें विचलन या मनमानी व्याख्या के लिए जगह मत छोड़ो। वही लिखो, जो कहना चाह रहे हो। न अधिक कहो, न न्यून। न किसी को महिमामंडित करो, न किसी को व्यर्थ तिरस्कृत करो।

कोई कह सकता है कि ऐसी भाषा कितनी इकहरी, एक-अर्थी, संकुचित, उबाऊ और भावशून्य होगी। गणित जैसी रूखी और फार्मूले जैसी कंकाल। परन्तु ऐसा न सोचें कि ऐसी भाषा में कोई सौंदर्य होता ही नहीं। सूचना देने का सारा सौंदर्य उस सूचना की सुस्पष्टता, मितकथन और लक्ष्य-सम्भान की कुशलता पर निर्भर है। यदि तीव्रतम वेग से और संक्षिप्ततम मार्ग से कोई सन्देश निष्कलुष और अविकृत रूप में पहुँच जाए तो उस सौंदर्य के आगे कोई नहीं ठहरता। बड़े-से-बड़े कवियों की कल्पना-रमणीयता आचार्य रामचंद्र शुक्ल के विचारात्मक निबंधों की सघन भाषा के आगे पानी भरती है। वास्तव में सूचना का धर्म ही भटकावहीन पथ प्रशस्त करना है। कभी किसी राष्ट्रीय समाचार पत्र या राष्ट्रीय समाचार चैनल की भाषा सुनिए। उसमें किसी महत्त्वपूर्ण व्यक्तित्व के दिवंगत होने को न तो गोलोकवासी कहा जाता है, न प्रभु-चरणों में लीन होना कहा जाता है, अपितु एक संतुलित और ठहरा हुआ वाक्य कहा जाता है - आज उनका देहांत हो गया। यह भी नहीं कहा जाता कि वे मर गए। ऐसा कहना उनका अपमान होगा।

एक रोचक प्रश्न खड़ा हो गया कि सूचनात्मक भाषा में भी भेद हो सकता है। यदि सूचना ही देनी थी तो जैसे अंग्रेजी में ‘डाइड’ कहकर सूचना दी जाती है, उसी प्रकार हिंदी में भी ‘मर गए’ कहा जा सकता है। परन्तु नहीं, गद्य भाषा और सूचनात्मक भाषा में भी शब्द स्तर पर शब्द-चयन से बहुत अंतर पड़ता है। न किसी का अपमान करना, न अतिरिक्त सम्मान देना - इसके लिए अत्यंत संतुलित, ठहरे हुए और अविवादास्पद शब्दों का चयन आवश्यक है। इससे संकेत मिलता है कि सूचनात्मक भाषा का भी एक सौंदर्यशास्त्र होता है। वह इतना जैविक होता है कि उसमें कृत्रिम अलंकारों, मुहावरों, रमणीय कल्पनाओं की जरूरत ही नहीं होती। जैसे पुरुषों का सौंदर्य उनके दैहिक सौंदर्य, संतुलित गठन, कर्म-कुशलता में निहित होता है, उन्हें बाहरी प्रसाधनों के बिना भी सँवरना आता है, उसी प्रकार सूचनात्मक भाषा की सुंदरता एकनिष्ठ और अस्खलित लक्ष्य-बेधन में निहित होती है। जब कभी सरकारी राजकाज की भाषा में ऐसी सुस्पष्ट, सरल और लक्ष्य को बेधती हुई भाषा सुनने को मिलती है तो करोड़ों-करोड़ों देशवासियों की बाँछें खिल उठती हैं। मुझे पिछले दिनों आवासन एवं शहरी कार्य मंत्रालय, भारत सरकार की एक बैठक में हिंदी सलाहकार समिति के सदस्य होने

के नाते जाने का अवसर मिला। मैं इस तथ्य से मुग्ध था कि विभागीय कामकाज का भाषा प्रयोग अत्यंत मानक और सुस्पष्ट था। विज्ञान, सामाजिक अध्ययन, राजनीतिशास्त्र जैसे सूचनात्मक विषयों के समान सरकारी कार्यालयों की भाषा में भी सूचनात्मक सौंदर्य होना आवश्यक है।

परन्तु संसार में मात्र पाषाण ही नहीं हैं। उछलता हुआ जल, गाते हुए पक्षी, मन की मौज में गाते लोग, सुख-दुख के भँवरों और झूलों में कूकते और क्रन्दन करते अवसर भी आते हैं। उन्हें भी जीना होता है, कहना होता है। उनमें होती हैं तरल संवेदनाएँ।

ये संवेदनाएँ अतल, असीम, अनंत, अरूप और अमाप्य होती हैं। भाषा को उनकी गहराइयाँ, ऊँचाइयाँ और अरूप भावनाएँ व्यक्त करनी होती हैं। इसलिए मीरा दर्द में इतना ही कह पाती हैं --

मेरो दर्द न जाने कोय।

**कबीर कहते हैं --**

**सब रग तंत रबाब तन, बिरह बजावै नित्त।  
और न कोई सुनि सके, कै साई कै चित्त।**

विरह तो वाद्य से निकलने वाला वेदना- विगलित राग है। जिसे या तो दर्द देने वाला सुन सकता है, या पाने वाला। फिर भाषा बावली क्या करे?

तुलसी ने इसी पीड़ा को यों कहा है -- गिरा अनयन, नयन बिनु बानी। जुबाँ के पास आँखें नहीं हैं कि देख सकें। और नयन के पास जुबाँ नहीं है कि कह सके। हम भी प्रशंसा या दुख के अतिरेक में अक्सर कह देते हैं - क्या कहूँ, शब्द नहीं हैं मेरे पास। भाषा सचमुच लाचार है अनुभूति की तुलना में। पर.. पर.. पर..। विधाता ने संसार में जहाँ एक से एक योद्धा, सैलानी, वैज्ञानिक, दार्शनिक पैदा किए हैं, वहीं कुछ ऐसे साहित्यकार भी पैदा किए हैं जो अकथ्य को कह लेते हैं। कहते ही नहीं, उसे आपके हृदय में भी उतार देते हैं। इसके लिए भाषा ने आरम्भ से आज तक अनेक शब्द-शस्त्र, शब्द-अस्त्र और प्रक्षेपास्त्र निर्मित किए हैं। उसने हार आज तक नहीं मानी है।

माना कि संवेदनाएँ कही नहीं जातीं। जितनी बात कहते हैं, उससे अधिक मन में ही रह जाती हैं। परन्तु मनुष्य अथक राही है। उसकी भाषा में उन चिड़ियों-सी घ्राण-शक्ति है जो भोर होने से पहले उसकी सूचना जगत भर को दे देती है अपनी चहचह से। उसके पास एक ओर गूढ़ रहस्यों को जानने की शक्ति है तो दूसरी ओर है हार न मानने वाली भाषा।

भाषा हार नहीं मानती। वह अकथ्य को कहने के लिए कुछ-न-कुछ तरीके खोज लेती है। संवेदना की अतल गहराइयों तक पहुँचने के लिए उसे दिव्य प्रक्षेपास्त्र बनाने पड़ते हैं। कभी शब्द को प्रक्षेपास्त्र बनाना पड़ता है, कभी पदबंध को तो कभी पूरे वाक्य को।

शब्द को प्रक्षेपास्त्र बनाएँ तो उपमान या प्रतीक बनता है। पदबंध को सुदूर अर्थ तक प्रक्षेपित किया जाए तो उसे बहुव्रीहि समास या मुहावरा कहते हैं। और वाक्य को दूरभेदी बनाएँ तो उसे सूक्ति, अन्योक्ति, लोकोक्ति या समासोक्ति कहते हैं।

किसी मोटे को 'मोटा' कहने में वह बात नहीं है, जो उसे 'हाथी' कहने में है य 'मूर्ख' को 'गधा' कहने में है, 'शिशु' को 'फूल' कहने में है या 'सुंदरी' को 'हरसिंगार' कहने में है। इन्हें प्रतीक कहें या उपमान, ये दिव्यास्त्र हैं जो किसी के गुण को अनंत



विस्तार दे देते हैं। यद्यपि ये झूठे हैं, सांकेतिक हैं, वास्तविकता से परे हैं। फिर भी ये आपके हृदय को गला देते हैं। सूखी आँखियों में निर्झर बहा देते हैं। ये उपमान कागज के फूल नहीं होते, ये उमड़ते घुमड़ते मेघ होते हैं। ये स्वयं नीर से भरे होते हैं तो तुम्हारी सूखी आँखियों में भी बाढ़ ला देते हैं। यही बात प्रतीकों की है। दोनों में अंतर महज इतना है कि उपमान विवाहित है। उसकी उपमेय से शादी हुई है। वह बस उसी के लिए जीता है, जबकि प्रतीक अविवाहित नगर- पुरुष है जो अनेक-अनेक उपमेयों के लिए लीला करता है। एकसाथ कई-कई उपमेयों के साथ क्रीड़ा करता है। सबको पूर्णता का सुख देते हुए स्वयं फिर भी अस्खलित, पूर्ण और अक्षुण्ण बना रहता है। ये उपमान और प्रतीक विश्व भर के साहित्य में छाए हुए हैं और पाठकों के हृदयों पर राज कर रहे हैं।

ये शब्द या पद जब एकत्र होकर पदबंध या मुहावरा बनते हैं और एक वाक्य के अंग बनते हैं तो इनकी धार देखने योग्य होती है। किसी 'ढुलमुल' को 'थाली का बैंगन' या 'बेपैदी का लोटा' कहने में जो बात है, अकारण बात बढ़ाने को 'तिल का ताड़ बनाना' कहने में जो बात है, वह सरल अभिव्यक्ति में कहाँ! सरल वाक्य बलराम भैया हैं जो लठ चलाना जानते हैं। उनका रणक्षेत्र दस बीस मीटर से अधिक नहीं होता। सरल वाक्यों की मार गंधे की पीठ पर डंडे मारने जितनी होती है। किंतु जब उन वाक्यों में मुहावरे और लोकोक्तियाँ जुड़ जाती हैं तो मानो कृष्ण के हाथों में सुदर्शन चक्र आ जाता है। यह सीधा नहीं वक्र होता है। यह हाथ में लेकर नहीं, फेंक कर मारा जाता है और दूर से ही शिशुपाल का वध कर देता है। वक्रता मुहावरों की जान होती है। ये भी भाषा के दिव्यास्त्र हैं। इनकी और लोकोक्तियों की व्यंग्य-कला का मजा लेना हो तो एकबार द्रोपदी का वक्र वाक्य सुन लें - अंधे की संतान अंधी। ओह! यह न तो लोकोक्ति है, न मुहावरा! यह विष से बुझा ऐसा बाण है, जिसमें वास्तविकता उतनी ही विद्रूप है, जितनी कि व्यंग्योक्ति। ऐसी दोहरी मार से महाभारत होकर रहा। आज भी क्या इन्हीं भाषायी कटुक्तियों से युद्ध नहीं लड़े जा रहे ?

भाषा के दिव्यास्त्र अनंत हैं; क्योंकि भाषा ऐसी दिव्य सुंदरी है जो संसार के सभी परिधानों को धता बताकर अपने लिए नित नए परिधान खोज लेती है। वाक्य-रचना में जब वह तीखी मिर्च-सी तेज और प्रभावी हो जाती है तो सूक्ति कहलाती है। है तो वह उक्ति ही, परंतु उसकी चुस्ती, कलात्मकता और संक्षिप्तता के कारण हम उसे सूक्ति कहते हैं। थोड़े में बहुत कहना या गागर में सागर भरना --यह सूक्ति की करामात है।

और जब कोई उक्ति अपने संकेतों के द्वारा खुद अपने आप को नहीं व्यक्त करती बल्कि अपने बहाने से औरों पर वार करती है ; 'कहना बेटी को सुनाना बहू को' के अंदाज में जब बातें करती है तो उसे अन्योक्ति कहते हैं। बिहारी की एक अन्योक्ति प्रसिद्ध है। कच्ची उम्र की नई पत्नी के संग विलास में डूबे राजा जयसिंह को जब कोई नहीं चेता सका तो बिहारी की इस एक अन्योक्ति ने चेताया। उन्होंने लिखा --

कहते हैं राजा जयसिंह इस दिव्यास्त्र की चोट से दरबार में लौटे। यह अन्योक्ति है।

**नहीं पराग नहीं मधुर मधु, नहीं विकास इहि काल।**

**अली कली ही सो बंध्यो, आगे कौन हवाल।**



ए रानी ! मन देखु बिचारी।

एही नैहर रहना दिन चारी।

इसी की एक दुधारी बहन है-समासोक्ति। वह दोनों तरफ धार रखती है। अपने लिए भी जीती है और औरों पर भी दूर तक मार करती है। जब पद्मावती की सखियाँ पद्मावती को कहती हैं --

वे केवल अपने मायके में रहने की बात नहीं कर रही, अपितु इस नश्वर संसार में रहने की भी बात कर रही हैं।

अन्योक्ति और समासोक्ति कितना भी संकेत उठा लें, किंतु वे दोनों किसी एक लक्ष्य से बँधी होती हैं। परंतु 'लोकोक्ति' स्वतंत्र है, मुक्त विचरण करती है और लोगों की जुबान पर भी विहार करती है। इसलिए उसे 'कहावत' भी कहते हैं। जब कोई सांकेतिक उक्ति स्वयं अपना अर्थ न देकर किसी और तरफ इशारा करती है तो उसे लोकोक्ति कहते हैं। यह स्वयं में पूरा वाक्य होती है। यह वाक्य पर निर्भर नहीं होती बल्कि किसी कथन को पुष्ट करती है या उसका समर्थन करती है। जैसे -- 'अधजल गगरी छलकत जाय'। कोई अपटु, अकुशल व्यक्ति कुशलता पर बढ़-चढ़कर बातें करने लगे तो बस इतना ही कहना काफी है -- 'थोथा चना बाजे घना।'

जैसे नारियों के परिधान अनंत हैं, उसी प्रकार भाषा के प्रक्षेपास्त्र भी अनंत हैं। अभी हमने अलंकारों की बात ही कहाँ की है? हर कदम पर रंग बदलते शब्द यमक का सुख देते हैं तो एक ही मुख में दो-तीन धार रखने से श्लेष अलंकार बनता है।

अर्थ के अलंकार अनंत हैं। मजे की बात यह है कि ये कहीं बनाए नहीं गए हैं। जैसे नदी के किनारे बनाए नहीं जाते; नदी जहाँ-जहाँ से गुजरती है, वहाँ किनारे अपने-आप बन जाते हैं। ऐसे ही ये अलंकार मर्मज्ञ कवियों द्वारा प्रयोग करने से बन गए हैं। जब वे एक लीक बन गए तो कालांतर में काव्यशास्त्रियों ने उन्हें एक नाम दे दिया और वे प्रचलित हो गए। उनकी एक परिभाषा बन गई। उन्हें शास्त्र में लिख दिया गया तो वे काव्यशास्त्र का अंग बन गए। समय बदला तो इन अलंकारों या काव्य-प्रयोगों के रूप भी बदले। पर हममें से कुछ पुराने रूपों को ही वास्तविक अलंकार मानते रहे, कुछ नए रूपों को मानने लगे। दोनों के अनुयायियों की कमी नहीं इस संसार में। फिर भी शास्त्रार्थ हो रहे हैं। आलोचक, समीक्षक और प्रवक्ता एक-दूसरे को धूल चटाने में लगे हुए हैं। बिना यह जाने कि यह भाषा-रूपसी एक-सी साड़ी कभी नहीं पहनती। वक्त बदलेगा, तो नए परिधान, नए दिव्यास्त्र, नई अभिव्यक्तियाँ नए-नए रूप सृजित करती चलेंगी। जो नए युग में भी पुराने युग के मुगधर घुमाते रहेंगे, उनकी छत कोई घर बैठे-बैठे ही उड़ा देगा। समय की आवाज सुनना बहुत जरूरी है। संभावनाएँ भविष्य के गर्भ में सदा कुलबुलाती रहती हैं। आगे भी यह धरती और सरस्वती जड़ नहीं रहने वाली।

डॉ. अशोक बत्रा

पूर्व प्राचार्य श्रीलालनाथ हिंदू कालेज, रोहतक  
कवि एवं भाषाविद



## बच्चों में मोबाइल फोन का बढ़ता उपयोग: सुविधा या चुनौती?

बचपन जीवन का सबसे सुंदर और सबसे अनमोल पड़ाव होता है। यह वह समय है जब बच्चे खेलते हैं, सीखते हैं, कल्पनाओं की दुनिया में उड़ान भरते हैं और अपने व्यक्तित्व की नींव रखते हैं। किंतु आज के डिजिटल युग में यह बचपन धीरे-धीरे मोबाइल फोन की छोटी-सी स्क्रीन तक सिमटता जा रहा है। कुछ वर्ष पहले तक बच्चों की दुनिया मैदानों, खेलौनों, चित्रकथाओं और दोस्तों के साथ खेलकूद तक सीमित थी। शाम होते ही गलियों में बच्चों की हँसी और खेलों की आवाजें सुनाई देती थीं। आज वही दृश्य बहुत कम दिखाई देता है। अब अधिकांश बच्चे अपना खाली समय मोबाइल पर वीडियो देखने, ऑनलाइन गेम खेलने या सोशल मीडिया पर बिताने लगे हैं। आधुनिक जीवनशैली, इंटरनेट की आसान उपलब्धता, ऑनलाइन शिक्षा, डिजिटल मनोरंजन और माता-पिता की व्यस्त दिनचर्या ने इस परिवर्तन को और तेज कर दिया है। कई बार माता-पिता बच्चों को शांत रखने या व्यस्त रखने के लिए मोबाइल दे देते हैं, जो धीरे-धीरे उनकी आदत और फिर लत बन जाती है।



विज्ञान और तकनीक ने मानव जीवन को अनेक सुविधाएँ प्रदान की हैं। मोबाइल फोन उन महान आविष्कारों में से एक है जिसने संचार, शिक्षा और जानकारी के क्षेत्र में क्रांति ला दी है। कुछ ही क्षणों में दुनिया के किसी भी कोने से जुड़ जाना, नई-नई जानकारियाँ प्राप्त करना और घर बैठे शिक्षा हासिल करना आज संभव हो गया है। लेकिन हर आविष्कार की तरह मोबाइल फोन का प्रभाव भी उसके उपयोग पर निर्भर करता है। यदि इसका उपयोग संतुलित और आवश्यकतानुसार किया जाए तो यह वरदान है, परंतु यदि इसका अत्यधिक प्रयोग किया जाए तो यही सुविधा एक गंभीर चुनौती बन जाती है। वर्तमान समय में बच्चों में मोबाइल फोन का बढ़ता उपयोग इसी चुनौती का सबसे बड़ा उदाहरण है।

यह कहना उचित नहीं होगा कि मोबाइल फोन केवल हानिकारक है। इसके अनेक सकारात्मक पक्ष भी हैं। सही मार्गदर्शन के साथ मोबाइल बच्चों के लिए ज्ञान का एक विशाल स्रोत बन सकता है। वे ऑनलाइन पाठ्यक्रमों से पढ़ाई कर सकते हैं, विज्ञान के प्रयोग देख सकते हैं, नई भाषाएँ सीख सकते हैं, सामान्य ज्ञान बढ़ा सकते हैं और अपनी रचनात्मक



प्रतिभा को निखार सकते हैं। महामारी के दौरान ऑनलाइन शिक्षा ने यह सिद्ध किया कि आवश्यकता पड़ने पर मोबाइल शिक्षा का प्रभावी माध्यम बन सकता है। इस प्रकार तकनीक बच्चों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है, यदि उसका उपयोग उद्देश्यपूर्ण और सीमित हो।

समस्या तब उत्पन्न होती है जब मोबाइल बच्चों के जीवन का केंद्र बन जाता है। घंटों तक स्क्रीन के सामने बैठे रहने से उनकी आँखों पर बुरा प्रभाव पड़ता है, सिरदर्द, गर्दन और पीठ में दर्द जैसी समस्याएँ बढ़ने लगती हैं। शारीरिक गतिविधियों में कमी के कारण मोटापा और अन्य स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ भी उत्पन्न हो सकती हैं। इतना ही नहीं, देर रात तक मोबाइल चलाने से नींद पूरी नहीं होती, जिसका सीधा प्रभाव उनकी पढ़ाई, स्मरण शक्ति और एकाग्रता पर पड़ता है।



मोबाइल का अत्यधिक उपयोग बच्चों के मानसिक और भावनात्मक विकास को भी प्रभावित करता है। ऑनलाइन गेम और सोशल मीडिया की लत उन्हें वास्तविक जीवन से दूर ले जाती है। वे परिवार के साथ बातचीत करने, मित्रों के साथ खेलने और प्रकृति के बीच समय बिताने के बजाय आभासी दुनिया में अधिक खोए रहते हैं। धीरे-धीरे उनमें चिड़चिड़ापन, अकेलापन, तनाव और अधीरता जैसी समस्याएँ दिखाई देने लगती हैं। कई बार इंटरनेट पर उपलब्ध अनुचित सामग्री और साइबर अपराधों का खतरा भी बच्चों के लिए गंभीर चिंता का विषय बन जाता है।



मोबाइल की बढ़ती निर्भरता का प्रभाव केवल बच्चों पर ही नहीं, बल्कि पूरे परिवार पर पड़ता है। पहले परिवार के सदस्य एक साथ बैठकर बातचीत करते थे, अनुभव साझा करते थे और आपसी संबंध मजबूत होते थे। आज अनेक घरों में एक ही कमरे में बैठे लोग भी अपने-अपने मोबाइल में व्यस्त दिखाई देते हैं। संवाद कम हो रहा है और डिजिटल दूरी बढ़ती



जा रही है। यह स्थिति बच्चों के भावनात्मक विकास के लिए भी उचित नहीं है, क्योंकि वे परिवार से ही व्यवहार, संस्कार और सामाजिक मूल्यों को सीखते हैं।



इस समस्या का समाधान तकनीक से दूरी बनाना नहीं, बल्कि उसके विवेकपूर्ण और संतुलित उपयोग को अपनाना है। माता-पिता को बच्चों के साथ अधिक समय बिताना चाहिए, उनके साथ खेलना चाहिए, कहानियाँ पढ़नी चाहिए और उन्हें पुस्तकें पढ़ने, चित्रकला, संगीत, योग, खेलकूद तथा अन्य रचनात्मक गतिविधियों के लिए प्रेरित करना चाहिए। विद्यालयों को भी डिजिटल शिक्षा के साथ-साथ डिजिटल अनुशासन और साइबर सुरक्षा का ज्ञान देना चाहिए। बच्चों के मोबाइल उपयोग के लिए समय-सीमा निर्धारित करना, स्क्रीन-फ्री समय तय करना और भोजन या पारिवारिक समय में मोबाइल का उपयोग न करना जैसी छोटी-छोटी आदतें भी बड़ा परिवर्तन ला सकती हैं।

बच्चों को यह समझाना भी आवश्यक है कि मोबाइल जीवन का साधन है, जीवन का उद्देश्य नहीं। तकनीक तभी सार्थक है जब वह हमारे ज्ञान, व्यक्तित्व और जीवन की गुणवत्ता को बेहतर बनाए, न कि हमें उसी का गुलाम बना दे। यदि बचपन मोबाइल की स्क्रीन में ही सिमट जाएगा, तो आने वाली पीढ़ी अनुभवों, संवेदनाओं और मानवीय संबंधों की उस समृद्ध दुनिया से वंचित रह जाएगी, जो एक स्वस्थ समाज की पहचान है।

अंततः, यह हम सभी माता-पिता, शिक्षक और समाज की सामूहिक जिम्मेदारी है कि बच्चों को तकनीक का सही उपयोग



सिखाएँ। हमें ऐसा वातावरण तैयार करना होगा जहाँ बच्चे डिजिटल दुनिया से भी जुड़ें और वास्तविक जीवन की सुंदरता को भी पूरी तरह जी सकें। जब उनके हाथों में मोबाइल के साथ पुस्तक होगी, आँखों के सामने स्क्रीन के साथ प्रकृति होगी और जीवन में तकनीक के साथ संस्कार भी होंगे, तभी हम एक स्वस्थ, जागरूक और संतुलित पीढ़ी का निर्माण कर सकेंगे। यही समय की सबसे बड़ी आवश्यकता है।

**अजय कुमार अरोड़ा**  
उप महाप्रबंधक (सचि.), हडको





## सुदृढ़ ऋण प्रबंधन : विकास वित्त की आधारशिला

किसी भी विकासोन्मुख वित्तीय संस्था की सफलता केवल उसके द्वारा वितरित किए गए ऋणों से नहीं आँकी जाती, बल्कि इस बात से निर्धारित होती है कि उन ऋणों का प्रबंधन कितनी दक्षता, पारदर्शिता और उत्तरदायित्व के साथ किया गया है। वित्तीय अनुशासन, सटीक लेखांकन तथा समयबद्ध सूचना प्रणाली किसी भी संस्था की विश्वसनीयता के मूल आधार होते हैं। विशेष रूप से ऐसी विकास वित्तीय संस्था, जिसका उद्देश्य केवल लाभ अर्जित करना नहीं बल्कि राष्ट्र के समग्र विकास में योगदान देना हो, उसके लिए ऋण लेखा एवं प्रबंधन व्यवस्था और भी अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है।



**वित्तीय अनुशासन एवं सटीक ऋण लेखांकन**

— + ०००० + —

पारदर्शिता, शुद्धता, समन्वय और तकनीक के संगम से हम सुदृढ़ ऋण प्रबंधन के माध्यम से राष्ट्र के सतत विकास के निर्माण में अपना योगदान देते हैं।



**लेखा-परीक्षा सहयोग : पारदर्शिता की हमारी प्रतिबद्धता**



**ईआरपी**  
के माध्यम से एकीकृत, पारदर्शी एवं दृढ़ प्रबंधन





विविध विभागों के साथ प्रभावी समन्वय व सुचना सहभागिता

**हर ऋण, एक निर्माण | हर निर्माण, एक बेहतर भविष्य**







आवास सभी के लिए आवास

शहरी अवसंरचना स्मार्ट एवं सतत शहर

जल एवं स्वच्छता स्वच्छ जल, स्वस्थ जीवन

समाजिक अवसंरचना सार्वजनिक विकास की दिशा में

नवीकरणीय ऊर्जा हरित ऊर्जा, उन्नत कल

**हमारी कार्यशैली की पहचान**

- ⊗ सटीकता
- ⊗ समयबद्धता
- ⊗ पारदर्शिता
- ⊗ उत्तरदायित्व
- ⊗ तकनीकी निपुणता
- ⊗ उत्कृष्ट सेवा पावना



**“सुदृढ़ ऋण प्रबंधन ही विकास वित्त की वास्तविक आधारशिला है।”**



**हुडको**  
विकास की आधारशिला



हडको देश की अग्रणी विकास वित्तीय संस्थाओं में से एक है, जिसने दशकों से आवास, शहरी अवसंरचना, जलापूर्ति, स्वच्छता, परिवहन, ऊर्जा तथा सामाजिक आधारभूत संरचना के विकास में उल्लेखनीय योगदान दिया है। हडको द्वारा वित्तपोषित प्रत्येक परियोजना केवल एक वित्तीय लेन-देन नहीं होती, बल्कि देश के सामाजिक एवं आर्थिक विकास की दिशा में उठाया गया एक सशक्त कदम होती है। ऐसे प्रत्येक ऋण के पीछे सटीक लेखांकन, व्यवस्थित अभिलेख संधारण तथा निरंतर निगरानी की आवश्यकता होती है, जिसका दायित्व ऋण लेखा एवं प्रबंधन विभाग कुशलतापूर्वक निभाता है।

ऋण लेखा एवं प्रबंधन विभाग किसी भी ऋण के संपूर्ण जीवनचक्र का अभिन्न अंग है। ऋण स्वीकृति के उपरांत उसकी लेखा प्रविष्टियाँ, वितरण, ब्याज की गणना, पुनर्भुगतान का समायोजन, खाते का मिलान, आवश्यक संशोधन तथा अंतिम समापन तक की प्रत्येक प्रक्रिया इस विभाग की निगरानी में संपन्न होती है। विभाग यह सुनिश्चित करता है कि प्रत्येक वित्तीय लेन-देन निगम की नीतियों, भारतीय लेखांकन मानकों तथा नियामकीय प्रावधानों के अनुरूप अभिलिखित हो। यही कारण है कि संस्था के वित्तीय अभिलेखों की विश्वसनीयता और शुद्धता बनाए रखने में इस विभाग की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है।

वर्तमान समय में वित्तीय संस्थानों के समक्ष केवल व्यवसाय विस्तार ही चुनौती नहीं है। नियामकीय अनुपालन, डेटा की शुद्धता, डिजिटल प्रक्रियाओं का प्रभावी उपयोग तथा समय पर सूचना उपलब्ध कराना भी उतना ही आवश्यक हो गया है। ऐसे परिवेश में ऋण लेखा एवं प्रबंधन विभाग केवल लेखांकन तक सीमित न रहकर संस्था की आंतरिक नियंत्रण प्रणाली, सुशासन एवं जोखिम प्रबंधन का एक महत्वपूर्ण स्तंभ बन गया है।

वित्तीय वर्ष 2025-26 के दौरान विभाग ने अपने नियमित दायित्वों का सफलतापूर्वक निर्वहन करते हुए ऋण लेखांकन से संबंधित समस्त कार्य निर्धारित समय-सीमा में पूर्ण किए। ऋण वितरण से लेकर ब्याज की गणना, पुनर्भुगतान की प्रविष्टियों, खातों के मिलान तथा वित्तीय अभिलेखों के अद्यतन तक प्रत्येक कार्य को उच्च स्तर की सावधानी एवं उत्तरदायित्व के साथ संपादित किया गया। प्रत्येक प्रविष्टि का परीक्षण एवं सत्यापन इस प्रकार किया गया कि वित्तीय विवरणों की शुद्धता एवं विश्वसनीयता निरंतर बनी रहे।

डिजिटल परिवर्तन के वर्तमान युग में एंटरप्राइज रिसोर्स प्लानिंग प्रणाली ने विभागीय कार्यप्रणाली को अधिक सुव्यवस्थित एवं प्रभावी बनाया है। ईआरपी के माध्यम से विभिन्न ऋण खातों से संबंधित सूचनाएँ एकीकृत रूप से उपलब्ध रहती हैं, जिससे न केवल डेटा की पुनरावृत्ति कम होती है, बल्कि विभिन्न विभागों के मध्य सूचना का आदान-प्रदान भी सरल एवं त्वरित हो जाता है। वास्तविक समय में उपलब्ध वित्तीय आँकड़े प्रबंधन को समयानुकूल निर्णय लेने में सहायता प्रदान करते हैं तथा विभागीय कार्यों की पारदर्शिता और दक्षता को भी सुदृढ़ करते हैं।

ऋण लेखा एवं प्रबंधन विभाग की एक विशेषता उसका समन्वयात्मक स्वरूप है। यह विभाग केवल अपने कार्यों तक सीमित नहीं रहता, बल्कि निगम के अनेक विभागों को आवश्यक वित्तीय सूचनाएँ उपलब्ध कराकर उनके कार्यों को भी सुचारु बनाता है। वित्त एवं लेखा, कराधान, संसाधन जुटाव परियोजना विभाग, जोखिम प्रबंधन, सूचना प्रौद्योगिकी, विधि प्रभाग तथा अन्य प्रशासनिक इकाइयों को समय-समय पर आवश्यक आँकड़े, प्रमाणित विवरण एवं विश्लेषण उपलब्ध कराए जाते हैं। इन सूचनाओं का उपयोग बजट निर्माण, वित्तीय विश्लेषण, नीतिगत निर्णयों, वार्षिक प्रतिवेदन तथा विभिन्न प्रबंधन समितियों के समक्ष प्रस्तुतियों में किया जाता है।

विभाग द्वारा तैयार किए जाने वाले प्रबंधन सूचना प्रतिवेदन वरिष्ठ प्रबंधन के लिए अत्यंत उपयोगी सिद्ध होते हैं। इन प्रतिवेदनों के माध्यम से ऋण पोर्टफोलियो की स्थिति, बकाया राशि, ब्याज प्राप्ति, पुनर्भुगतान की प्रवृत्ति तथा अन्य वित्तीय संकेतकों का विश्लेषण किया जाता है। इससे संस्था की वित्तीय स्थिति का समग्र आकलन संभव होता है तथा भविष्य की



रणनीतियों के निर्माण में सहायता मिलती है। वर्तमान समय में जब निर्णय प्रक्रिया पूर्णतः डेटा आधारित होती जा रही है, तब गुणवत्तापूर्ण एवं समयबद्ध सूचना उपलब्ध कराना विभाग की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी बन गई है।

किसी भी वित्तीय संस्था की पारदर्शिता का वास्तविक परीक्षण उसकी लेखा-परीक्षा प्रक्रियाओं के दौरान होता है। आंतरिक लेखा-परीक्षा, वैधानिक लेखा-परीक्षा तथा नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक द्वारा की जाने वाली परीक्षाओं में ऋण लेखा एवं प्रबंधन विभाग की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रहती है। विभाग द्वारा आवश्यक अभिलेख, ऋण खातों का विवरण, ब्याज गणना से संबंधित सूचनाएँ, समायोजन विवरण एवं अन्य आवश्यक दस्तावेज समय पर उपलब्ध कराए जाते हैं। लेखा-परीक्षकों द्वारा प्राप्त सुझावों एवं टिप्पणियों का गंभीरता से परीक्षण कर आवश्यक सुधारात्मक कार्यवाही भी सुनिश्चित की जाती है। यही प्रक्रिया संस्था की वित्तीय प्रणाली को निरंतर अधिक सुदृढ़ एवं विश्वसनीय बनाती है।

वित्तीय वर्ष 2025-26 के दौरान विभाग ने विभिन्न लेखा-परीक्षाओं के लिए आवश्यक सूचनाएँ समयबद्ध रूप से उपलब्ध कराकर उनकी प्रक्रिया को सफलतापूर्वक संपन्न कराने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। विभिन्न विभागों के साथ समन्वय स्थापित करते हुए आवश्यक दस्तावेजों का संकलन, सत्यापन एवं प्रस्तुतीकरण निर्धारित समय के भीतर सुनिश्चित किया गया। इससे न केवल लेखा-परीक्षा प्रक्रिया सुचारु रही, बल्कि संस्था की वित्तीय विश्वसनीयता भी और अधिक सुदृढ़ हुई।

ऋण लेखा एवं प्रबंधन विभाग का एक अन्य महत्वपूर्ण दायित्व अभिलेखों का व्यवस्थित संरक्षण एवं डेटा की शुद्धता बनाए रखना है। प्रत्येक ऋण खाते से संबंधित दस्तावेजों तथा डिजिटल अभिलेखों का सुव्यवस्थित संधारण किया जाता है, जिससे आवश्यकता पड़ने पर किसी भी प्रकार की सूचना शीघ्रता से उपलब्ध कराई जा सके। यह व्यवस्था न केवल दैनिक कार्यों को सरल बनाती है, बल्कि नियामकीय निरीक्षण एवं विभिन्न विश्लेषणात्मक कार्यों में भी अत्यंत सहायक सिद्ध होती है।

आज तकनीक ने वित्तीय प्रबंधन की कार्यप्रणाली को नई दिशा प्रदान की है। डेटा विश्लेषण, स्वचालित रिपोर्टिंग तथा उन्नत ईआरपी प्रणालियों के माध्यम से कार्य निष्पादन की गुणवत्ता में उल्लेखनीय सुधार हुआ है। भविष्य में कृत्रिम बुद्धिमत्ता, डेटा एनालिटिक्स तथा स्वचालित प्रक्रियाओं का विवेकपूर्ण उपयोग ऋण प्रबंधन को और अधिक प्रभावी बनाएगा। इन तकनीकों के माध्यम से न केवल कार्यकुशलता बढ़ेगी, बल्कि निर्णय प्रक्रिया भी अधिक सटीक, पारदर्शी एवं तथ्यपरक होगी।

ऋण लेखा एवं प्रबंधन विभाग केवल वित्तीय अभिलेखों का संरक्षक नहीं है, बल्कि यह संस्था में वित्तीय अनुशासन, उत्तरदायित्व तथा सुशासन की संस्कृति को भी सुदृढ़ करता है। विभाग द्वारा अपनाई गई पारदर्शी कार्यप्रणाली संस्था के हितधारकों के विश्वास को मजबूत करती है तथा संगठन की साख को निरंतर ऊँचाई प्रदान करती है। यही कारण है कि विभाग की भूमिका केवल एक सहायक इकाई की नहीं, बल्कि संस्था के समग्र वित्तीय प्रबंधन के एक महत्वपूर्ण आधार स्तंभ की है।

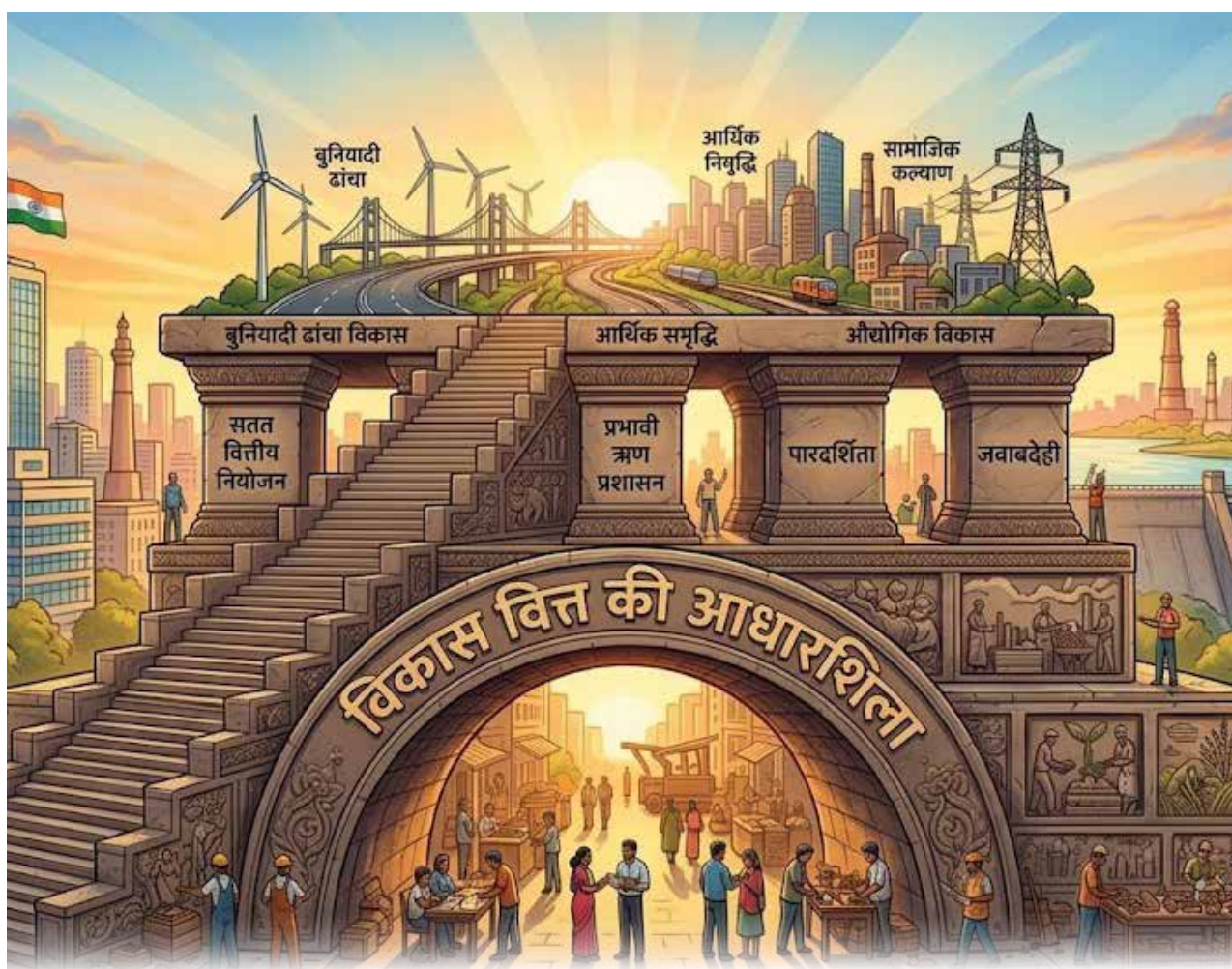
हडको जैसे प्रतिष्ठित विकास वित्तीय संस्थान की सफलता उसके कर्मचारियों की निष्ठा, कार्यकुशलता तथा उत्तरदायित्वपूर्ण कार्यसंस्कृति पर आधारित है। ऋण लेखा एवं प्रबंधन विभाग ने सदैव इन मूल्यों को अपने कार्यों में आत्मसात करते हुए वित्तीय उत्कृष्टता की दिशा में उल्लेखनीय योगदान दिया है। विभाग की सतत प्रतिबद्धता, तकनीकी दक्षता तथा समन्वयात्मक कार्यशैली संस्था की विकास यात्रा को निरंतर गति प्रदान कर रही है।

सुदृढ़ ऋण प्रबंधन केवल वित्तीय अभिलेखों के संधारण तक सीमित नहीं है, बल्कि यह किसी भी विकास वित्तीय संस्था की पारदर्शिता, विश्वसनीयता तथा दीर्घकालिक स्थिरता का मूल आधार है। जब लेखांकन की शुद्धता, तकनीक का प्रभावी



उपयोग, समयबद्ध सूचना प्रणाली और उत्तरदायित्वपूर्ण कार्यसंस्कृति एक साथ कार्य करती हैं, तभी विकास वित्त अपने वास्तविक उद्देश्य को प्राप्त करता है। हडको का ऋण लेखा एवं प्रबंधन विभाग इसी भावना के साथ संस्था के वित्तीय अनुशासन को सुदृढ़ करते हुए राष्ट्र निर्माण की इस सतत यात्रा में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है। यही सुदृढ़ व्यवस्था भविष्य में भी हडको की उत्कृष्ट कार्यसंस्कृति, संस्थागत विकास और भारत के समावेशी एवं टिकाऊ विकास के संकल्प को नई ऊर्जा प्रदान करती रहेगी।

**संजीव कुमार सैनी**  
वरिष्ठ प्रबंधक (वित्त), हडको





## भारतीय स्वाधीनता संग्राम में पूर्वोत्तर की भूमिका

पूर्वोत्तर भारत, जिसे 'सात बहनों का राज्य' और सिक्किम को मिलाकर 'अष्टलक्ष्मी' कहा जाता है, जो अपनी अद्वितीय भौगोलिक स्थिति, समृद्ध जैव विविधता और विविध सांस्कृतिक ताने-बाने के लिए प्रसिद्ध है। दशकों से, पूर्वोत्तर भारत को एक सुदूर सीमांत क्षेत्र के रूप में देखा जाता था, जो संस्कृति में समृद्ध था। वहाँ के क्षेत्रीय लोग जिनमें मिजोरम के जीवंत समुदाय भी सम्मिलित हैं, समृद्ध परंपराओं और सामाजिक सद्भाव के लिए जाने जाते हैं। उन्होंने लंबे समय तक प्रतीक्षा करते हुए विकास की राह देखी। केंद्र सरकार के एक्ट ईस्टव्हिकोण के साथ, पूर्वोत्तर क्षेत्र हाशिये से मुख्यधारा में आ गया है। जिसे कभी एक सुदूर कोने के रूप में देखा जाता था, वह अब भारत की विकास गाथा में अग्रणी भूमिका निभा रहा है। रेलवे, राजमार्गों, हवाई संपर्क और डिजिटल बुनियादी ढांचे में अभूतपूर्व निवेश ने मिजोरम की बांस से ढकी पहाड़ियों से लेकर सिक्किम की चोटियों और असम के चाय बागानों तक आठ राज्यों में विकास को नई गति दी है। आज, यह क्षेत्र न केवल बदला हुआ है, बल्कि बेहतर संपर्क, मजबूत अर्थव्यवस्थाओं और उद्देश्य की एक नई भावना के साथ सशक्त भी है। पूर्वोत्तर भारत की कहानी अब शांति, प्रगति और समृद्धि की है, जो विकसित भारत का सच्चा प्रतीक है।

इस समृद्धि के पीछे पूर्वोत्तर भारत का कुछ इतिहास भी मौजूद है। जिसे हम नकारा नहीं कर सकते। जिस प्रकार आज पूर्वोत्तर भारत हिंदुस्तान की खुबसूरती में अपने बाहें फैलाकर सबका स्वागत करता है। एक समय उसी खुबसूरत भारत को स्वतंत्रता दिलाने में पूर्वोत्तर भारत की अहम भूमिका रही है। जी हाँ, हम इस लेख के माध्यम से उन वीर और वीरांगनाओं की बात करने जा रहे हैं जिनके योगदान के बगैर शायद ही आज हम भारत को स्वतंत्र देख पाते।

कनकलता बरुआ भारत के स्वतंत्रता संग्राम की उन महान नायिकाओं में से एक हैं, जिन्होंने बहुत ही कम उम्र में देश के लिए अपने प्राणों की आहुति दे दी। जब 1942 में महात्मा गांधी जी ने 'अंग्रेजों भारत छोड़ो' का नारा दिया, तो इसकी गूंज असम के गाँवों तक भी पहुँची। इस गूंज के माध्यम से पूरे पूर्वोत्तर भारत में कनकलता बरुआ जी का योगदान अविस्मरणीय रहा। बहुत ही छोटे उम्र में उन्होंने 'मृत्यु वाहिनी' जैसे समूह का नेतृत्व किया। यह एक ऐसा आत्मघाती दस्ता था, जिसका उद्देश्य थानों और सरकारी इमारतों पर तिरंगा फहराना था। कनकलता इस वाहिनी की अग्रणी सदस्य बनीं। 20 सितंबर 1942 को, 'मृत्यु वाहिनी' द्वारा जब गोहपुर के पुलिस थाने पर ब्रिटिश इंडे 'यूनिशन जैक' को हटाकर भारतीय तिरंगा फहराने की योजना बनाई जा रही थी। कनकलता बरुआ ने इस जुलूस का जबरदस्त नेतृत्व किया। इस दौरान कनकलता बरुआ जी की यह पंक्ति अंग्रेजों के समक्ष काफी प्रभाव डाली थी:- "आप अपना कर्तव्य निभाएं, मैं अपना कर्तव्य निभाऊंगी।" उन्हें असम में 'वीरबाला' के नाम से भी जाना जाता है। 1997 में भारतीय तटरक्षक बल ने उनके सम्मान में अपने एक गश्ती जहाज का नाम 'आईसीजीएस कनकलता बरुआ' रखा। असम के गोहपुर में उनकी एक भव्य प्रतिमा स्थापित की गई है, जो आज भी युवाओं को राष्ट्रभक्ति की प्रेरणा देती है। असम की इस बहादुर बेटी का योगदान आज भी भारतीय इतिहास के स्वर्णिम अक्षरों में दर्ज है।



रानी गाइडिनल्यू भारत के पूर्वोत्तर क्षेत्र की एक ऐसी महान क्रांतिकारी थीं, जिन्होंने मात्र 13 वर्ष की आयु में अपने जीवन को त्याग कर ब्रिटिश साम्राज्य को भारत से उखार फेकने के लिए अपना बहुमूल्य योगदान दिया। रानी गाइडिनल्यू का जन्म मणिपुर के तामेंगलॉंग जिले में हुआ था। वह अपने चचेरे भाई हाइपौ जादोनांग द्वारा शुरू किए गए 'हेराका' आंदोलन से जुड़ीं। यह आंदोलन न केवल धार्मिक सुधार के लिए था, बल्कि इसका मुख्य उद्देश्य भारत में "नागा राज" की स्थापना करना और अंग्रेजों को बाहर निकालना था। 1931 में अंग्रेजों द्वारा जादोनांग को फांसी दिए जाने के बाद, मात्र 16 साल की उम्र में ही आंदोलन का नेतृत्व गाइडिनल्यू के हाथों में आ गया। उस समय गाइडिनल्यू ने नागा जनजातियों को संगठित किया और अंग्रेजों के खिलाफ एक सशस्त्र विद्रोह का बिगुल फूँका। उन्होंने अपने अनुयायियों को अंग्रेजों को कर न देने और उनके कानूनों को मानने से इनकार करने के लिए प्रेरित किया। उनकी गुरिल्ला युद्ध रणनीति ने ब्रिटिश प्रशासन की नाक में दम कर दिया था। रानी गाइडिनल्यू से परेशान ब्रिटिश सरकार ने 1932 में एक सैन्य अभियान के दौरान उन्हें गिरफ्तार किया गया। उन पर हत्या और राजद्रोह का मुकदमा चलाया गया और उन्हें आजीवन कारावास की सजा सुनाई गई। 1937 में जब जवाहरलाल नेहरू शिलांग की जेल में उनसे मिले, तो वह उनकी वीरता और कम उम्र से बहुत प्रभावित हुए। नेहरू ने ही उन्हें 'रानी' की उपाधि दी और उन्हें "पहाड़ों की बेटी" कहकर संबोधित किया। रानी गाइडिनल्यू का जीवन इस बात का प्रमाण है कि भारत के सुदूर उत्तर-पूर्वी कोनों में भी राष्ट्रवाद की लौ उतनी ही प्रज्वलित थी जितनी देश के अन्य हिस्सों में।

मणिराम दीवान पूर्वोत्तर भारत के पहले ऐसे स्वतंत्रता सेनानी थे जिन्होंने 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की चिंगारी को असम और उसके आसपास के क्षेत्रों में प्रज्वलित किया। मणिराम दत्ता बरुआ (मणिराम दीवान) शुरू में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के वफादार थे और उन्होंने कंपनी के प्रशासन में एक 'दीवान' के रूप में कार्य किया। वह पहले भारतीय थे जिन्होंने असम में चाय की खेती की व्यावसायिक संभावनाओं को पहचाना और असम में पहले निजी चाय बागानों (चेनीमोर और सिसाहबारी) की स्थापना की। हालांकि, जब अंग्रेजों ने उनके चाय बागानों पर भारी कर लगाया और उनके साथ भेदभाव किया, तो वे अंग्रेजों के कट्टर विरोधी बन गए। जब 1857 का विद्रोह मेरठ और दिल्ली से शुरू हुआ, उस समय मणिराम दीवान कलकत्ता (कोलकाता) में थे। उन्होंने इसे असम को ब्रिटिश शासन से मुक्त कराने के एक अवसर के रूप में देखा। मणिराम दीवान ने असम में विद्रोह की पूरी रूपरेखा तैयार कर ली थी। वे हथियार और गोला-बारूद इकट्ठा करने की योजना बना रहे थे। लेकिन इससे पहले कि विद्रोह बड़े पैमाने पर शुरू हो पाता, उनके द्वारा भेजे गए गुप्त पत्र अंग्रेजों के हाथ लग गए। जिसके उपरांत 26 फरवरी, 1858 को जोरहाट जेल में मणिराम दीवान और उनके साथी पियाली बरुआ को सार्वजनिक रूप से फांसी दे दी गई। मणिराम दीवान का योगदान इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि उन्होंने पूर्वोत्तर भारत को राष्ट्रीय स्तर के स्वतंत्रता संग्राम से जोड़ा। वे केवल एक क्रांतिकारी ही नहीं, बल्कि एक दूरदर्शी आर्थिक सोच रखने वाले व्यक्ति भी थे जिन्होंने असम के संसाधनों पर भारतीयों के अधिकार की बात की थी। असम में उन्हें राष्ट्रवाद का जनक माना जाता है।

यू तिरोत सिंग मेघालय की खासी पहाड़ियों के एक महान स्वतंत्रता सेनानी और कुशल रणनीतिकार के रूप में जाने जाते थे। उन्हें 19वीं शताब्दी के शुरुआती दौर में ब्रिटिश साम्राज्यवाद के विरुद्ध विद्रोह करने वाले सबसे शक्तिशाली जनजातीय नेताओं में से एक माना जाता है। 1820 के दशक के उत्तरार्ध में, अंग्रेजों ने जब ब्रह्मपुत्र घाटी को सूरमा घाटी (वर्तमान बांग्लादेश) से जोड़ने के लिए खासी पहाड़ियों के बीच से एक सड़क बनाने की योजना बनाई। जिसके लिए उस समय के ब्रिटिश राजनीतिक एजेंट डेविड स्कॉट ने तिरोत सिंग से अनुमति मांगी। शुरुआत में तिरोत सिंग सहमत हो गए, लेकिन जल्द ही उन्हें एहसास हुआ कि अंग्रेज इस सड़क का उपयोग केवल व्यापार के लिए नहीं, बल्कि क्षेत्र पर सैन्य कब्जा करने और कर वसूलने के लिए कर रहे हैं। जब अंग्रेजों ने अपनी शर्तों का उल्लंघन किया, तो तिरोत सिंग ने उनके

खिलाफ युद्ध (एंग्लो-खासी युद्ध (1829-1833) की घोषणा कर दी। लगातार संघर्ष और संसाधनों की कमी के बावजूद तिरोत सिंग ने आत्मसमर्पण नहीं किया। हालांकि, एक स्थानीय विश्वासघाती की मदद से अंग्रेजों ने उनके ठिकाने का पता लगा लिया। 13 जनवरी, 1833 को उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। अंग्रेजों ने उन्हें माफी और राज्य वापस देने का लालच दिया, बशर्ते वे ब्रिटिश संप्रभुता स्वीकार कर लें। परंतु तिरोत सिंग का ऐतिहासिक जवाब था "एक गुलाम राजा के रूप में शासन करने से बेहतर है कि मैं एक स्वतंत्र आम आदमी के रूप में मर जाऊं।" उन्हें निर्वासित कर ढाका (बांग्लादेश) भेज दिया गया, जहाँ 17 जुलाई, 1835 को जेल में उनकी मृत्यु हो गई।

लचित बोरफुकन का नाम पूर्वोत्तर भारत के इतिहास में सबसे गर्व के साथ लिया जाता है। यद्यपि वह 19वीं शताब्दी के स्वतंत्रता संग्राम (अंग्रेजों के खिलाफ) का हिस्सा नहीं थे, लेकिन उनका योगदान भारत की अखंडता और संप्रभुता को बचाने के लिए इतना बड़ा है कि उन्हें राष्ट्रीय नायक माना जाता है। उन्होंने 17वीं शताब्दी में मुगल साम्राज्य के विस्तारवादी मंसूबों को पूर्वोत्तर में रोककर भारत की सांस्कृतिक पहचान की रक्षा की थी। लचित बोरफुकन अहोम साम्राज्य (असम) के सेनापति थे। मुगल सम्राट औरंगजेब जब पूरे भारत पर कब्जा करना चाहता था और उसने राम सिंह के नेतृत्व में एक विशाल सेना असम पर अधिकार करने के लिए भेजी थी। लचित ने मैदानी लड़ाई के बजाय ब्रह्मपुत्र नदी में नौसैनिक युद्ध को चुना। उन्होंने सरायघाट (गुवाहाटी) में मुगलों को घेर लिया और उन्हें करारी शिकस्त दी। लचित बोरफुकन की देशभक्ति का सबसे बड़ा उदाहरण तब मिलता है जब उन्होंने अपने सगे मामा को भी नहीं बख्शा। युद्ध की तैयारी के दौरान, उनके मामा को एक सुरक्षा दीवार (मिट्टी का तटबंध) बनाने का काम सौंपा गया था। जब मामा ने काम में ढिलाई बरती, तो लचित ने उनका सिर काट दिया और कहा: "देत केई नोगोय, मामात केई देख डांगोर" अर्थात (मेरा मामा मेरी मातृभूमि से बड़ा नहीं है।) इस अदम्य साहस के साथ लचित बोरफुकन केवल असम के नहीं, बल्कि पूरे भारत के रक्षक थे। उन्होंने सिखाया कि यदि संकल्प दृढ़ हो, तो छोटी सेना भी दुनिया की सबसे बड़ी ताकत को हरा सकती है।

उपरोक्त सभी वीर और वीरंगनाओं की कहानियाँ पूर्वोत्तर भारत के इतिहास में इस बात का प्रमाण हैं कि 'आजादी की लौ' केवल दिल्ली, बंगाल या महाराष्ट्र तक सीमित नहीं थी। सुदूर पहाड़ियों में रहने वाली जनजातियों ने यह सिद्ध किया कि विदेशी शासन के प्रति विरोध की भावना संपूर्ण भारत में एक समान थी। मणिराम दीवान से लेकर कनकलता बरुआ तक, हर बलिदान ने भारतीय राष्ट्रवाद को पूर्णता प्रदान की। आज जब हम स्वतंत्र भारत में पूर्वोत्तर को 'अष्टलक्ष्मी' के रूप में देखते हैं, तो यह उस ऐतिहासिक संघर्ष का ही प्रतिफल है। निष्कर्ष यह है कि पूर्वोत्तर के बिना भारत की स्वतंत्रता का इतिहास अधूरा है। यह क्षेत्र भारत के 'प्रवेश द्वार' के रूप में न केवल सुरक्षा की दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि अपनी वीरगाथाओं से देश को आज भी प्रेरित करता है।

उनकी गुरिल्ला युद्ध रणनीति ने ब्रिटिश प्रशासन की नाक में दम कर दिया था। रानी गाइडिनल्यू से परेशान ब्रिटिश सरकार ने 1932 में एक सैन्य अभियान के दौरान उन्हें गिरफ्तार किया गया। उन पर हत्या और राजद्रोह का मुकदमा चलाया गया और उन्हें आजीवन कारावास की सजा सुनाई गई। 1937 में जब जवाहरलाल नेहरू शिलांग की जेल में उनसे मिले, तो वह उनकी वीरता और कम उम्र से बहुत प्रभावित हुए। नेहरू ने ही उन्हें 'रानी' की उपाधि दी और उन्हें "पहाड़ों की बेटी" कहकर संबोधित किया। रानी गाइडिनल्यू का जीवन इस बात का प्रमाण है कि भारत के सुदूर उत्तर-पूर्वी कोनों में भी राष्ट्रवाद की लौ उतनी ही प्रज्वलित थी जितनी देश के अन्य हिस्सों में।

मणिराम दीवान पूर्वोत्तर भारत के पहले ऐसे स्वतंत्रता सेनानी थे जिन्होंने 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की चिंगारी को असम और उसके आसपास के क्षेत्रों में प्रज्वलित किया। मणिराम दत्ता बरुआ (मणिराम दीवान) शुरू में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के वफादार थे और उन्होंने कंपनी के प्रशासन में एक 'दीवान' के रूप में कार्य किया। वह पहले भारतीय थे जिन्होंने असम में चाय की खेती की व्यावसायिक संभावनाओं को पहचाना और असम में पहले निजी चाय बागानों



(चेनीमोर और सिसाहबारी) की स्थापना की। हालांकि, जब अंग्रेजों ने उनके चाय बागानों पर भारी कर लगाया और उनके साथ भेदभाव किया, तो वे अंग्रेजों के कट्टर विरोधी बन गए। जब 1857 का विद्रोह मेरठ और दिल्ली से शुरू हुआ, उस समय मणिराम दीवान कलकत्ता (कोलकाता) में थे। उन्होंने इसे असम को ब्रिटिश शासन से मुक्त कराने के एक अवसर के रूप में देखा। मणिराम दीवान ने असम में विद्रोह की पूरी रूपरेखा तैयार कर ली थी। वे हथियार और गोला-बारूद इकट्ठा करने की योजना बना रहे थे। लेकिन इससे पहले कि विद्रोह बड़े पैमाने पर शुरू हो पाता, उनके द्वारा भेजे गए गुप्त पत्र अंग्रेजों के हाथ लग गए। जिसके उपरांत 26 फरवरी, 1858 को जोरहाट जेल में मणिराम दीवान और उनके साथी पियाली बरुआ को सार्वजनिक रूप से फांसी दे दी गई। मणिराम दीवान का योगदान इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि उन्होंने पूर्वोत्तर भारत को राष्ट्रीय स्तर के स्वतंत्रता संग्राम से जोड़ा। वे केवल एक क्रांतिकारी ही नहीं, बल्कि एक दूरदर्शी आर्थिक सोच रखने वाले व्यक्ति भी थे जिन्होंने असम के संसाधनों पर भारतीयों के अधिकार की बात की थी। असम में उन्हें राष्ट्रवाद का जनक माना जाता है।

यू तिरोत सिंग मेघालय की खासी पहाड़ियों के एक महान स्वतंत्रता सेनानी और कुशल रणनीतिकार के रूप में जाने जाते थे। उन्हें 19वीं शताब्दी के शुरुआती दौर में ब्रिटिश साम्राज्यवाद के विरुद्ध विद्रोह करने वाले सबसे शक्तिशाली जनजातीय नेताओं में से एक माना जाता है। 1820 के दशक के उत्तरार्ध में, अंग्रेजों ने जब ब्रह्मपुत्र घाटी को सूरमा घाटी (वर्तमान बांग्लादेश) से जोड़ने के लिए खासी पहाड़ियों के बीच से एक सड़क बनाने की योजना बनाई। जिसके लिए उस समय के ब्रिटिश राजनीतिक एजेंट डेविड स्कॉट ने तिरोत सिंग से अनुमति मांगी। शुरुआत में तिरोत सिंग सहमत हो गए, लेकिन जल्द ही उन्हें एहसास हुआ कि अंग्रेज इस सड़क का उपयोग केवल व्यापार के लिए नहीं, बल्कि क्षेत्र पर सैन्य कब्जा करने और कर वसूलने के लिए कर रहे हैं। जब अंग्रेजों ने अपनी शर्तों का उल्लंघन किया, तो तिरोत सिंग ने उनके खिलाफ युद्ध (एंग्लो-खासी युद्ध 1829-1833) की घोषणा कर दी। लगातार संघर्ष और संसाधनों की कमी के बावजूद तिरोत सिंग ने आत्मसमर्पण नहीं किया। हालांकि, एक स्थानीय विश्वासघाती की मदद से अंग्रेजों ने उनके ठिकाने का पता लगा लिया। 13 जनवरी, 1833 को उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। अंग्रेजों ने उन्हें माफी और राज्य वापस देने का लालच दिया, बशर्ते वे ब्रिटिश संप्रभुता स्वीकार कर लें। परंतु तिरोत सिंग का ऐतिहासिक जवाब था: "एक गुलाम राजा के रूप में शासन करने से बेहतर है कि मैं एक स्वतंत्र आम आदमी के रूप में मर जाऊं।" उन्हें निर्वासित कर ढाका (बांग्लादेश) भेज दिया गया, जहाँ 17 जुलाई, 1835 को जेल में उनकी मृत्यु हो गई।

उपरोक्त सभी वीर और वीरांगनाओं की कहानियाँ पूर्वोत्तर भारत के इतिहास में इस बात का प्रमाण है कि 'आजादी की लौ' केवल दिल्ली, बंगाल या महाराष्ट्र तक सीमित नहीं थी। सुदूर पहाड़ियों में रहने वाली जनजातियों ने यह सिद्ध किया कि विदेशी शासन के प्रति विरोध की भावना संपूर्ण भारत में एक समान थी। मणिराम दीवान से लेकर कनकलता बरुआ तक, हर बलिदान ने भारतीय राष्ट्रवाद को पूर्णता प्रदान की। आज जब हम स्वतंत्र भारत में पूर्वोत्तर को 'अष्टलक्ष्मी' के रूप में

देखते हैं, तो यह उस ऐतिहासिक संघर्ष का ही प्रतिफल है। निष्कर्ष यह है कि पूर्वोत्तर के बिना भारत की स्वतंत्रता का इतिहास अधूरा है। यह क्षेत्र भारत के 'प्रवेश द्वार' के रूप में न केवल सुरक्षा की दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि अपनी वीरगाथाओं से देश को आज भी प्रेरित करता है।

**विकास भक्त**  
हिंदी अधिकारी  
आरईसी लि., गुरुग्राम





## कृत्रिम बुद्धिमत्ता और रोजगार का भविष्य

### एक विस्तृत और गहरा विश्लेषण

आज के दौर में अगर आप किसी भी चौराहे, दफ्तर की कैटीन, कॉलेज के कैंपस या सोशल मीडिया पर हो रही बहसों को ध्यान से सुनें, तो एक विषय हर जगह छाया हुआ है—आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस या कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई)। यह कोई साइंस फिक्शन फिल्म की कहानी नहीं रह गई है, बल्कि हमारे बेडरूम से लेकर बोर्डरूम तक पहुंच चुकी है।

हम रोज खबरें पढ़ते हैं कि फ्लां कंपनी ने एआई की वजह से 10,000 कर्मचारियों को निकाल दिया, या फ्लां एआई टूल ने मेडिकल की सबसे कठिन परीक्षा पास कर ली। इन खबरों ने आम आदमी की रातों की नींद उड़ा दी है। हर किसी के मन में एक ही सवाल हथौड़े की तरह बज रहा है—“क्या मेरी नौकरी सुरक्षित है? क्या मशीनें इंसानों को पूरी तरह से बेकार कर देंगी?”

### 1. इतिहास का आईना: जब-जब तकनीक आई, तब-तब क्या हुआ?

यह पहली बार नहीं है जब इंसान किसी नई तकनीक से डर रहा है और फिर उन पर जीत हासिल करने की कहानियों से भरा पड़ा है।

**पहला औद्योगिक युग:** 18वीं और 19वीं सदी की बात है। जब पहली बार भाप का इंजन बना और कपड़े बुनने की मशीनें कारखानों में आईं, तो हाथ से कपड़ा बुनने वाले कारीगरों में दहशत फैल गई। इंग्लैंड में ‘लुडाइट’ नाम का एक आंदोलन चला। बेरोजगार हो रहे मजदूरों ने गुस्से में आकर कारखानों में घुसकर मशीनें तोड़ दीं। उन्हें लगा कि ये मशीनें इंसानियत को भूखा मार देंगी। लेकिन हुआ क्या? मशीनों से कपड़े सस्ते बनने लगे, मांग बढ़ी, और उन कारखानों को चलाने, मशीनों को बनाने, उनका कच्चा माल ढोने और कपड़े बेचने के लिए पहले से दस गुना ज्यादा लोगों को रोजगार मिला।

**कंप्यूटर और आईटी क्रांति:** यह तो हमारे और आपके माता-पिता के दौर की बात है। 1980 और 90 के दशक में जब भारत के बैंकों और सरकारी दफ्तरों में कंप्यूटर आना शुरू हुए, तो देश भर में हड़तालें हुईं। यूनियन के नेताओं ने कहा, “एक कंप्यूटर दस क्लर्कों का काम कर लेगा, तो नौ लोग क्या करेंगे? हम कंप्यूटर नहीं आने देंगे।” लेकिन आज पलटकर देखिए। क्या कंप्यूटर ने नौकरियां खत्म कीं? नहीं! उसी कंप्यूटर ने भारत में एक पूरी आई. टी. इंडस्ट्री खड़ी कर दी। आज टीसीएस, इंफोसिस, विप्रो जैसी कंपनियों में लाखों भारतीय युवा काम कर रहे हैं। कंप्यूटर ने हमें डेटा एंट्री ऑपरेटर, सॉफ्टवेयर डेवलपर, वेब डिजाइनर, और डिजिटल मार्केटर जैसी ऐसी नौकरियां दीं, जिनके बारे में किसी ने सपने में भी नहीं सोचा था।



इतिहास हमें यह सिखाता है कि तकनीक नौकरियां खत्म नहीं करती, बल्कि तकनीक काम करने का तरीका बदल देती है। वह पुरानी नौकरियों को खत्म करके नए तरह के रोजगार पैदा करती है।

## 2. लेकिन एआई पिछली तकनीकों से अलग कैसे है ?

अगर इतिहास हमेशा तकनीक के पक्ष में रहा है, तो फिर एआई से इतना डर क्यों है? इस डर का एक बहुत बड़ा और वाजिब कारण है।

अब तक इंसान ने जितनी भी मशीनें बनाई—चाहे वह सिलाई मशीन हो, कार हो, या कंप्यूटर हो—वे सभी "मांसपेशियों" की जगह लेने के लिए थीं। कंप्यूटर भी बिना हमारे कमांड के खुद से कुछ नहीं सोच सकता। वह सिर्फ हमारे दिए गए निर्देशों का बहुत तेजी से पालन करता है।

लेकिन एआई पहली ऐसी तकनीक है जो हमारी "बुद्धि" की जगह लेने की कोशिश कर रही है। एआई सिर्फ निर्देशों का पालन नहीं करता, बल्कि वह पुराने डेटा से सीखता है, अपना दिमाग लगाता है, गलतियों से सबक लेता है और खुद फैसले ले सकता है।

- चैटजीपीटी आपके लिए एक पूरी किताब लिख सकता है।
- मिडजर्नी आपके एक इशारे पर ऐसी पेंटिंग बना सकता है जिसे बनाने में किसी महान चित्रकार को महीनों लग जाते।
- एआई टूल बीमारियों के लक्षण देखकर डॉक्टरों से ज्यादा सटीक अनुमान लगा रहे हैं।

यही वह बात है जो लोगों को डरा रही है कि अगर मशीनें सोचना और रचनात्मक काम करना भी सीख गईं, तो फिर इंसान क्या करेगा?

## 3. किन नौकरियों पर लटक रही है खतरे की तलवार ?

सच्चाई से मुंह चुराने का कोई फायदा नहीं है। कुछ नौकरियां ऐसी हैं जिन्हें एआई बहुत जल्द निगल जाएगा, या कम से कम उन्हें करने के लिए बहुत कम लोगों की जरूरत बचेगी, डेटा एंट्री और क्लर्क का काम। जो काम पूरी तरह से दोहराए जाने वाले हैं, जहां आपको सिर्फ एक जगह से डेटा उठाकर दूसरी जगह डालना है, फाइलों को छांटना है या बेसिक हिसाब-किताब रखना है—वे काम सबसे पहले खतरे में हैं। एआई यह काम बिना थके, बिना गलती किए और 24 घंटे कर सकता है। भाषाओं के बीच अनुवाद करने वाले लोगों का काम काफी कम हो जाएगा। एआई अब किसी भी वीडियो या ऑडियो को सुनकर उसका सटीक ट्रांसलेशन सेकंडों में बना सकता है। वह भी उस भाषा के मुहावरों और भावनाओं को समझते हुए। बेसिक कंटेंट राइटिंग और कॉपीराइटिंग: वे वेबसाइट्स जो सिर्फ सर्च इंजन ऑप्टिमाइजेशन के लिए साधारण आर्टिकल लिखवाती थीं, या वे लोग जो प्रोडक्ट के छोटे-छोटे डिस्क्रिप्शन लिखते थे, उनका काम अब चैटजीपीटी मुफ्त में कर रहा है। हालांकि, अच्छी और गहराई वाली पत्रकारिता या बहुत ही रचनात्मक लेखन अभी भी इंसानों के पास रहेगा, लेकिन साधारण लिखने वालों को अपनी नौकरी बचानी मुश्किल होगी।

## 4. भविष्य का रोजगार: नई दुनिया, नई नौकरियां

हर विनाश के साथ एक नया निर्माण होता है। एआई सिर्फ पुरानी नौकरियां ही नहीं खा रहा, वह ऐसी नई नौकरियां



पैदा कर रहा है जिनके बारे में हमने कभी सोचा भी नहीं था। वर्ल्ड इकोनॉमिक फोरम की माने तो आने वाले समय में लाखों नई जॉब्स सिर्फ एआई के कारण पैदा होंगी।

- क) प्रॉम्प्ट इंजीनियर : एआई एक जिन्न की तरह है, जिसे अगर सही हुक्म न दिया जाए तो वह कुछ भी कूड़ा निकालकर दे देगा। एआई से अपनी मनचाही चीज निकलवाने के लिए जो सटीक निर्देश लिखे जाते हैं, उसे प्रॉम्प्ट इंजीनियरिंग कहते हैं। आने वाले समय में हर कंपनी को ऐसे लोगों की जरूरत होगी जो एआई टूल से बात करना और उससे बेहतरीन काम निकलवाना जानते हों।
- ख) एआई एथिसिस्ट: मान लीजिए एक ड्राइवरलेस कार के सामने अचानक एक बच्चा आ जाता है और दूसरी तरफ एक बुजुर्ग। कार किसे बचाएगी? एआई का इस्तेमाल करते समय नैतिकता का ध्यान रखना बहुत जरूरी है। एआई किसी जाति, धर्म या रंग के आधार पर भेदभाव न करे, यह सुनिश्चित करने के लिए एआई एथिसिस्ट और ऑडिटर्स की पूरी एक नई फौज तैयार होगी।
- ग) डेटा ट्रेनर और डेटा क्लीनर एआई कोई जादू नहीं है, वह डेटा से सीखता है। चैटजीपीटी को समझदार बनाने के लिए हजारों इंसानों ने दिन-रात उसे सही और गलत का फर्क सिखाया है। भविष्य में एआई को अलग-अलग भाषाओं, बोलियों और स्थानीय चीजों की ट्रेनिंग देने के लिए करोड़ों इंसानों की जरूरत पड़ेगी।

यह एक बहुत बड़ा चक्रव्यूह है, जिसका समाधान निकालने के लिए दुनिया के बड़े-बड़े अर्थशास्त्री और वैज्ञानिक अभी से मंथन कर रहे हैं। इसके कुछ संभावित समाधान या परिणाम ये हो सकते हैं:

यूनिवर्सल बेसिक इनकम : यह कॉन्सेप्ट अभी से बहुत मशहूर हो रहा है। अगर मशीनें इंसानों का काम कर रही हैं, तो मशीनों से जो बेहिसाब मुनाफा होगा, उस पर सरकारें भारी टैक्स लगाएंगी। उस टैक्स के पैसे से देश के हर नागरिक को, चाहे वह काम करे या न करे, हर महीने जीने के लिए एक निश्चित रकम दी जाएगी। ताकि कोई भी इंसान भूखा न मरे और अर्थव्यवस्था का चक्र चलता रहे। जब एआई की मदद से हमारा काम तेजी से होने लगेगा, तो शायद भविष्य में लोगों को हफ्ते में 5 या 6 दिन काम करने की जरूरत ही न पड़े। लोग हफ्ते में सिर्फ 3 दिन काम करेंगे और बाकी का समय अपने परिवार, शौक (हॉबी), कला, और खेल-कूद में बिताएंगे। यह इंसानों के लिए एक बहुत खूबसूरत दुनिया हो सकती है, जहां काम का तनाव कम होगा।

अमीरी और गरीबी की गहरी खाई: इसका एक डरावना पहलू यह भी है कि जो लोग या कंपनियां एआई को कंट्रोल करेंगी, वे बेहिसाब अमीर हो जाएंगी और आम मजदूर बहुत गरीब हो जाएंगे। सरकारों को इसे रोकने के लिए बहुत कड़े नियम बनाने होंगे ताकि एआई का फायदा मुट्ठी भर लोगों तक सीमित न रहे।

## 5. हम खुद को कैसे तैयार करें ?

भविष्य चाहे जो भी हो, आज हमें हाथ पर हाथ रखकर नहीं बैठना है। डार्विन का सिद्धांत कहता है कि "जीवों में न तो सबसे ताकतवर जिंदा बचता है और न ही सबसे बुद्धिमान, बल्कि वही बचता है जो बदलाव के हिसाब से खुद को सबसे जल्दी ढाल लेता है।"



अगर आप एक छात्र हैं, युवा पेशेवर हैं, या अपने करियर के बीच में हैं, तो आपको एआई के युग में सर्वाइव करने के लिए ये कदम उठाने होंगे:

- क. अपने दुश्मन को अपना हथियार बनाएं:** एआई से डरना बंद करें और उसे सीखना शुरू करें। आज ही चैटजीपीटी, जेमिनी या क्लाउड जैसे टूल्स का इस्तेमाल अपनी रोजमर्रा की जिंदगी में शुरू करें। अगर आप ईमेल लिखते हैं, तो एआई से ड्राफ्ट करवाएं। अगर आप कोड लिखते हैं, तो एआई की मदद से अपनी स्पीड बढ़ाएं। याद रखिए: एआई आपको रिप्लेस नहीं करेगा, बल्कि एआई का इस्तेमाल करने वाला एक दूसरा इंसान आपको रिप्लेस करेगा।
- ख. अपनी 'सॉफ्ट स्किल्स' को मजबूत करें:** मशीनें 'हार्ड स्किल्स' में बहुत अच्छी हैं (जैसे गणित, कोडिंग, डेटा)। लेकिन मशीनें 'सॉफ्ट स्किल्स' में जीरो हैं। इसलिए आप लोगों से बातचीत करने का तरीका, टीम वर्क, क्रिटिकल थिंकिंग, और प्रॉब्लम सॉल्विंग जैसी कलाओं को निखारें। यही आपको मशीनों से अलग बनाएगा।

## 6. शिक्षा व्यवस्था को बदलना होगा

यह पूरी जिम्मेदारी सिर्फ इंसान पर नहीं छोड़ी जा सकती। हमारे स्कूलों और कॉलेजों को भी अपनी नींद से जागना होगा। आज हम बच्चों को स्कूल में क्या सिखा रहे हैं? हम उन्हें जानकारी याद करना (रट्टा मारना) और परीक्षा की कॉपी में उसे हूबहू उगल देना सिखा रहे हैं। यही काम तो एआई एक सेकंड के हजारवें हिस्से में कर लेता है! अगर हम अपने बच्चों को रोबोट की तरह काम करना सिखाएंगे, तो भविष्य में असली रोबोट उन्हें पछाड़ ही देंगे। हमारी शिक्षा व्यवस्था में आमूल-चूल बदलाव की जरूरत है:

- बच्चों को कोडिंग के साथ-साथ दर्शनशास्त्र और कला भी सिखानी चाहिए।
- उन्हें सिखाया जाना चाहिए कि सही सवाल कैसे पूछते हैं। क्योंकि भविष्य में जवाब देना एआई का काम होगा, लेकिन सही 'सवाल' पूछना इंसान का काम होगा।
- असफलता से निपटना और मानसिक रूप से मजबूत बनना स्कूल के सिलेबस का हिस्सा होना चाहिए।

## निष्कर्ष: एक नई सुबह की ओर

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) कोई आसमानी आफत नहीं है, बल्कि इंसानी दिमाग की ही सबसे शानदार उपज है। यह एक ऐसा टूल है जिसे हमने अपनी मदद के लिए बनाया है।

हर बड़े बदलाव के दौरान एक उथल-पुथल होती है। जब घोड़े-तांगे की जगह कारें आईं, तो तांगे वालों को बहुत तकलीफ हुई थी। लेकिन अंत में कारों ने दुनिया को एक दूसरे से जोड़ा। एआई के आने से भी शुरुआती दौर में कुछ दर्द होगा, कुछ नौकरियां जाएंगी, कुछ लोगों को अपनी लाइन बदलनी पड़ेगी।

लेकिन अगर हम एक बड़े नजरिए से देखें, तो एआई हमारे लिए एक वरदान साबित हो सकता है। यह हमें उन उबाऊ, थका देने वाले और खतरनाक कामों से मुक्त कर सकता है जिन्हें इंसान कभी करना ही नहीं चाहता था। यह हमें कैसर जैसी बीमारियों का इलाज ढूंढने में मदद कर सकता है, यह दुनिया से गरीबी दूर करने के नए आर्थिक मॉडल बनाने में मदद कर सकता है।



अंत में, रोजगार का भविष्य मशीनों के हाथ में नहीं है, बल्कि इस बात पर निर्भर करता है कि हम इंसान उन मशीनों का इस्तेमाल कैसे करते हैं। हमें एआई के साथ रेस नहीं लगानी है, क्योंकि दौड़ में मशीनें हमसे तेज ही भागेंगी। हमें एआई के साथ मिलकर काम करना है। हमें एआई को अपने हाथ और पैर बनाने हैं, और खुद उसका दिमाग और दिल बने रहना है।

अगर हम अपनी इंसानियत, अपनी रचनात्मकता और अपने एक-दूसरे के प्रति प्रेम और सहानुभूति को बचाए रख सके, तो कृत्रिम बुद्धिमत्ता के इस नए युग में भी इंसान ही इस पृथ्वी का राजा बना रहेगा, और रोजगार का रूप पहले से कहीं ज्यादा सुंदर और सुकून भरा होगा। भविष्य अंधेरा नहीं है, बल्कि उन लोगों के लिए बहुत ही सुनहरा है जो समय के साथ खुद को बदलने का साहस रखते हैं।

**दीपक**

इंजीनियर (आईटी), हुडको





## उन्नत तकनीकी युग में हिंदी: प्रशासन से जनसंपर्क तक

“भाषा केवल अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं, बल्कि विश्वास का आधार होती है और जब तकनीक विश्वास की भाषा बोलने लगे, तभी उसका वास्तविक लोकतंत्रीकरण होता है।”

इक्कीसवीं सदी का तीसरा दशक कृत्रिम बुद्धिमत्ता के अभूतपूर्व विस्तार का साक्षी है। आज कृत्रिम मेधा केवल तकनीकी प्रयोगशाला तक ही सीमित नहीं है, बल्कि प्रशासन, शिक्षा, स्वास्थ्य, बैंकिंग, आवास, वित्त, न्याय, परिवहन, शोध, वांतरिक्ष और जनसेवाओं के प्रत्येक क्षेत्र में अपनी उपयोगिता सिद्ध कर रही है। इस परिवर्तन ने कार्य करने की गति, निर्णय लेने की क्षमता और सेवाओं की गुणवत्ता में उल्लेखनीय सुधार किया है किंतु तकनीक की सफलता का वास्तविक मापदंड केवल उसकी क्षमता नहीं, बल्कि उसकी जनसुलभता है। भारत जैसे देश में यह जनसुलभता तभी संभव है, जब कृत्रिम बुद्धिमत्ता भारतीय भाषाओं, विशेषकर हिंदी के साथ समन्वित होकर कार्य करे।

संविधान के भाग 17, अनुच्छेद 343 'क' के आधार पर हिंदी भारत की राजभाषा है, साथ ही साथ करोड़ों नागरिकों के दैनिक जीवन की भाषा भी है। प्रशासन और नागरिकों के मध्य प्रभावी संवाद स्थापित करने में इसकी भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। जब सरकारी सेवाएँ, डिजिटल पोर्टल, मोबाइल अनुप्रयोग और कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित संवाद प्रणालियाँ हिंदी में उपलब्ध होती हैं, तब शासन अधिक पारदर्शी, उत्तरदायी और सहभागी बनता है। यही कारण है कि आज हिंदी केवल कार्यालयी भाषा नहीं, बल्कि सुशासन का प्रभावी माध्यम बनकर उभर रही है।

लोगों, संसाधनों और कार्यों का नियमानुसार संचालन एवं प्रबंधन ही प्रशासन कहलाता है जिसमें नीतियों का क्रियान्वयन, कार्यालयी कार्यों का निष्पादन, योजनाओं का संचालन अभिलेख एवं दस्तावेज प्रबंधन, नागरिकों को सेवाएँ प्रदान करना, निर्णय लेना एवं उनका पालन करना शामिल है और कृत्रिम मेधा ने इन कार्यप्रणालियों को नई गति प्रदान की है जिसमें हिंदी अपना सर्वोपरि भूमिका निभा रही है।



आज अभिलेखों का डिजिटलीकरण, त्वरित अनुवाद, वाक्य-पहचान, चैटबॉट, डेटा विश्लेषण तथा निर्णय सहायक प्रणालियों में हिंदी की उपयोगिता बढ़ी है और प्रशासन से लेकर नागरिकों तक सभी अधिक से अधिक हिंदी का उपयोग कर रहे हैं और हिंद केवल संवैधानिक व्यवस्था का प्रतीक नहीं, बल्कि प्रशासन और जनता के बीच प्रभावी संवाद का सशक्त माध्यम है। संविधान के अनुच्छेद 343 के अनुसार संघ की राजभाषा हिंदी आदेश, योजनाएँ, पत्राचार, सूचनाएँ, टिप्पण और आलेखन एवं समग्र को पूर्णतः हिंदी में करने की स्वतंत्रता देती है जिससे आम आदमी इसे आसानी से समझ सकते हैं और शासन से उनका जुड़ाव सुदृढ़ होता है।

वर्तमान डिजिटल युग में ई-ऑफिस, ई-गवर्नेंस, कृत्रिम मेधा तथा डिजिटल संरचना के माध्यम से हिंदी प्रशासन की कार्यकुशलता और जनसंपर्क दोनों को सशक्त बना रही है। राजभाषा के रूप में हिंदी जनसंपर्क के क्षेत्र में हिंदी और कृत्रिम मेधा का समन्वय नई संभावनाओं का द्वार खोल रहा है। कृत्रिम मेधा तकनीकी को गति देती है और हिंदी उसे समाज से जोड़ती है; तब कृत्रिम मेधा और हिंदी की गति तथा संवेदना का संगम होता है। तभी शासन का वास्तविक स्वरूप साकार होता है।

हडको जैसे सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम, जो देश के आवास एवं शहरी अवसंरचना विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, उनके लिए भी कृत्रिम मेधा और हिंदी का समन्वय विशेष महत्व रखता है। परियोजना संबंधी जानकारी, जनकल्याणकारी योजनाएँ, प्रशिक्षण सामग्री, तकनीकी मार्गदर्शिकाएँ, डिजिटल सेवाएँ तथा नागरिक संवाद यदि हिंदी में कृत्रिम मेधा की सहायता से अधिक प्रभावी बनाए जाएँ, तो संस्था की पहुँच और प्रभाव दोनों में वृद्धि होगी। इससे प्रशासनिक कार्यों की दक्षता बढ़ेगी तथा जनसंपर्क और अधिक सुदृढ़ होगा।

जैसा कि कृत्रिम मेधा की उपयोगिता वैश्विक स्तर पर कीर्तिमान हासिल कर रही है। पर इसके बढ़ते उपयोग के साथ इसकी सहजता और अनुवाद कार्य में कुछ चुनौतियाँ भी सामने आती हैं। मशीन आधारित अनुवाद में संदर्भगत शुद्धता, तकनीकी शब्दावली की एकरूपता, भाषायी संवेदनशीलता तथा सांस्कृतिक अभिव्यक्ति जैसे विषय निरंतर मानवीय मार्गदर्शन की अपेक्षा रखते हैं। इसलिए इसे मानव बुद्धि का विकल्प नहीं, बल्कि सहयोगी के रूप में विकसित करना आवश्यक है। हिंदी के समृद्ध साहित्य, प्रशासनिक शब्दावली तथा भाषायी विविधता को इसकी प्रणाली में समुचित स्थान देना समय की माँग है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति, डिजिटल इंडिया, ई-गवर्नेंस तथा आत्मनिर्भर भारत जैसे राष्ट्रीय अभियानों ने भारतीय भाषाओं में डिजिटल सशक्तिकरण को नई दिशा प्रदान की है। आज आवश्यकता इस बात की है कि तकनीकी नवाचार और भाषायी समावेश साथ-साथ आगे बढ़ें। जब कृत्रिम मेधा हिंदी को समझेगा, सीखेगा और उसी सहजता से संवाद करेगा, तब डिजिटल भारत का सपना और अधिक व्यापक तथा समावेशी होगा।

आज अनेकों ऐसे कृत्रिम मेधा सॉफ्टवेयर उपलब्ध हैं जिसने इक्कीसवीं सदी के तीसरे दशक में क्रांति पैदा कर दी है। आज नवाचार का कोई भी ऐसा कोना नहीं है, जो इनसे अनभिज्ञ है। कुछ कृत्रिम मेधा सॉफ्टवेयर इस प्रकार हैं- **सामान्य एआई सहायक**- चैटजीपीटी, गूगल जेमिनी, माइक्रोसॉफ्ट कोपायलट, क्लॉड, परप्लेक्सिटी एआई, ग्रेक। **लेखन एवं भाषा संबंधी उपकरण**- क्लिबॉट, डीपएल, ग्रामरली, लैंग्वेजटूल। **चित्र बनाने वाले उपकरण**- मिडजर्नी, एडोबी फायरफ्लाई, आइडियोग्राम, कैनवा एआई। वीडियो बनाने वाले उपकरण- रनवे, पिका, सिंथेसिया, हेजेन। **प्रस्तुति बनाने वाले उपकरण**- गामा, ब्यूटीफुल एआई, टोम। **प्रोग्रामिंग के उपकरण**- गिटहब कोपायलट, कर्सर एआई, रेप्लिट एआई। **आवाज एवं ऑडियो संबंधी उपकरण**- इलेवनलैब्स, मर्फ एआई, ऑटर एआई। **शोध एवं अध्ययन संबंधी उपकरण**- नोटबुकएलएम, एलिसिट, कंसेंसस। आज अनेकों ऐसे कृत्रिम मेधा सॉफ्टवेयर उपलब्ध हैं जिसने इक्कीसवीं



सदी के तीसरे दशक में क्रांति पैदा कर दी है। आज नवाचार का कोई भी ऐसा कोना नहीं है, जो इनसे अनभिज्ञ है। कुछ कृत्रिम मेधा सॉफ्टवेयर इस प्रकार हैं- **सामान्य एआई सहायक**- चैटजीपीटी, गूगल जेमिनी, माइक्रोसॉफ्ट कोपायलट, क्लॉड, परप्लेक्सिटी एआई, ग्रीक। **लेखन एवं भाषा संबंधी उपकरण**- क्लिलबॉट, डीपएल, ग्रामरली, लैंग्वेजटूल। **चित्र बनाने वाले उपकरण**- चित्र बनाने वाले उपकरण- मिडजर्नी, एडोबी फायरफ्लाई, आइडियोग्राम, कैनवा एआई। **वीडियो बनाने वाले उपकरण**- रनवे, पिका, सिंथेसिया, हेजेन। **प्रस्तुति बनाने वाले उपकरण**- गामा, ब्यूटीफुल एआई, टोम। **प्रोग्रामिंग के उपकरण**- गिटहब कोपायलट, कर्सर एआई, रेप्लिट एआई। **आवाज एवं ऑडियो संबंधी उपकरण**- इलेवनलैब्स, मर्फ एआई, ऑटर एआई। **शोध एवं अध्ययन संबंधी उपकरण**- नोटबुकएलएम, एलिसिट, कंसेंसस।

प्रशासन या व्यवस्था का समाज से जुड़ाव अतीत से ही रहा है। हर तरह के गतिविधियों में समाज प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में विद्यमान रहा है। आज के दौर में जितने भी प्रकार के कृत्रिम मेधा सॉफ्टवेयर हैं, वे सभी इसी कड़ी में आगे बढ़ रहे हैं। सरकारी संस्थान और सार्वजनिक उपक्रम अब हिंदी में चैटबॉट, सोशल मीडिया संदेश, वेबसाइट, मोबाइल ऐप, डिजिटल हेल्पडेस्क तथा ग्राहक सहायता सेवाएँ उपलब्ध करा रहे हैं। नागरिक अपनी भाषा में जानकारी प्राप्त कर रहे हैं, शिकायत दर्ज करा रहे हैं और योजनाओं से जुड़ी जानकारी आसानी से समझ पा रहे हैं। इससे प्रशासन और जनता के बीच संवाद अधिक सहज, पारदर्शी और विश्वासपूर्ण बन रहा है।



वास्तव में कृत्रिम मेधा और हिंदी का समन्वय तकनीक तथा मानवीय संवेदना का संगम है। कृत्रिम मेधा जहाँ कार्यों को गति देता है, वहीं हिंदी उन कार्यों को जन-जन तक पहुँचाने का माध्यम बनती है। यही कारण है कि आज हिंदी प्रशासन और जनसंपर्क के बीच एक सशक्त सेतु के रूप में उभर रही है। भविष्य में भारतीय भाषाओं के लिए विकसित हो रहे कृत्रिम मेधा मॉडल हिंदी को वैश्विक डिजिटल मंच पर और अधिक प्रतिष्ठा दिलाएँगे तथा भारत को समावेशी, पारदर्शी और ज्ञान-आधारित समाज की दिशा में आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएँगे। अतः कई ऐसे मामले दिखते हैं, जिससे यह प्रतीत होता है कि कृत्रिम मेधा समाज में कैसे अपनी पहचान बना रही है, इसे कुछ उदाहरण के माध्यम से देख सकते हैं-

- **कार्यालयी कार्य:** कृत्रिम मेधा की सहायता से हिंदी अनुवाद, नोटशीट, कार्यवृत्त, भाषण, रिपोर्ट और पत्राचार तैयार करने का कार्य अधिक तेज और सरल हो गया है, जिससे प्रशासनिक कार्य में समय की बचत और शुद्धता एवं तत्परता बढ़ रही है।
- **ई-गवर्नेंस:** अनेक सरकारी वेबसाइटों और पोर्टलों पर हिंदी जानकारी, आवेदन और सेवाएँ उपलब्ध हैं। कृत्रिम मेधा प्रणालियाँ नागरिकों को उनकी भाषा में सहायता प्रदान करने की दिशा में विकसित हो रही हैं।



- **यूट्यूब और ऑनलाइन शिक्षा:** कृत्रिम मेधा की सहायता से हिंदी में वीडियो के उपशीर्षक, स्वचालित प्रतिलेख तथा अनुवाद उपलब्ध कराए जा रहे हैं, जिससे ज्ञान अधिक लोगों तक पहुँच रहा है। शिक्षा का सरलीकरण हो गया है। कृत्रिम मेधा की सहायता से शिक्षा जन-जन तक पहुँच रहा है, और जनसंपर्क इससे लाभांशित हो रहे हैं।
- **डिजिटल भुगतान:** यूपीआई आधारित डिजिटल भुगतान ऐप्स में हिंदी इंटरफेस उपलब्ध होने से ग्रामीण और हिंदीभाषी क्षेत्रों में करोड़ों लोग अपनी भाषा में सुरक्षित डिजिटल लेन-देन कर रहे हैं।



यद्यपि कृत्रिम मेधा ने हिंदी के प्रयोग और प्रसार को अभूतपूर्व गति प्रदान की है, फिर भी इसके समक्ष अनेक चुनौतियाँ विद्यमान हैं। कृत्रिम मेधा द्वारा तैयार की गई हिंदी कई बार व्याकरण, वर्तनी तथा संदर्भ की दृष्टि से पूर्णतः शुद्ध नहीं होती, जिसके कारण विशेष रूप से प्रशासनिक एवं विधिक दस्तावेजों में मानवीय समीक्षा आवश्यक हो जाती है। इसके अतिरिक्त, अनेक कृत्रिम मेधा प्रणालियाँ भारत सरकार की मानकीकृत राजभाषा शब्दावली के स्थान पर अंग्रेजी-मिश्रित या गैर-मानक शब्दों का प्रयोग करती हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में डिजिटल साक्षरता और इंटरनेट की सीमित उपलब्धता भी हिंदी आधारित कृत्रिम मेधा सेवाओं के व्यापक उपयोग में बाधा उत्पन्न करती है। डेटा गोपनीयता, साइबर सुरक्षा तथा एआई द्वारा उत्पन्न भ्रामक या तथ्यहीन सामग्री जैसी चुनौतियाँ भी गंभीर हैं। इसलिए आवश्यक है कि कृत्रिम मेधा को मानव विशेषज्ञता का विकल्प नहीं, बल्कि सहयोगी उपकरण के रूप में विकसित किया जाए, ताकि भाषा का शुद्ध, प्रभावी और विश्वसनीय प्रयोग सुनिश्चित हो सके और प्रशासन एवं जनसंपर्क के बीच तारतम्यता स्थापित हो सके।

मानव सभ्यता का इतिहास यह प्रमाणित करता है कि तकनीक तभी स्थायी और सार्थक बनती है, जब वह मानवीय मूल्यों, संस्कृति और भाषा से साथ समन्वय स्थापित करे। कृत्रिम मेधा ने कार्य करने की गति, दक्षता और नवाचार को अभूतपूर्व आयाम दिए हैं, वहीं हिंदी ने इस तकनीकी क्रांति को जनमानस की भाषा बनाकर उसे सामाजित स्वीकार्यता प्रदान की है। आज हिंदी केवल प्रशासन की राजभाषा नहीं, बल्कि डिजिटल शासन, ज्ञान-वितरण और जनसंपर्क की सशक्त आधारशिला बन चुकी है। आवश्यकता इस बात की है कि कृत्रिम मेधा का विकास भारतीय भाषाओं की भाषिक गरिमा, सांस्कृतिक विविधता और संवैधानिक मूल्यों के अनुरूप हो। जब कृत्रिम मेधा की प्रौद्योगिकी और हिंदी की आत्मीयता एक-दूसरे की पूरक बनेंगी, तब प्रशासन अधिक पारदर्शी और जनसंपर्क अधिक प्रभावी एवं इसका विकास अधिक समावेशी होगा। निस्संदेह, हिंदी कृत्रिम मेधा के युग में केवल संवाद का माध्यम नहीं, बल्कि विकसित भारत के निर्माण



की प्रेरक शक्ति और शासन तथा समाज के बीच विश्वास का सुदृढ़ सेतु बनकर भविष्य का मार्ग प्रशस्त करेगी। इसी क्रम में कुछ पंक्तियाँ उल्लेखनीय है :-

**“शब्दों में इसकी संस्कृति बसती, हर हृदय में अपनी पहचान रचती।**

**समय के संग बढ़ती जाए, विश्व पटल पर पहचान बनाए।।**

**डिजिटल युग में कदम बढ़ाकर, नए आयामों को अपनाकर।**

**ज्ञान, विज्ञान और तकनीक के संग, जनमानस की आवाज बन जाए।।”**

अंततः यह कहा जा सकता है कि कृत्रिम मेधा और हिंदी का संबंध केवल तकनीकी और भाषा का मेल नहीं, बल्कि आधुनिकता और मानवीय संवेदना का समन्वय है। प्रशासन से जनसंपर्क तक हिंद कृत्रिम मेधा को मानवीय स्पर्श प्रदान करती है, और कृत्रिम मेधा हिंदी को वैश्विक तकनीकी मंच पर नई पहचान देती है। भविष्य उसी का होगा जो तकनीकी उत्कृष्टता को भाषायी आत्मीयता के साथ जोड़ सके। यही समन्वय भारत को ज्ञान, नवाचार और समावेशी विकास की दिशा में नई ऊँचाइयों तक ले जाएगा।

‘हिंदी का विस्तार केवल अक्षरों की यात्रा नहीं, बल्कि मिट्टी की सुगंध, संस्कृति की आत्मा, जनमानस की भावना, पूर्वजों के संस्कारों और भारतीय अस्मिता के प्रकाश का प्रसार है। जो करोड़ों हृदयों की धड़कन, भावनाओं की अभिव्यक्ति और भारत की आत्मा का मधुर आवाज बनकर गूँज रही है।’

**अनिश गोस्वामी**

प्रशिक्षु अधिकारी (राजभाषा), हडको





## राजभाषा एवं क्षेत्रीय भाषाएँ

**“कोस-कोस पर बदले पानी, चार कोस पर वाणी।”**

यह प्रसिद्ध कहावत भारत की भाषायी विविधता को बहुत सुंदर तरीके से बताती है। भारत दुनिया के उन देशों में से एक है जहाँ सबसे अधिक भाषाएँ और बोलियाँ बोली जाती हैं। लगभग हर राज्य की अपनी भाषा, अपनी संस्कृति और अपनी पहचान है। यही विविधता भारत को विशेष बनाती है। अलग-अलग भाषाएँ होने के बावजूद हम सभी भारतीय एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं। हमारी यही विशेषता “अनेकता में एकता” कहलाती है।

भारत में हिंदी को संविधान के अनुसार राजभाषा का दर्जा प्राप्त है। राजभाषा का अर्थ यह नहीं है कि दूसरी भाषाएँ कम महत्वपूर्ण हैं। इसका उद्देश्य केवल सरकारी कार्यों को सरल और सुचारु रूप से चलाना है। वहीं तमिल, तेलुगु, मराठी, बांग्ला, गुजराती, पंजाबी, कन्नड़, मलयालम, उड़िया, असमिया, मैथिली, कश्मीरी और अन्य क्षेत्रीय भाषाएँ भारत की सांस्कृतिक धरोहर हैं। इन भाषाओं ने देश की संस्कृति, साहित्य और समाज को समृद्ध बनाया है। राजभाषा और क्षेत्रीय भाषाओं का संबंध प्रतिस्पर्धा का नहीं, बल्कि सहयोग का है। यदि राजभाषा पूरे देश को जोड़ने का कार्य करती है, तो क्षेत्रीय भाषाएँ अपनी-अपनी संस्कृति और परंपरा को जीवित रखती हैं। दोनों मिलकर भारत की एकता को मजबूत बनाती हैं।

### राजभाषा का महत्व

भारत का संविधान 26 जनवरी 1950 को लागू हुआ। संविधान के अनुच्छेद 343 के अनुसार देवनागरी लिपि में हिंदी को संघ की राजभाषा बनाया गया। इसका उद्देश्य यह था कि सरकारी कार्यालयों में काम करने के लिए एक ऐसी भाषा हो जिसे देश के अधिक से अधिक लोग समझ सकें। यह समझना बहुत जरूरी है कि राजभाषा और राष्ट्रभाषा अलग-अलग बातें हैं। संविधान में हिंदी को राजभाषा कहा गया है, राष्ट्रभाषा नहीं। राजभाषा का उपयोग मुख्य रूप से सरकारी कामकाज, पत्राचार और प्रशासन में किया जाता है। आज केंद्र सरकार के अनेक मंत्रालयों, विभागों और सार्वजनिक उपक्रमों में हिंदी का प्रयोग लगातार बढ़ रहा है। इससे सरकारी सेवाएँ आम लोगों तक उनकी अपनी भाषा में पहुँच रही हैं और प्रशासन अधिक सरल बन रहा है।

### क्षेत्रीय भाषाओं का महत्व

भारत की हर क्षेत्रीय भाषा अपने साथ एक समृद्ध इतिहास और संस्कृति लेकर चलती है। इन भाषाओं में लोकगीत, लोककथाएँ, साहित्य, कहावतें और जीवन के अनुभव सुरक्षित हैं। यदि कोई भाषा समाप्त होती है, तो उसके साथ उस समाज की सांस्कृतिक पहचान भी कमजोर हो जाती है। मातृभाषा में शिक्षा प्राप्त करने से बच्चे विषयों को अधिक अच्छी



तरह समझते हैं। इसलिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भी शुरुआती शिक्षा मातृभाषा या स्थानीय भाषा में देने पर जोर दिया गया है। इससे बच्चों का आत्मविश्वास बढ़ता है और सीखना आसान हो जाता है।

### राजभाषा और क्षेत्रीय भाषाएँ : एक-दूसरे की पूरक

कई बार लोगों को लगता है कि हिंदी के बढ़ने से क्षेत्रीय भाषाओं का महत्व कम हो जाएगा। यह सोच सही नहीं है। भारत की सभी भाषाएँ मिलकर देश को मजबूत बनाती हैं। हिंदी देश के अलग-अलग राज्यों के लोगों के बीच संवाद का माध्यम बन सकती है, जबकि क्षेत्रीय भाषाएँ स्थानीय समाज की पहचान को बनाए रखती हैं। इसलिए दोनों का विकास साथ-साथ होना चाहिए। हम सभी को अपनी मातृभाषा पर गर्व होना चाहिए और साथ ही हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं का भी सम्मान करना चाहिए। जब सभी भाषाओं को समान सम्मान मिलेगा, तभी भारत की सांस्कृतिक एकता और मजबूत होगी।

### संविधान और भारतीय भाषाएँ

भारतीय संविधान ने केवल हिंदी को राजभाषा का दर्जा ही नहीं दिया, बल्कि अन्य भारतीय भाषाओं के संरक्षण और विकास का भी ध्यान रखा। संविधान की आठवीं अनुसूची में 22 भारतीय भाषाओं को मान्यता दी गई है। यह भारत की लोकतांत्रिक सोच और भाषायी सम्मान का प्रतीक है। यह व्यवस्था हमें सिखाती है कि भारत की शक्ति उसकी विविधता में है। अलग-अलग भाषाएँ होने के बाद भी हमारा संविधान सभी भाषाओं का सम्मान करता है।

### स्वतंत्रता आंदोलन में भारतीय भाषाओं की भूमिका

भारत की आजादी की लड़ाई केवल हथियारों से नहीं लड़ी गई, बल्कि विचारों और शब्दों की शक्ति ने भी इसमें महत्वपूर्ण योगदान दिया। उस समय हिंदी सहित अनेक भारतीय भाषाओं में समाचार-पत्र, पत्रिकाएँ, कविताएँ और लेख प्रकाशित हुए, जिन्होंने लोगों में देशभक्ति की भावना जगाई। महात्मा गांधी, लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक, सुभाष चंद्र बोस और अनेक स्वतंत्रता सेनानियों ने जनता से संवाद करने के लिए भारतीय भाषाओं का ही अधिक प्रयोग किया। इससे देश के अलग-अलग क्षेत्रों के लोग एक-दूसरे से जुड़े और स्वतंत्रता आंदोलन जन-आंदोलन बन गया।

### मातृभाषा और शिक्षा

हर बच्चा अपनी मातृभाषा में सबसे जल्दी सीखता है। जब प्रारंभिक शिक्षा अपनी भाषा में मिलती है, तो विषयों को समझना आसान हो जाता है। यही कारण है कि नई शिक्षा नीति 2020 में भी मातृभाषा और स्थानीय भाषा में शिक्षा पर विशेष जोर दिया गया है। मातृभाषा में मजबूत आधार बनने के बाद विद्यार्थी दूसरी भाषाएँ भी आसानी से सीख सकते हैं। इसलिए भारतीय भाषाओं का विकास शिक्षा की गुणवत्ता से भी जुड़ा हुआ है।

### डिजिटल युग में भारतीय भाषाएँ

आज का समय इंटरनेट, मोबाइल और कृत्रिम बुद्धिमत्ता का है। पहले अधिकतर डिजिटल सेवाएँ केवल अंग्रेजी में उपलब्ध थीं, लेकिन अब स्थिति तेजी से बदल रही है। आज मोबाइल ऐप, ऑनलाइन बैंकिंग, डिजिटल भुगतान, सरकारी पोर्टल और कई अन्य सेवाएँ हिंदी तथा अनेक भारतीय भाषाओं में उपलब्ध हैं। कृत्रिम बुद्धिमत्ता और अनुवाद तकनीक ने भारतीय भाषाओं को नई पहचान दी है। लोग अपनी भाषा में जानकारी पढ़ रहे हैं, वीडियो बना रहे हैं और ऑनलाइन शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। इससे डिजिटल भारत का सपना और मजबूत हो रहा है। भविष्य में तकनीक तभी सफल होगी जब वह हर भारतीय तक उसकी अपनी भाषा में पहुँचेगी।



## वर्तमान चुनौतियाँ

आज वैश्वीकरण के कारण अंग्रेजी का महत्व बढ़ा है। रोजगार और उच्च शिक्षा में अंग्रेजी की आवश्यकता महसूस होती है। लेकिन इसका अर्थ यह नहीं कि भारतीय भाषाओं का महत्व कम हो गया है। एक दूसरी चुनौती यह है कि कई बार सरकारी भाषा बहुत कठिन होती है। ऐसे शब्दों को समझना आम लोगों के लिए आसान नहीं होता। इसलिए सरल और व्यावहारिक हिंदी का प्रयोग बढ़ाना आवश्यक है। युवाओं में भी कभी-कभी यह सोच बन जाती है कि केवल अंग्रेजी जानना ही सफलता की पहचान है। जबकि वास्तविकता यह है कि अपनी भाषा में मजबूत पकड़ रखने वाला व्यक्ति अन्य भाषाएँ भी अधिक अच्छे ढंग से सीख सकता है।

## सरकारी संस्थानों की भूमिका

सरकारी मंत्रालयों और सार्वजनिक उपक्रमों की जिम्मेदारी केवल प्रशासन चलाना नहीं है, बल्कि लोगों तक अपनी योजनाओं की जानकारी भी पहुँचाना है। जब सरकारी दस्तावेज, पत्र, सूचना और सेवाएँ सरल हिंदी तथा आवश्यकतानुसार क्षेत्रीय भाषाओं में उपलब्ध होती हैं, तब अधिक लोग उनका लाभ उठा पाते हैं।

हडको जैसे सार्वजनिक उपक्रम में भी राजभाषा का विशेष महत्व है। हडको देश में आवास, शहरी विकास और आधारभूत संरचना से जुड़े महत्वपूर्ण कार्य करता है। यदि इसकी योजनाओं की जानकारी सरल भाषा में लोगों तक पहुँचे, तो समाज का बड़ा वर्ग उनसे लाभ उठा सकता है। यही सुशासन की पहचान भी है।

## राजभाषा के विकास में सरकार के प्रयास

भारत सरकार समय-समय पर राजभाषा के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए अनेक कदम उठाती रही है। विभिन्न मंत्रालयों और सरकारी संस्थानों में राजभाषा कार्यान्वयन समितियाँ बनाई जाती हैं। हिंदी पखवाड़ा, हिंदी दिवस, निबंध प्रतियोगिता, कार्यशालाएँ और प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं ताकि अधिकारी और कर्मचारी सरल तथा प्रभावी हिंदी में कार्य कर सकें।

इन प्रयासों का उद्देश्य किसी भाषा को थोपना नहीं है, बल्कि सरकारी कार्यों को अधिक सरल, पारदर्शी और जनहितकारी बनाना है। जब नागरिक अपनी भाषा में सरकारी जानकारी पढ़ और समझ सकते हैं, तब शासन व्यवस्था और अधिक प्रभावी बनती है।

अंत में यही कहा जा सकता है कि भारत की भाषायी विविधता उसकी सबसे बड़ी शक्ति है। राजभाषा और क्षेत्रीय भाषाएँ मिलकर देश की लोकतांत्रिक व्यवस्था, सांस्कृतिक विरासत और राष्ट्रीय एकता को मजबूत बनाती हैं। हमें न केवल हिंदी का सम्मान करना चाहिए, बल्कि सभी भारतीय भाषाओं को समान आदर देना चाहिए। यही संविधान की भावना है और यही भारत की पहचान भी है।

यदि प्रत्येक नागरिक अपनी मातृभाषा से प्रेम करे, राजभाषा का सम्मान करे और अन्य भारतीय भाषाओं के प्रति भी सम्मान का भाव रखे, तो हमारा देश ज्ञान, संस्कृति और विकास के क्षेत्र में नई ऊँचाइयों को प्राप्त करेगा। वास्तव में भारत की शक्ति उसकी भाषाओं में ही बसती है, और इन्हीं भाषाओं के माध्यम से हम एक सशक्त, समावेशी और आत्मनिर्भर भारत का निर्माण कर सकते हैं।

**शुभम कुमार**

प्रशिक्षु अधिकारी, आईटी, हडको



## एएलएम विंग की प्रमुख उपलब्धियाँ

वित्तीय संस्थानों के सुचारु, सुरक्षित और संतुलित संचालन में परिसंपत्ति-देयता प्रबंधन की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। किसी भी संस्था की वित्तीय सुदृढ़ता इस बात पर निर्भर करती है कि उसकी परिसंपत्तियों और देयताओं के बीच संतुलन किस प्रकार बनाए रखा गया है, तरलता की उपलब्धता कितनी प्रभावी है तथा जोखिमों का प्रबंधन किस स्तर तक सुविचारित ढंग से किया गया है। इन्हीं उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए एएलएम विंग ने अपने कार्यों का संचालन अत्यंत सतर्कता, अनुशासन और समन्वय के साथ किया है। विंग का समग्र प्रदर्शन न केवल नियामकीय अपेक्षाओं के अनुरूप रहा, बल्कि कंपनी की वित्तीय योजना, संसाधन प्रबंधन और निर्णय-प्रक्रिया को भी सुदृढ़ करने में सहायक सिद्ध हुआ।

विंग का प्रमुख ध्यान परिसंपत्तियों एवं देयताओं के बीच संतुलन बनाए रखने, नकद प्रवाह की निरंतर निगरानी करने तथा विभिन्न अवधियों में उत्पन्न होने वाले अंतरालों का समय पर आकलन करने पर केंद्रित रहा। नियमित रूप से नकदी प्रवाह का विश्लेषण, परिपक्वता प्रोफाइल का परीक्षण, अंतराल विश्लेषण तथा संवेदनशीलता आकलन किए गए, जिससे संभावित असंतुलों की पहचान समय रहते की जा सकी। इन प्रयासों के परिणामस्वरूप तरलता प्रबंधन अधिक प्रभावी



हुआ और कंपनी की समग्र एएलएम स्थिति पहले की तुलना में अधिक संतुलित एवं नियंत्रित बनी रही। चूँकि एएलएम एक सतत् प्रक्रिया है, इसलिए इसमें निरंतर सुधार की आवश्यकता बनी रहती है, किंतु किए गए प्रयासों ने यह स्पष्ट किया कि सुविचारित योजना और समयबद्ध कार्रवाई से वित्तीय स्थिरता को बेहतर बनाया जा सकता है।

विंग ने स्टॉक अनुपातों को भी निर्धारित नीति-सीमाओं के भीतर बनाए रखने में उल्लेखनीय सफलता प्राप्त की। इसके लिए निधि संरचना पर विशेष ध्यान दिया गया तथा अल्पकालिक संसाधनों पर अत्यधिक निर्भरता को कम करने की दिशा में निरंतर प्रयास किए गए। अपेक्षाकृत स्थिर और दीर्घकालिक संसाधनों के उपयोग को प्राथमिकता दी गई, जिससे बैलेंस शीट का प्रबंधन अधिक संतुलित हुआ। परिसंपत्तियों और देयताओं के बीच बेहतर सामंजस्य स्थापित करने के लिए विभिन्न आंतरिक संकेतकों की नियमित समीक्षा की गई। इस प्रक्रिया ने न केवल वित्तीय जोखिमों को नियंत्रित रखने में सहायता की, बल्कि भविष्य की आवश्यकताओं के अनुरूप संसाधनों की उपलब्धता सुनिश्चित करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। परिणामस्वरूप विंग का कार्य अधिक अनुशासित, पूर्वानुमेय और परिणामोन्मुख बना।

भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा निर्धारित तरलता कवरेज अनुपात तथा उच्च गुणवत्ता वाली लिक्विड परिसंपत्तियों से संबंधित सभी प्रावधानों का पूर्ण अनुपालन सुनिश्चित किया गया। विंग ने यह ध्यान रखा कि कंपनी के पास अल्पकालिक दायित्वों को पूरा करने के लिए पर्याप्त लिक्विड संसाधन उपलब्ध रहें और किसी भी प्रकार की नियामकीय कमी उत्पन्न न हो। इसके साथ ही भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा समय-समय पर जारी किए गए नए निर्देशों, संशोधनों और अनुपालन संबंधी अपेक्षाओं को भी तत्परता से लागू किया गया। नियामकीय परिवर्तनों की समय पर समीक्षा, आवश्यक आंतरिक समन्वय तथा अनुपालन की पुष्टि ने यह सुनिश्चित किया कि कंपनी की रिपोर्टिंग और आंतरिक प्रक्रियाएँ सदैव अद्यतन बनी रहें। इस प्रकार विंग ने न केवल अनुपालन की दृष्टि से, बल्कि जोखिम प्रबंधन की दृष्टि से भी अपनी भूमिका प्रभावी ढंग से निभाई।

विंग की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि भारतीय रिजर्व बैंक की केंद्रीकृत सूचना प्रबंधन प्रणाली पर कार्य का सफलतापूर्वक प्रारंभ होना रही। नई प्रणाली में आवश्यक प्रक्रियाओं को अपनाते हुए सभी नियामकीय विवरणियाँ निर्धारित समय-सीमा के भीतर प्रस्तुत की गईं। यह परिवर्तन केवल एक तकनीकी बदलाव नहीं था, बल्कि रिपोर्टिंग की गुणवत्ता, पारदर्शिता



और समयबद्धता को और अधिक सुदृढ़ करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम था। नई प्रणाली के अनुरूप डेटा संकलन, सत्यापन, परीक्षण और प्रस्तुतीकरण की प्रक्रिया को व्यवस्थित किया गया, जिससे त्रुटियों की संभावना कम हुई और अनुपालन की विश्वसनीयता बढ़ी। इस उपलब्धि ने यह भी दर्शाया कि विंग बदलते नियामकीय और तकनीकी परिवेश के साथ स्वयं को प्रभावी ढंग से अनुकूलित करने में सक्षम है।

एएलएम विंग द्वारा परिसंपत्ति-देयता प्रबंधन समिति की बैठकों का नियमित आयोजन भी प्रमुख गतिविधियों में शामिल रहा। इन बैठकों में

तरलता की स्थिति, ब्याज दर जोखिम, संसाधनों की उपलब्धता, निधि की लागत, भविष्य की वित्तीय आवश्यकताओं तथा संभावित जोखिमों पर विस्तार से चर्चा की गई। समिति द्वारा लिए गए निर्णयों ने समयानुकूल वित्तीय योजना बनाने, जोखिमों के बेहतर प्रबंधन तथा संसाधनों के विवेकपूर्ण उपयोग में महत्वपूर्ण योगदान दिया। एएलसीओ बैठकों के माध्यम से विभिन्न व्यावसायिक





इकाइयों, वित्तीय प्रबंधन और विंगीय स्तर के बीच बेहतर समन्वय स्थापित हुआ, जिससे निर्णय-प्रक्रिया अधिक सुदृढ़ और व्यावहारिक बनी। इन बैठकों से प्राप्त दिशा-निर्देशों ने विंग को बदलती परिस्थितियों के अनुरूप त्वरित और प्रभावी कार्रवाई करने में सहायता प्रदान की।



वर्ष के दौरान बजट प्रबंधन के क्षेत्र में भी विंग ने उल्लेखनीय कार्य किया। बजट, जिसमें बजट अनुमान एवं संशोधित अनुमान दोनों शामिल थे, का समय पर अनुमोदन और क्रियान्वयन सुनिश्चित किया गया। बजटीय आवश्यकताओं की समीक्षा, उपलब्ध संसाधनों का आकलन, प्राथमिकताओं का निर्धारण तथा व्यय की निगरानी जैसे सभी चरणों को सुव्यवस्थित ढंग से संपन्न किया गया। इससे यह सुनिश्चित हुआ कि कंपनी की विभिन्न गतिविधियों के लिए आवश्यक

वित्तीय संसाधन समय पर उपलब्ध रहें और किसी भी महत्वपूर्ण कार्य में अनावश्यक विलंब न हो। बजट के समयबद्ध अनुमोदन और क्रियान्वयन ने वित्तीय अनुशासन को सुदृढ़ किया तथा प्रबंधन को योजनाबद्ध ढंग से संसाधनों के उपयोग में सहायता प्रदान की। यह उपलब्धि इस बात का प्रमाण है कि विंग केवल नियामकीय अनुपालन तक सीमित नहीं रहा, बल्कि उसने संगठनात्मक प्राथमिकताओं के अनुरूप वित्तीय योजना को भी प्रभावी ढंग से आगे बढ़ाया।

इसी प्रकार, विभिन्न क्षेत्रीय कार्यालयों एवं विभागों से प्राप्त पुनर्विनियोजन अनुरोधों पर भी विंग ने समयबद्ध और संवेदनशील –दृष्टिकोण अपनाया। प्राप्त अनुरोधों का परीक्षण, आवश्यक समन्वय, वित्तीय औचित्य की समीक्षा तथा अनुमोदन प्रक्रिया को प्राथमिकता के आधार पर संपन्न किया गया। इससे विभिन्न इकाइयों की उभरती आवश्यकताओं के अनुरूप बजटीय संसाधनों का पुनर्संयोजन संभव हो सका। समय पर पुनर्विनियोजन अनुरोधों का निस्तारण होने से कार्यों में निरंतरता बनी रही और किसी भी क्षेत्रीय कार्यालय या विभाग को संसाधनों की कमी के कारण बाधा का सामना नहीं करना पड़ा। यह पहल संगठन के भीतर उत्तरदायित्व, लचीलापन और सहयोग की भावना को भी दर्शाती है। विंग ने यह सुनिश्चित किया कि बजटीय प्रबंधन केवल आंकड़ों का विषय न रहकर, वास्तविक क्रियान्वयन और परिचालन आवश्यकताओं से जुड़ा हुआ एक जीवंत तंत्र बना रहे।

विंग की एक अन्य महत्वपूर्ण उपलब्धि आंतरिक समन्वय और प्रक्रिया-सुधार के क्षेत्र में रही। विभिन्न विभागों, इकाइयों



और संबंधित अधिकारियों के साथ निरंतर संवाद बनाए रखा गया, जिससे सूचनाओं का प्रवाह सुचारु रहा और निर्णय लेने में सुविधा हुई। डेटा की गुणवत्ता, समयबद्ध रिपोर्टिंग, दस्तावेजीकरण की शुद्धता तथा आंतरिक नियंत्रणों की मजबूती पर विशेष ध्यान दिया गया। विंग ने यह सुनिश्चित किया कि प्रत्येक रिपोर्ट, प्रत्येक विश्लेषण और प्रत्येक अनुपालन कार्य विश्वसनीय तथ्यों पर आधारित हो। इससे न केवल प्रबंधन को सही समय पर सही जानकारी उपलब्ध कराई जा सकी, बल्कि संगठन की समग्र



कार्यकुशलता में भी सुधार हुआ। कार्यप्रणाली में पारदर्शिता, उत्तरदायित्व और अनुशासन बनाए रखने के लिए विंग ने निरंतर प्रयास किए, जिनका सकारात्मक प्रभाव समग्र प्रदर्शन पर स्पष्ट रूप से दिखाई दिया।

एएलएम विंग ने यह भी सिद्ध किया कि वित्तीय प्रबंधन केवल जोखिमों को नियंत्रित करने का माध्यम नहीं है, बल्कि यह संगठन की रणनीतिक दिशा को भी प्रभावित करता है। तरलता प्रबंधन, नियामकीय अनुपालन, बजट नियंत्रण, पुनर्विनियोजन, रिपोर्टिंग और समिति-स्तरीय निर्णयों के माध्यम से विंग ने कंपनी की वित्तीय संरचना को अधिक मजबूत और उत्तरदायी बनाया। बदलते आर्थिक परिवेश, नियामकीय अपेक्षाओं और परिचालन आवश्यकताओं के बीच संतुलन बनाए रखना एक चुनौतीपूर्ण कार्य होता है, किंतु विंग ने टीम भावना, तकनीकी दक्षता और समयबद्ध कार्रवाई के माध्यम से इस चुनौती का सफलतापूर्वक सामना किया। यह समग्र प्रदर्शन इस बात का प्रमाण है कि सुव्यवस्थित योजना, सतत निगरानी और प्रभावी समन्वय से किसी भी वित्तीय विंग को उत्कृष्ट परिणाम प्राप्त करने की दिशा में अग्रसर किया जा सकता है।

अंततः, यह कहना उचित होगा कि एएलएम विंग की कार्यकुशलता और समयबद्ध निष्पादन में प्रबंधन का निरंतर सहयोग अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है। प्रबंधन द्वारा प्रदान किए गए मार्गदर्शन, विश्वास और आवश्यक सहयोग के कारण विंग अपने दायित्वों का निर्वहन समय पर एवं प्रभावी ढंग से कर सका। इस अवसर पर विंग की ओर से प्रबंधन के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त किया जाता है। साथ ही, विभिन्न कार्यों में सहयोग प्रदान करने वाले अन्य विभागों के प्रति भी विंग अपनी कृतज्ञता प्रकट करता है, जिनके समन्वय और सहयोग से कार्यों के निष्पादन में निरंतर सहायता मिली। भविष्य में भी इसी प्रकार के सहयोग और प्रोत्साहन से विंग अपनी जिम्मेदारियों का निर्वहन और अधिक दक्षता के साथ करता रहेगा तथा संगठन की प्रगति में अपना योगदान देता रहेगा।

**अश्वनी कुमार**

वरिष्ठ प्रबंधक (वित्त), हडको





## वर्षा ऋतु

वर्षा ऋतु भारत की प्रमुख ऋतुओं में से एक है। यह ऋतु सामान्यतः जून से सितंबर तक रहती है। वर्षा होने से वातावरण ठंडा और सुहावना हो जाता है। खेतों में हरियाली छा जाती है और किसानों के लिए यह ऋतु बहुत महत्वपूर्ण होती है, क्योंकि फसलों को पानी मिलता है। पेड़-पौधे ताजगी से भर जाते हैं और नदियाँ, तालाब तथा झीलें पानी से भर जाती हैं। वर्षा ऋतु जहाँ प्रकृति को सुंदर बनाती है, वहीं कभी-कभी अधिक वर्षा के कारण जलभराव, बाढ़ और यातायात की समस्याएँ भी उत्पन्न हो जाती हैं। इसलिए हमें वर्षा ऋतु का आनंद लेते हुए सावधानी भी रखनी चाहिए।

**वर्षा ऋतु में किन-किन बातों का ध्यान रखें:** साफ पानी पिएँ, उबला या फिल्टर किया हुआ पानी पीना चाहिए। बारिश में भीगने से बचे, अधिक देर तक भीगने से सर्दी-जुकाम हो सकता है। बाहर जाते समय छाता या रेनकोट का उपयोग करें। मच्छरों से बचाव के लिए पानी जमा न होने दें और मच्छरदानी का उपयोग करें। साफ-सफाई रखें और गीले कपड़े तुरंत बदलें और घर के आसपास सफाई रखें। फिसलन से सावधान रहें तथा गीली सड़कों और सीढ़ियों पर धीरे चलें। ताजा भोजन करें एवं बासी और खुला खाना खाने से बचें। वर्षा ऋतु में खुले तारों और बिजली के खंभों से दूर रहें।



इस साल 2026 की बारिश ने बहुत जगह तबाही मचा दी है जुलाई तक देश के कई राज्यों में बाढ़, लैंडस्लाइड और जलभराव की खबरें आई हैं। सबसे ज्यादा नुकसान उत्तर भारत, दिल्ली, हरियाणा, पंजाब, यूपी में हुआ। गुरुग्राम और दिल्ली में जुलाई में बहुत तेज बारिश हुई। सड़कों पर 2-3 फीट तक पानी भर गया। ट्रैफिक जाम, मेट्रो लेट, ऑफिस बंद। निचली बस्तियों में घरों में पानी घुस गया।

बारिश के दौरान फिसलन बढ़ने से सड़क दुर्घटनाओं की संभावना भी बढ़ जाती है। इसके अलावा, खराब दृश्य के कारण वाहन चालकों को सावधानीपूर्वक वाहन चलाना पड़ता है, जिससे ट्रैफिक और धीमा हो जाता है। कार्यालय, स्कूल और अन्य कार्यस्थलों पर जाने वाले लोगों को समय पर पहुँचने में कठिनाई होती है।

**ट्रैफिक समस्या से बचने के उपाय :** बारिश के मौसम में दिल्ली में ट्रैफिक जाम एक बड़ी समस्या बन जाती है। तेज बारिश के कारण सड़कों पर पानी भर जाता है, जिससे वाहनों की गति धीमी हो जाती है। कई जगह जलभराव होने से सड़कें बंद हो जाती हैं और लोगों को लंबी दूरी तय करने में अधिक समय लगता है।



मौसम और ट्रैफिक की जानकारी पहले से प्राप्त करें। आवश्यकता हो तो सार्वजनिक परिवहन का उपयोग करें। समय से पहले घर से निकलें। जलभराव वाले मार्गों से बचें और वैकल्पिक मार्ग अपनाएँ। वाहन धीरे और सावधानी से चलाएँ तथा यातायात नियमों का पालन करें।

**हिमाचल प्रदेश + उत्तराखंड :** यहाँ बादल फटना और लैंडस्लाइड सबसे ज्यादा हुए। पहाड़ों से मलबा आया, सड़कें और पुल टूट गए। कई पर्यटक भी फंस गए थे। **बिहार, असम, पश्चिम बंगाल:** नदियों का पानी खतरे के निशान से ऊपर बह रहा है। गाँव डूब गए और खेतों की फसल पूरी बर्बाद हो गई।



**महाराष्ट्र, गुजरात:** मुंबई और सूरत में जगह-जगह जलभराव। कुछ जगह 24 घंटे में 200एमएम से ज्यादा बारिश रिकॉर्ड की गई।

### क्या-क्या दिक्कतें आईं

**जान-माल का नुकसान:** कई जगह मकान गिर गए। एनडीआरएफ और एसडीआरएफ की टीम रेस्क्यू कर रही है। फसल बर्बाद: धान, सब्जी और कपास की फसल खेत में ही खराब हो गई। किसानों को बहुत नुकसान हुआ है। ट्रैफिक + बिजली: शहरों में लंबा जाम और कई जगह बिजली के खंभे गिर गए। बीमारियाँ: रुके हुए पानी से डेंगू, मलेरिया और स्किन इन्फेक्शन बढ़ गए हैं। बारिश की वजह से जो तबाही हो रही है, उसके लिए काफी हद तक हम इंसान ही जिम्मेदार हैं। प्रकृति का संतुलन हमने अपने फायदे के लिए बिगाड़ दिया है।

### कैसे संतुलन बिगाड़ा

#### 1. पेड़ों की कटाई

शहर बसाने, सड़क और बिल्डिंग बनाने के लिए हमने जंगल काट दिए। पेड़ ही तो पानी को सोखते हैं। पेड़ नहीं होंगे तो पानी सीधा सड़कों और घरों में भर जाएगा। पेड़ लगाएं- एक पेड़ 10 लोगों को ऑक्सीजन और बाढ़ से बचाव देता है प्रकृति से लड़ नहीं सकते, पर उसके साथ चल सकते हैं।

#### 2. नदी-नालों पर कब्जा

पहले जहाँ पानी बहता था, वहाँ आज कॉलोनी और शॉपिंग मॉल बन गए हैं। नालों को बंद कर दिया। तो पानी जाएगा कहाँ? वापस घरों में ही आएगा।

#### 3. प्लास्टिक और कचरा

नालियां कचरे और प्लास्टिक से जाम हो गई हैं। थोड़ी सी बारिश में ही जलभराव हो जाता है।

#### 4. ग्लोबल वार्मिंग

गाड़ियों, फैक्ट्रियों से निकलने वाली गैस की वजह से धरती गर्म हो रही है। गर्म धरती ज्यादा भाप बनाती है और ज्यादा भाप का मतलब है ज्यादा तेज बारिश और बादल फटना।



## 5. पहाड़ों में बेतरतीब निर्माण

हिमाचल, उत्तराखंड में पहाड़ काटकर होटल और रोड बनाए। प्रकृति ने अपना संतुलन बिगड़ते ही लैंडस्लाइड के रूप में जवाब दिया।

### सरकार क्या कर रही है

एनडीआरएफ की टीमों तैनात हैं, राहत कैंप बनाए गए हैं, पीएम और सीएम राहत कोष से मदद दी जा रही है, मौसम विभाग रोज रेड और ऑरेंज अलर्ट जारी कर रहा है।

“वर्षा ऋतु हरियाली और खुशहाली लाती है, वर्षा ऋतु से सभी का मन आनंद प्रफुल्लित से हो जाता है इस मौसम का भरपूर आनंद लेना चाहिए। लेकिन इस मौसम में स्वास्थ्य और सुरक्षा का विशेष ध्यान रखना आवश्यक है।” वर्षा ऋतु प्रकृति का अनमोल उपहार है।

मंजू बाला

वरिष्ठ प्रबंधक (आईटी), हडको



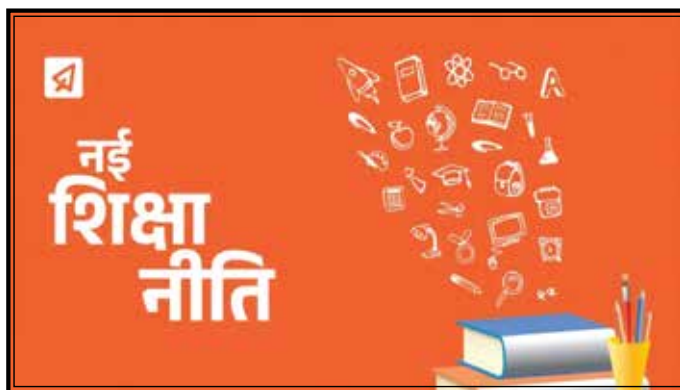


## नई शिक्षा नीति में हिंदी एवं भारतीय भाषाओं का भविष्य

### प्रस्तावना

“भाषा केवल संवाद का माध्यम नहीं, बल्कि किसी राष्ट्र की संस्कृति, सभ्यता, ज्ञान और पहचान की आत्मा होती है।” भारत विश्व का सबसे बड़ा भाषायी लोकतंत्र है, जहाँ संविधान द्वारा मान्यता प्राप्त 22 अनुसूचित भाषाएँ तथा सैकड़ों बोलियाँ और भाषाएँ बोली जाती हैं। हिंदी भारत की सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा है, जबकि तमिल, तेलुगु, बंगाली, मराठी, गुजराती, पंजाबी, उड़िया, कन्नड़, मलयालम, संस्कृत और अन्य भारतीय भाषाएँ हमारी सांस्कृतिक विविधता की अमूल्य धरोहर हैं। वर्ष 2020 में लागू राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी एंड 2020) ने भारतीय शिक्षा व्यवस्था में एक ऐतिहासिक परिवर्तन का मार्ग प्रशस्त किया। इस नीति का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष यह है कि इसमें हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाओं को शिक्षा, अनुसंधान, तकनीक और रोजगार के क्षेत्र में सशक्त बनाने पर विशेष बल दिया गया है। नई शिक्षा नीति केवल भाषा परिवर्तन का दस्तावेज नहीं है, बल्कि भारत को उसकी सांस्कृतिक जड़ों से जोड़ते हुए आधुनिक ज्ञान और वैश्विक प्रतिस्पर्धा के लिए तैयार करने का एक व्यापक दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है।

वर्तमान समय में कृत्रिम बुद्धिमत्ता, डिजिटल शिक्षा, राष्ट्रीय शिक्षा अभियान, भारतीय भाषा प्रौद्योगिकी तथा नई सरकारी पहलों के कारण हिंदी एवं भारतीय भाषाओं के विकास की संभावनाएँ पहले से कहीं अधिक मजबूत हुई हैं।



### नई शिक्षा नीति का उद्देश्य

नई शिक्षा नीति का मुख्य उद्देश्य ऐसी शिक्षा व्यवस्था विकसित करना है जो विद्यार्थियों में रचनात्मकता, आलोचनात्मक चिंतन, नैतिक मूल्यों, वैज्ञानिक दृष्टिकोण तथा भारतीय संस्कृति के प्रति सम्मान विकसित करे। यह नीति विद्यार्थियों को उनकी मातृभाषा में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध कराने पर विशेष बल देती है ताकि सीखने की प्रक्रिया अधिक सहज, प्रभावी और आनंददायक बन सके।

नीति के अनुसार कक्षा पाँच तक तथा जहाँ संभव हो वहाँ कक्षा आठ तक शिक्षा मातृभाषा, स्थानीय भाषा अथवा क्षेत्रीय भाषा में प्रदान करने का प्रयास किया जाएगा।





### हिंदी एवं भारतीय भाषाओं को नई दिशा

नई शिक्षा नीति में पहली बार भारतीय भाषाओं को केवल विषय के रूप में नहीं बल्कि ज्ञान-विज्ञान की भाषा के रूप में स्थापित करने का प्रयास किया गया है।

#### इस नीति के अंतर्गत :-

- मातृभाषा में प्रारंभिक शिक्षा को बढ़ावा दिया गया।
- भारतीय भाषाओं में उच्च शिक्षा की व्यवस्था विकसित की जा रही है।
- तकनीकी, चिकित्सा, इंजीनियरिंग और विधि शिक्षा के लिए भारतीय भाषाओं में पुस्तकें तैयार की जा रही हैं।
- भारतीय भाषाओं में डिजिटल सामग्री एवं ई-लर्निंग प्लेटफॉर्म विकसित किए जा रहे हैं।
- अनुवाद एवं व्याख्या संस्थानों को सशक्त बनाया जा रहा है।
- भारतीय भाषाओं के संरक्षण एवं संवर्धन हेतु विशेष योजनाएँ संचालित की जा रही हैं।

इससे स्पष्ट होता है कि नई शिक्षा नीति हिंदी को अन्य भारतीय भाषाओं के साथ समान महत्व प्रदान करती है।

#### वर्तमान समय की गतिविधियाँ और उनका प्रभाव

नई शिक्षा नीति लागू होने के बाद केंद्र एवं विभिन्न राज्य सरकारों द्वारा अनेक महत्वपूर्ण कार्य किए जा रहे हैं जिनका सकारात्मक प्रभाव दिखाई देने लगा है।

सबसे पहले राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा तैयार की गई, जिसमें मातृभाषा आधारित शिक्षा को विशेष महत्व दिया गया है। इसके अनुसार विद्यार्थियों को स्थानीय भाषा में शिक्षा देने से उनकी समझने और सीखने की क्षमता बेहतर होती है।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद द्वारा नई पाठ्यपुस्तकों का निर्माण किया जा रहा है जिनमें भारतीय ज्ञान परंपरा, स्थानीय संस्कृति तथा सरल भाषा का समावेश किया गया है।

देश के अनेक इंजीनियरिंग एवं तकनीकी संस्थानों में हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं में इंजीनियरिंग की पढ़ाई प्रारंभ की गई है। इससे ग्रामीण और हिंदी माध्यम के विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा प्राप्त करने में सुविधा मिल रही है।



एआईसीटीई ने इंजीनियरिंग की अनेक पुस्तकों का भारतीय भाषाओं में अनुवाद कराया है तथा तकनीकी शब्दावली को सरल बनाने का प्रयास किया है।

## डिजिटल भारत और भारतीय भाषाओं का विकास



आज भारत डिजिटल क्रांति के दौर से गुजर रहा है। इंटरनेट, स्मार्टफोन, ऑनलाइन शिक्षा तथा कृत्रिम बुद्धिमत्ता के कारण भारतीय भाषाओं का प्रयोग तेजी से बढ़ रहा है।

आज चैटजीपीटी, गूगल ट्रांसलेट, भाषिणी, स्पीच-टू-टेक्स्ट, वॉयस असिस्टेंट जैसी तकनीकें हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं में भी उपलब्ध हैं। इससे शिक्षा, प्रशासन तथा शोध कार्यों में भारतीय भाषाओं का उपयोग बढ़ रहा है।

भारत सरकार की भाषिणी पहल विभिन्न भारतीय भाषाओं में अनुवाद, वॉयस पहचान तथा डिजिटल सेवाएँ उपलब्ध कराने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है। इससे भाषायी बाधाएँ कम हो रही हैं और डिजिटल समावेशन बढ़ रहा है।

ई-लर्निंग प्लेटफॉर्म, ऑनलाइन प्रतियोगी परीक्षाएँ, डिजिटल पुस्तकालय तथा सरकारी पोर्टल अब हिंदी सहित अनेक भारतीय भाषाओं में उपलब्ध कराए जा रहे हैं।

## भारतीय ज्ञान परंपरा का पुनर्जागरण

नई शिक्षा नीति भारतीय ज्ञान परंपरा को शिक्षा का अभिन्न अंग बनाने पर बल देती है।

आयुर्वेद, योग, गणित, ज्योतिष, दर्शन, साहित्य, पर्यावरण संरक्षण, नैतिक शिक्षा तथा भारतीय इतिहास को भारतीय भाषाओं के माध्यम से पढ़ाने पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है।

संस्कृत सहित प्राचीन भारतीय भाषाओं के अध्ययन को प्रोत्साहित किया जा रहा है ताकि आने वाली पीढ़ियाँ अपने सांस्कृतिक ज्ञान से जुड़ी रहें।

## राष्ट्रीय शिक्षा नीति और रोजगार

पहले यह धारणा थी कि केवल अंग्रेजी माध्यम से पढ़ने वाले विद्यार्थियों को ही अच्छे रोजगार मिल सकते हैं। नई शिक्षा नीति इस सोच को बदलने का प्रयास कर रही है।

अब सरकारी प्रतियोगी परीक्षाओं, डिजिटल सेवाओं, स्टार्टअप, ई-गवर्नेंस, मीडिया, पत्रकारिता, कंटेंट राइटिंग, अनुवाद, पर्यटन, कृत्रिम बुद्धिमत्ता तथा भाषा प्रौद्योगिकी में भारतीय भाषाओं के विशेषज्ञों की मांग तेजी से बढ़ रही है।



भारत में डिजिटल कंटेंट का सबसे बड़ा उपभोक्ता वर्ग हिंदी एवं भारतीय भाषाओं का उपयोग करता है। यूट्यूब, सोशल मीडिया, ऑनलाइन शिक्षा और डिजिटल मार्केटिंग में भारतीय भाषाओं की भूमिका लगातार बढ़ रही है।



## नई शिक्षा नीति की चुनौतियाँ

हालाँकि नई शिक्षा नीति अत्यंत प्रभावशाली है, लेकिन इसके सफल क्रियान्वयन में कई चुनौतियाँ भी हैं। सबसे बड़ी चुनौती प्रशिक्षित शिक्षकों की कमी है। अनेक विद्यालयों में अभी भी मातृभाषा में गुणवत्तापूर्ण शिक्षण सामग्री उपलब्ध नहीं है। दूसरी चुनौती यह है कि उच्च शिक्षा के अधिकांश शोध कार्य अभी भी अंग्रेजी में होते हैं। विज्ञान एवं तकनीकी विषयों की उच्च गुणवत्ता वाली पुस्तकें भारतीय भाषाओं में पर्याप्त संख्या में उपलब्ध नहीं हैं। तीसरी चुनौती समाज की मानसिकता है। आज भी अनेक अभिभावक अंग्रेजी माध्यम को सफलता का एकमात्र माध्यम मानते हैं। जब तक यह सोच नहीं बदलेगी, तब तक भारतीय भाषाओं को उनका उचित स्थान मिलना कठिन होगा।

## भविष्य की संभावनाएँ

नई शिक्षा नीति के प्रभावी क्रियान्वयन से आने वाले वर्षों में हिंदी एवं भारतीय भाषाओं का भविष्य अत्यंत उज्ज्वल दिखाई देता है।

### भविष्य में:

- भारतीय भाषाओं में उच्च शिक्षा और अनुसंधान का विस्तार होगा।
- कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित भाषा तकनीक और विकसित होगी।
- डिजिटल शिक्षा में भारतीय भाषाओं की भागीदारी बढ़ेगी।
- न्यायपालिका, प्रशासन तथा तकनीकी शिक्षा में भारतीय भाषाओं का उपयोग बढ़ेगा।
- वैश्विक स्तर पर हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं की पहचान मजबूत होगी।
- भारतीय भाषाओं में स्टार्टअप, डिजिटल कंटेंट और रोजगार के नए अवसर विकसित होंगे।

यदि सरकार, शिक्षण संस्थान, शिक्षक, विद्यार्थी और समाज मिलकर कार्य करें तो भारत अपनी भाषायी समृद्धि के बल पर विश्व में ज्ञान महाशक्ति बनने की दिशा में अग्रसर हो सकता है।

## वर्तमान परिप्रेक्ष्य में समग्र मूल्यांकन

आज जब विश्व कृत्रिम बुद्धिमत्ता, मशीन लर्निंग और डिजिटल अर्थव्यवस्था की ओर बढ़ रहा है, तब भारतीय भाषाओं का महत्व और अधिक बढ़ गया है। वैश्विक कंपनियाँ भी भारतीय भाषाओं में सेवाएँ विकसित कर रही हैं क्योंकि भारत विश्व का सबसे बड़ा डिजिटल उपभोक्ता बाजार बन चुका है।

नई शिक्षा नीति का वास्तविक उद्देश्य अंग्रेजी का विरोध करना नहीं, बल्कि भारतीय भाषाओं को उनका उचित सम्मान और अवसर प्रदान करना है। बहुभाषिक शिक्षा से विद्यार्थी अपनी मातृभाषा में मजबूत आधार बनाते हुए अंग्रेजी तथा अन्य विदेशी भाषाओं का भी प्रभावी ढंग से अध्ययन कर सकते हैं। यही संतुलित दृष्टिकोण भारत को ज्ञान, विज्ञान और नवाचार के क्षेत्र में आगे ले जाएगा।

नई शिक्षा नीति 2020 भारतीय शिक्षा के इतिहास में एक दूरदर्शी और परिवर्तनकारी पहल है। इसने हिंदी एवं भारतीय भाषाओं को केवल सांस्कृतिक पहचान तक सीमित न रखकर उन्हें ज्ञान, विज्ञान, तकनीक, अनुसंधान और रोजगार की मुख्यधारा से जोड़ने का प्रयास किया है। वर्तमान में राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा, भारतीय भाषाओं में तकनीकी शिक्षा,



डिजिटल प्लेटफॉर्म, कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित भाषा उपकरण तथा भाषिणी जैसी पहलों ने इस दिशा में उल्लेखनीय प्रगति की है।

फिर भी सफलता केवल नीतियाँ बनाने से नहीं, बल्कि उनके प्रभावी क्रियान्वयन, गुणवत्तापूर्ण शिक्षकों, आधुनिक पाठ्यसामग्री, तकनीकी संसाधनों और समाज की सकारात्मक सोच पर निर्भर करेगी।

यदि नई शिक्षा नीति के उद्देश्यों को पूरी निष्ठा से लागू किया गया, तो आने वाले समय में हिंदी तथा सभी भारतीय भाषाएँ न केवल भारत की शिक्षा व्यवस्था की आधारशिला बनेंगी, बल्कि विश्व ज्ञान समुदाय में भी अपनी विशिष्ट पहचान स्थापित करेंगी। यही नई शिक्षा नीति का वास्तविक लक्ष्य है- "भारतीयता से जुड़ी हुई, आधुनिकता से प्रेरित और विश्व स्तर पर प्रतिस्पर्धी शिक्षा व्यवस्था का निर्माण।"

**धीरज कुमार**  
इंजीनियर (आईटी), हडको





## पर्यावरण संरक्षण

“पर्यावरण” दो शब्दों से बना है - “परि” यानी चारों ओर और “आवरण” यानी ढकने वाला। इस प्रकार पर्यावरण का अर्थ है हमारे चारों ओर का वह आवरण जिसमें हम रहते हैं। इसमें वायु, जल, मिट्टी, पेड़-पौधे, जीव-जंतु, पहाड़, नदियाँ, सूर्य का प्रकाश सब शामिल हैं।

मनुष्य का जीवन पर्यावरण पर ही निर्भर है। हम जो साँस लेते हैं, जो पानी पीते हैं, जो भोजन खाते हैं - सब प्रकृति की देन है। यदि पर्यावरण स्वस्थ है तो जीवन स्वस्थ है। लेकिन आज हम जिस गति से प्रकृति का दोहन कर रहे हैं, उससे पर्यावरण का संतुलन बिगड़ गया है।

पर्यावरण बचाना केवल सरकार या संस्थाओं का काम नहीं है। यह हम सबकी जिम्मेदारी है।



**पर्यावरण के प्रमुख घटक :** पर्यावरण को मुख्य रूप से 2 भागों में बाँटा जाता है:

**जैविक घटक** - इसमें सभी जीवित चीजें आती हैं। उत्पादक: पेड़-पौधे। ये सूर्य की रोशनी से भोजन बनाते हैं। उपभोक्ता: मनुष्य, जानवर, पक्षी। ये भोजन के लिए दूसरों पर निर्भर हैं। अपघटक: बैक्टीरिया, फफूंद। ये मृत जीवों को मिट्टी में मिलाते हैं।

**अजैविक घटक** - इसमें निर्जीव चीजें आती हैं। वायु, जल, मिट्टी, सूर्य का प्रकाश, तापमान, खनिज पदार्थ इन सभी के बीच एक नाजुक संतुलन है। एक के बिगड़ने से पूरा चक्र प्रभावित होता है।



## पर्यावरण का महत्व

पेड़-पौधे प्रकाश संश्लेषण से ऑक्सीजन देते हैं। एक बड़ा पेड़ 1 साल में 4 लोगों के लिए पर्याप्त ऑक्सीजन बनाता है। नदियाँ, तालाब, वर्षा जल चक्र को बनाए रखते हैं। पेड़ बादलों को आकर्षित करते हैं। अनाज, फल, सब्जी, दूध - सब प्रकृति से मिलता है। 70% दवाइयाँ पेड़-पौधों से बनती हैं। नीम, तुलसी, अश्वगंधा हमारे पारंपरिक ज्ञान हैं। जंगल गर्मी कम करते हैं, बाढ़ रोकते हैं, मिट्टी का कटाव रोकते हैं। हरे-भरे पेड़, नदी, पहाड़ देखकर मन शांत होता है।

## पर्यावरण प्रदूषण के प्रकार और कारण

आज पर्यावरण के सामने सबसे बड़ा खतरा प्रदूषण है। वायु प्रदूषण- फैक्ट्रियों का धुआँ, गाड़ियों का धुआँ, पटाखे, कचरा जलाना, जंगलों का कटना, इनके प्रभाव अस्थमा, सांस की बीमारी, एसिड रेन, ग्लोबल वार्मिंग दिल्ली-एनसीआर में सर्दियों में एंजुआई 400+ तक चला जाता है। यह बहुत खतरनाक है। जल प्रदूषण-फैक्ट्रियों का गंदा पानी नदियों में, प्लास्टिक, पूजा सामग्री, कीटनाशक, इनके प्रभाव गंगा-यमुना जैसी नदियाँ गंदी, मछलियाँ मरना, पीने का पानी खराब रिपोर्ट के अनुसार भारत में 70% पानी प्रदूषित है। मृदा प्रदूषण-ज्यादा कीटनाशक, प्लास्टिक, कचरा जमीन में दबाना, इनके प्रभाव जमीन की उर्वरकता खत्म, अनाज में जहर। ध्वनि प्रदूषण-तेज डीजे, हॉर्न, लाउडस्पीकर, मशीनें, इनके प्रभाव बहरेपन, सिरदर्द, तनाव, नींद न आना। प्लास्टिक प्रदूषण भारत हर साल 3.5 मिलियन टन प्लास्टिक कचरा पैदा करता है। प्लास्टिक 500 साल तक नहीं गलता। इनके प्रभाव समुद्री जीव इसे खाकर मर जाते हैं।

## पर्यावरण की वर्तमान समस्याएँ



ग्लोबल वार्मिंग और जलवायु परिवर्तन-कारखानों और गाड़ियों से सीओ<sub>2</sub> बढ़ रही है। इससे धरती का तापमान बढ़ रहा है। ग्लेशियर पिघल रहे हैं, समुद्र का स्तर बढ़ रहा है। 2025 में भारत में हीटवेव 50°C तक गई। वनों की कटाई-भारत में हर साल हजारों हेक्टेयर जंगल कट रहे हैं। पेड़ कटने से जानवरों का घर उजड़ रहा है। मानसून अनियमित हो रहा है। जैव विविधता का नुकसान-हर दिन दुनिया से 3 प्रजातियाँ लुप्त हो रही हैं। भारत में बाघ, गैंडा, डॉल्फिन खतरे में हैं। जल संकट-नीति आयोग की रिपोर्ट कहती है 2030 तक भारत के 40% शहरों में पानी नहीं बचेगा। भूजल तेजी से घट रहा है।

पर्यावरण संरक्षण के उपाय- सरकार के स्तर पर-कानून: वन संरक्षण अधिनियम 1980, पर्यावरण संरक्षण अधिनियम 1986, जल प्रदूषण अधिनियम, अभियान: स्वच्छ भारत अभियान, नमामि गंगे, एक पेड़ माँ के नाम, हरित भारत मिशन, नवीकरणीय ऊर्जा: सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा को बढ़ावा। भारत 2070 तक नेट जीरो का लक्ष्य रखता है। समाज और व्यक्ति के स्तर पर - "5 आर" का नियम- मना करें: प्लास्टिक बैग, थर्मिकोल को ना कहें, कम करें: पानी, बिजली, कागज का उपयोग कम करें, दोबारा उपयोग: बोतल, बैग, डिब्बे फिर से इस्तेमाल करें, रीसायकल: कचरे को अलग-अलग डिब्बे में डालें, फिर से लगाएँ: हर त्योहार पर 1 पेड़ लगाएँ। दैनिक जीवन में छोटे कदम-पानी बचाएँ: ब्रश करते समय नल बंद, आरओ का बचा पानी पौधों में, बिजली बचाएँ: काम न हो तो पंखा-लाइट बंद, 5 स्टार उपकरण खरीदें, सार्वजनिक



वाहन: हफ्ते में 2 दिन मेट्रो/बस/साइकिल, पेड़ लगाएँ: जन्मदिन, शादी की सालगिरह पर पेड़ लगाना शुरू करें, जैविक खेती: घर में गमले में सब्जी उगाएँ, कीटनाशक कम करें, कचरा अलग करें: गीला-सूखा कचरा अलग डस्टबिन में डालें।

### भारत की पर्यावरण संस्कृति

भारत में प्रकृति की पूजा हजारों साल से होती है। नदियों को माँ माना जाता है। गंगा, यमुना, नर्मदा, पेड़ों की पूजा, पीपल, बरगद, तुलसी, पर्व: वट सावित्री, तुलसी विवाह, हरियाली तीज, आदिवासी जीवन: "जंगल बचाओ तो जीवन बचेगा" का सिद्धांत, चिपको आंदोलन 1974 में महिलाओं ने पेड़ों को गले लगाकर बचाया था। यह दुनिया का सबसे बड़ा पर्यावरण आंदोलन बना।

### पर्यावरण और आर्थिक विकास

कुछ लोग कहते हैं "विकास के लिए पर्यावरण को नुकसान होगा"। लेकिन यह सच नहीं है।

हरित विकास ही असली विकास है। सौर ऊर्जा से रोजगार बढ़े, जैविक खेती से किसान की आय दोगुनी, इको-टूरिज्म से गाँवों की अर्थव्यवस्था, स्वच्छ हवा से अस्पताल का खर्च बचेगा। छात्रों और युवाओं की भूमिका भी बदलाव ला सकती हैं जैसे स्कूल-कॉलेज में इको क्लब बनाना, सोशल मीडिया पर जागरूकता फैलाना, प्लास्टिक फ्री कैम्पेन चलाना, हर शनिवार 1 घंटा सफाई अभियान, "एक छात्र - एक पेड़" अभियान।

### सोच बदलिए, देश बदलेगा

- प्रदूषण का मतलब सिर्फ़ खराब हवा नहीं, बल्कि हमारे आसपास की गंदगी भी है।
- याद रखें, सड़क पर फेंका गया एक छोटा सा टैपर भी पर्यावरण के लिए बड़ा खतरा है।

**स्वामी विवेकानंद ने कहा था - "प्रकृति से लो, पर प्रकृति को भी दो"।**

पर्यावरण कोई दान नहीं माँग रहा। वह बस हमसे उतना ही चाहता है जितना हम उससे लेते हैं। यदि आज हमने पेड़ नहीं लगाए, पानी नहीं बचाया, प्रदूषण नहीं रोका - तो आने वाली पीढ़ियों को सिर्फ़ तस्वीरों में नदी, जंगल और साफ़ हवा मिलेगी।

पर्यावरण बचाना मतलब अपना भविष्य बचाना है। यह काम एक दिन में नहीं होगा। लेकिन यदि हर व्यक्ति आज से एक छोटा कदम उठाए, तो 2030 तक भारत फिर से "हरा-भरा" हो सकता है।

स्वामी विवेकानंद ने कहा था - "प्रकृति से लो, पर प्रकृति को भी दो"।

**आइए संकल्प लें:**

**"मैं पर्यावरण का दोस्त बनूँगा, मैं कचरा नहीं फैलाऊँगा।**

**मैं पेड़ लगाऊँगा, मैं पानी बचाऊँगा।**

**क्योंकि धरती है तो हम हैं।"**

**मीतू शर्मा**

वरिष्ठ प्रबंधक (आईटी), HUDCO



## आधुनिक कार्यस्थल और हिंदी: एक प्रभावी सेतु

21वीं सदी के वैश्विक परिदृश्य में, भारत एक ऐसी शक्ति के रूप में उभरा है जो न केवल अपनी आर्थिक प्रगति से दुनिया को प्रभावित कर रहा है, बल्कि अपनी सांस्कृतिक और भाषायी जड़ों को भी सशक्त कर रहा है। विश्व के बड़े-बड़े अर्थतंत्र आज भारत की ओर एक ऐसे साझेदार के रूप में देख रहे हैं जो अपनी परंपराओं से जुड़ा रहते हुए भी आधुनिकता की हर कसौटी पर खरा उतर रहा है। इसी विकास यात्रा का एक महत्वपूर्ण आयाम है-कार्यस्थल पर हिंदी का उपयोग।

एक लंबे समय तक यह धारणा रही कि व्यावसायिक दक्षता और आधुनिकता का पर्याय केवल अंग्रेजी हो सकती है। दफ्तरों में, बैठकों में, प्रस्तुतियों में-हर जगह अंग्रेजी को ही श्रेष्ठता और व्यावसायिकता का प्रतीक माना जाता रहा। इस मानसिकता ने न जाने कितनी प्रतिभाओं को केवल इसलिए हाशिये पर धकेल दिया क्योंकि वे अपनी बात मातृभाषा में उतनी सहजता से नहीं रख पाती थीं, जितनी अंग्रेजी में उनसे अपेक्षा की जाती थी। लेकिन प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में यह धारणा पूरी तरह बदल चुकी है। आज हिंदी केवल एक भाषा नहीं, बल्कि आधुनिक कार्यस्थल पर संवाद, दक्षता और समावेशिता का एक 'प्रभावी सेतु' बन गई है-एक ऐसा सेतु जो परंपरा और प्रगति, स्थानीयता और वैश्विकता, तथा जनता और शासन के बीच की दूरियों को पाट रहा है।

### आधुनिक कार्यस्थल: भाषा की बदलती परिभाषा

कार्यस्थल का अर्थ केवल चार दीवारों के बीच बैठकर काम करना नहीं है; यह विचारों का आदान-प्रदान, निर्णयों का क्रियान्वयन और जन-भागीदारी का केंद्र है। आज का कार्यस्थल एक जीवंत पारिस्थितिकी तंत्र है, जहाँ अलग-अलग पृष्ठभूमि, भाषा और संस्कृति के लोग मिलकर एक साझा लक्ष्य की दिशा में काम करते हैं। ऐसे में भाषा केवल संवाद का माध्यम नहीं रह जाती, बल्कि वह उस संस्कृति की परिचायक बन जाती है जिसमें संगठन कार्य करता है।

जब हम 'समावेशी विकास' की बात करते हैं, तो भाषा सबसे बड़ा माध्यम बनती है। यदि देश की एक बड़ी आबादी हिंदी समझती है और उसमें सहज है, तो प्रशासनिक कामकाज को उसी भाषा में ढालना न केवल तार्किक है, बल्कि लोकतांत्रिक भी है। लोकतंत्र की सच्ची पहचान यही है कि नीतियां और सेवाएं आम आदमी की भाषा में उस तक पहुँचें, न कि वह किसी विदेशी भाषा की बाध्यता के कारण अपने ही अधिकारों से वंचित रह जाए।

आज के कॉर्पोरेट और सरकारी दफ्तरों में हिंदी का प्रयोग अब केवल 'अनुवाद' तक सीमित नहीं है, बल्कि यह एक ऐसी 'कार्य-संस्कृति' के रूप में विकसित हो रहा है जो कर्मचारियों को अधिक आत्मविश्वास प्रदान करती है। जब कोई कर्मचारी अपनी बात अपनी भाषा में रख पाता है, तो उसकी रचनात्मकता खुलकर सामने आती है, उसका आत्मविश्वास बढ़ता है और वह संगठन के साथ भावनात्मक रूप से भी जुड़ाव महसूस करता है। यह जुड़ाव अंततः संगठन की उत्पादकता और सामूहिक सफलता में परिलक्षित होता है।



## प्रधानमंत्री जी की पहल: हिंदी को 'प्रशासनिक संबल' बनाना

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने सत्ता में आते ही हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं को गौरव दिलाने का जो बीड़ा उठाया, उसके परिणाम आज सरकारी कामकाज के हर स्तर पर दिखाई देते हैं। यह केवल एक नीतिगत निर्णय नहीं था, बल्कि एक व्यापक सोच का परिणाम था—यह विश्वास कि कोई भी राष्ट्र अपनी भाषा को पीछे छोड़कर सच्चे अर्थों में आत्मनिर्भर और आत्मविश्वासी नहीं बन सकता।

### 1. नीतिगत ढांचे का सुदृढ़ीकरण

केंद्रीय हिंदी समिति के माध्यम से यह सुनिश्चित किया गया है कि राजभाषा का उपयोग मात्र दिखावा न रहे। सरकारी दफ्तरों में नोटिंग, ड्राफ्टिंग और प्रशासनिक पत्राचार के लिए हिंदी को प्राथमिकता देने के सख्त दिशा निर्देश दिए गए हैं। समय-समय पर होने वाली समीक्षा बैठकों में मंत्रालयों और विभागों को यह सुनिश्चित करने के लिए कहा जाता है कि राजभाषा नीति का कार्यान्वयन केवल कागजों तक सीमित न रहकर व्यवहार में भी दिखे। इसके लिए वार्षिक लक्ष्य निर्धारित किए जाते हैं और उनकी प्रगति की नियमित निगरानी की जाती है।

### 2. तकनीकी नवाचार और 'भाषिणी'

प्रधानमंत्री जी ने हिंदी को डिजिटल युग के अनुकूल बनाने के लिए 'भाषिणी' जैसा क्रांतिकारी प्लेटफॉर्म लॉन्च किया। यह एआई-आधारित टूल सरकारी कामकाज में भाषा की बाधा को समाप्त कर रहा है, जिससे 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' का सपना साकार हो रहा है। भाषिणी के माध्यम से दस्तावेजों का त्वरित अनुवाद, वाक् से पाठ (स्पीच-टू-टेक्स्ट) और पाठ से वाक् (टेक्स्ट-टू-स्पीच) जैसी सुविधाएं उपलब्ध हो रही हैं, जिससे न केवल सरकारी कामकाज सरल हुआ है बल्कि आम नागरिक भी सरकारी सेवाओं से अपनी भाषा में सहजता से जुड़ पा रहे हैं। यह पहल तकनीक और भाषा के संगम का एक जीवंत उदाहरण है, जो यह सिद्ध करती है कि आधुनिकता और मातृभाषा एक-दूसरे की विरोधी नहीं, बल्कि पूरक हैं।

### 3. शिक्षा और रोजगार का एकीकरण

जी, नीट और अन्य प्रतियोगी परीक्षाओं का भारतीय भाषाओं में आयोजन, युवाओं को भाषायी संकोच से मुक्त कर रहा है। इससे पहले लाखों प्रतिभाशाली विद्यार्थी केवल भाषा की बाधा के कारण अपने सपनों से समझौता करने पर मजबूर हो जाते थे। अब जब तकनीकी और चिकित्सा शिक्षा जैसे क्षेत्रों के द्वार हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं में खुल चुके हैं, तो प्रतिभा का सही मूल्यांकन भाषा की दक्षता से नहीं, बल्कि वास्तविक ज्ञान और कौशल से होने लगा है। यह कदम सामाजिक न्याय और समान अवसर की दिशा में एक ऐतिहासिक पहल है।

## संवाद, दक्षता और समावेशिता: सेतु के तीन स्तंभ

हिंदी इन तीन स्तंभों पर आधारित होकर संगठन की सफलता में योगदान दे रही है। आइए इन तीनों स्तंभों को विस्तार से समझें।

संवाद : स्थानीय भाषा में संवाद जनता और सरकार के बीच के 'विश्वास के अंतर' को कम करता है। जब कोई सरकारी अधिकारी या कॉर्पोरेट प्रतिनिधि आम नागरिक से उसकी अपनी भाषा में बात करता है, तो वह संवाद केवल सूचना का आदान-प्रदान नहीं रह जाता, बल्कि वह एक भावनात्मक जुड़ाव का माध्यम बन जाता है। इससे पारदर्शिता बढ़ती है, गलतफहमियां कम होती हैं और नीतियों के प्रति जनता का विश्वास मजबूत होता है।



दक्षता: विदेशी भाषा के 'मानसिक दबाव' को हटाकर, मातृभाषा में काम करना रचनात्मकता और निर्णय लेने की गति को बढ़ाता है। शोध बताते हैं कि व्यक्ति अपनी मातृभाषा में सोचते समय अधिक तेजी से और स्पष्टता से निर्णय ले पाता है, क्योंकि उसे भाषा के अनुवाद की अतिरिक्त मानसिक प्रक्रिया से नहीं गुजरना पड़ता। इससे न केवल समय की बचत होती है, बल्कि निर्णयों की गुणवत्ता भी बेहतर होती है।

समावेशिता: जब नीतियां और सेवाएं हिंदी में उपलब्ध होती हैं, तो समाज का अंतिम व्यक्ति भी स्वयं को शासन का हिस्सा महसूस करता है। यह समावेशिता ही लोकतंत्र की वास्तविक कसौटी है। एक ऐसा तंत्र जिसमें भाषा किसी के लिए बाधा नहीं बल्कि सहभागिता का माध्यम बनती है, वही सच्चे अर्थों में जन-केंद्रित शासन कहलाने का अधिकारी है।

### हडको का योगदान: हिंदी को कार्य-भाषा के रूप में सशक्त बनाना

हडको ने राजभाषा नीति के कार्यान्वयन में एक अनुकरणीय भूमिका निभाई है। हडको न केवल सरकारी निर्देशों का पालन कर रहा है, बल्कि हिंदी को अपनी संगठनात्मक संस्कृति का अभिन्न अंग बनाने के लिए सक्रिय प्रयास कर रहा है। इसके विभिन्न आयामों को निम्नलिखित बिंदुओं के माध्यम से समझा जा सकता है:

#### 1. डिजिटल माध्यमों का प्रयोग

हडको ने अपने आधिकारिक डिजिटल प्लेटफार्मों और सोशल मीडिया पर हिंदी का व्यापक उपयोग सुनिश्चित किया है। निगम की वेबसाइट और मोबाइल एप्लिकेशन में हिंदी के समावेश से यह सुनिश्चित होता है कि शहरी विकास संबंधी योजनाएं आम नागरिकों तक उनकी अपनी भाषा में पहुंचें। इससे उन नागरिकों को विशेष लाभ मिलता है जो अंग्रेजी में सहज नहीं हैं, लेकिन आवास और शहरी विकास से जुड़ी योजनाओं का लाभ उठाना चाहते हैं। डिजिटल इंडिया के इस युग में, यह सुनिश्चित करना कि तकनीक भाषा की खाई को पाटे, न कि उसे और चौड़ा करे, एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है।

#### 2. हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन

निगम समय-समय पर अपने अधिकारियों और कर्मचारियों के लिए हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन करता है। इन कार्यशालाओं का उद्देश्य राजभाषा नियमों की जानकारी देना और प्रशासनिक हिंदी के उपयोग में आने वाली हिचकिचाहट को दूर करना है। इसमें 'राजभाषा हिंदी में टिप्पणी एवं मसौदा लेखन' जैसे व्यावहारिक विषयों पर विशेष ध्यान दिया जाता है। ये कार्यशालाएं कर्मचारियों को न केवल भाषायी दृष्टि से सक्षम बनाती हैं, बल्कि उन्हें यह विश्वास भी दिलाती हैं कि हिंदी में लिखा गया प्रशासनिक पत्र या टिप्पणी उतनी ही प्रभावी और पेशेवर हो सकती है जितनी अंग्रेजी में।

#### 3. राजभाषा पखवाड़ा और पुरस्कार योजना

हडको प्रत्येक वर्ष 'राजभाषा पखवाड़ा' मनाता है। इस दौरान निबंध लेखन, वाद-विवाद, हिंदी टंकण (टाइपिंग) और कविता पाठ जैसी प्रतियोगिताएं आयोजित की जाती हैं। ये प्रतियोगिताएं कर्मचारियों के भीतर हिंदी के प्रति रुचि जगाने और उनकी भाषायी क्षमताओं को निखारने का एक सृजनात्मक मंच प्रदान करती हैं। इसके अतिरिक्त, जो कर्मचारी अपने दैनिक सरकारी कामकाज में हिंदी का सर्वाधिक उपयोग करते हैं, उन्हें 'राजभाषा पुरस्कार' देकर प्रोत्साहित किया जाता है। यह प्रोत्साहन योजना कर्मचारियों में एक स्वस्थ प्रतिस्पर्धा की भावना पैदा करती है, जिससे हिंदी का प्रयोग स्वाभाविक रूप से बढ़ता जाता है।



#### 4. तकनीकी शब्दावली का सरलीकरण

हडको शहरी नियोजन, निर्माण और वित्त के क्षेत्र में कार्य करता है, जिसमें तकनीकी शब्दावली का बहुत महत्व है। निगम इन तकनीकी शब्दों का हिंदी रूपांतरण सरल और सुबोध रूप में करने का प्रयास कर रहा है, ताकि हिंदी माध्यम के इंजीनियर और वित्त विशेषज्ञ भी बिना किसी जटिलता के कार्य कर सकें। यह प्रयास विशेष रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि तकनीकी क्षेत्रों में अक्सर हिंदी शब्दावली को क्लिष्ट और दुरूह माना जाता रहा है। हडको का यह प्रयास इस धारणा को तोड़ने की दिशा में एक ठोस कदम है।

#### 5. राजभाषा अनुपालन की निगरानी

हडको में एक समर्पित राजभाषा अनुभाग है, जो तिमाही प्रगति रिपोर्ट के माध्यम से हिंदी के कार्यान्वयन की निरंतर समीक्षा करता है। निगम की वार्षिक रिपोर्ट और अन्य प्रकाशित सामग्री का द्विभाषी प्रकाशन अनिवार्य किया गया है। यह सुनिश्चित करता है कि राजभाषा नीति केवल औपचारिकता न बनकर एक सतत और मापने योग्य प्रक्रिया बने, जिसकी जवाबदेही स्पष्ट रूप से निर्धारित हो।

#### चुनौतियां और समाधान

यह स्वीकार करना भी आवश्यक है कि कार्यस्थल पर हिंदी को पूरी तरह स्थापित करने की राह में कुछ चुनौतियां भी हैं। तकनीकी और वित्तीय क्षेत्रों में अंग्रेजी शब्दावली का इतना गहरा प्रभाव रहा है कि उसे हिंदी में ढालना समय और प्रयास दोनों मांगता है। इसके अलावा, कई कर्मचारी वर्षों से अंग्रेजी में काम करने के अभ्यस्त होने के कारण शुरुआत में हिंदी अपनाने में झिझक महसूस करते हैं।

इन चुनौतियों का समाधान निरंतर प्रशिक्षण, प्रोत्साहन और तकनीकी सहायता में निहित है। जब कर्मचारियों को यह अनुभव होता है कि हिंदी में काम करना उनके लिए बोझ नहीं बल्कि सुविधा है, तो यह झिझक स्वाभाविक रूप से समाप्त हो जाती है। भाषिणी जैसे एआई उपकरण इस दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं, क्योंकि वे अनुवाद और भाषा-रूपांतरण की प्रक्रिया को सरल और त्वरित बनाते हैं।

#### भविष्य की राह: हिंदी का वैश्विक और तकनीकी विस्तार

हमें यह समझने की आवश्यकता है कि हिंदी किसी भाषा के विरुद्ध नहीं है; यह तो सभी भाषाओं को साथ लेकर चलने वाला एक सेतु है। भारत जैसे बहुभाषी देश में हिंदी का उद्देश्य किसी अन्य भाषा को कमतर आंकना नहीं, बल्कि एक ऐसा साझा माध्यम प्रदान करना है जो विविधता में एकता के सिद्धांत को सुदृढ़ करे। 'हिंदी शब्दसिंधु' और अन्य डिजिटल शब्दकोशों के माध्यम से हम हिंदी को वैज्ञानिक और आधुनिक युग की जरूरतों के अनुकूल बना रहे हैं।

आज का आधुनिक कार्यस्थल वही है, जहाँ तकनीक और भाषा का मेल हो। कृत्रिम बुद्धिमत्ता, मशीन लर्निंग और स्वचालन के इस युग में, यह और भी महत्वपूर्ण हो जाता है कि तकनीक भाषायी विविधता का सम्मान करे। जब एआई उपकरण हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं में उतनी ही दक्षता से काम करेंगे जितना अंग्रेजी में, तब वास्तविक अर्थों में डिजिटल समावेशिता की उपलब्धि होगी। हडको जैसे संस्थान अपनी कार्य-प्रणाली में हिंदी को प्राथमिकता देकर यह सिद्ध कर रहे हैं कि विकास की गति और भाषा का गौरव साथ-साथ चल सकते हैं।



आने वाले वर्षों में, यह अपेक्षा की जा सकती है कि अधिक से अधिक सरकारी और निजी संस्थान अपनी आंतरिक प्रक्रियाओं- भर्ती, प्रशिक्षण, ग्राहक सेवा और आंतरिक संचार—में हिंदी को प्रमुखता देंगे। यह न केवल भाषायी गौरव की बात होगी, बल्कि यह व्यावसायिक दृष्टि से भी लाभकारी सिद्ध होगा, क्योंकि इससे संगठनों की पहुंच उस विशाल जनसंख्या तक बढ़ेगी जो हिंदी में सहज है।

‘आधुनिक कार्यस्थल और हिंदी’ का यह मेल भारत की नई पहचान है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में चल रही ये पहलें और हडको जैसे निगमों का सक्रिय योगदान यह स्पष्ट करता है कि हम एक ऐसी विकसित अर्थव्यवस्था की ओर बढ़ रहे हैं जहाँ गौरव के साथ अपनी भाषा में काम करना ही ‘सफलता का प्रमाण’ है। हिंदी आज केवल इतिहास की भाषा नहीं है, बल्कि यह भविष्य की चुनौतियों का सामना करने वाली, तकनीक से लैस, और समावेशी भारत की ‘आवाज’ है। जिस प्रकार एक सेतु दो किनारों को जोड़कर आवागमन को सुगम बनाता है, उसी प्रकार हिंदी परंपरा और आधुनिकता, स्थानीयता और वैश्विकता, तथा जनता और शासन के बीच की दूरी को पाट रही है। यह ‘सेतु’ जितना मजबूत होगा, भारत की प्रगति उतनी ही तेज और सर्वव्यापी होगी। आधुनिक कार्यस्थल पर हिंदी की यह यात्रा केवल एक भाषायी परिवर्तन नहीं, बल्कि एक सांस्कृतिक पुनर्जागरण है- जो यह सिद्ध करता है कि प्रगति और परंपरा साथ-साथ चलकर ही एक सशक्त, आत्मनिर्भर और गौरवशाली भारत का निर्माण कर सकते हैं।

**यशोदीप सिंह**

प्रशिक्षु अधिकारी (परि.), हडको





## अंतरराष्ट्रीय योग दिवस-2026 : हडको की प्रेरक सहभागिता

### “योग: कर्मसु कौशलम्”

भारतीय संस्कृति की सबसे बड़ी विशेषता यह रही है कि उसने केवल भौतिक उन्नति का मार्ग नहीं दिखाया, बल्कि मनुष्य के समग्र विकास पर भी समान रूप से बल दिया। योग इसी समृद्ध परंपरा की ऐसी अमूल्य देन है, जिसने हजारों वर्षों की यात्रा तय करते हुए आज सम्पूर्ण विश्व में अपनी विशिष्ट पहचान बनाई है। बदलती जीवनशैली, बढ़ते तनाव और व्यस्त दिनचर्या के बीच योग पहले से कहीं अधिक प्रासंगिक दिखाई देता है।

‘योग’ शब्द संस्कृत धातु युज् से बना है, जिसका अर्थ है—जोड़ना। शरीर, मन और विचारों के बीच संतुलन स्थापित करना ही योग का मूल उद्देश्य है। महर्षि पतंजलि ने योग को एक व्यवस्थित दर्शन के रूप में प्रस्तुत किया, जबकि श्रीमद्भगवद्गीता में इसे जीवन की सफलता और आत्मानुशासन का आधार बताया गया है। भारतीय परंपरा में योग केवल व्यायाम नहीं, बल्कि जीवन जीने की एक संतुलित पद्धति माना गया है।

आज आधुनिक चिकित्सा विज्ञान भी योग के महत्व को स्वीकार करता है। नियमित योगाभ्यास तनाव कम करने, शारीरिक लचीलापन बढ़ाने, मानसिक एकाग्रता विकसित करने तथा स्वस्थ जीवनशैली अपनाने में सहायक सिद्ध हुआ है। यही कारण है कि विद्यालयों, विश्वविद्यालयों, कॉर्पोरेट संस्थानों और सरकारी संगठनों में भी योग को बढ़ावा दिया जा रहा है।



भारत के प्रयासों से वर्ष 2014 में संयुक्त राष्ट्र महासभा ने 21 जून को अंतरराष्ट्रीय योग दिवस घोषित किया। तब से प्रत्येक वर्ष यह दिवस विश्वभर में उत्साहपूर्वक मनाया जा रहा है। वर्ष 2026 की थीम इस बात पर बल देती है कि स्वस्थ जीवन केवल लंबी आयु का नहीं, बल्कि प्रत्येक आयु में सक्रिय, संतुलित और ऊर्जावान बने रहने का नाम है।

इसी भावना को ध्यान में रखते हुए हाउसिंग एंड अर्बन डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन लिमिटेड (हडको) ने 21 जून, 2026 को अपने

मुख्यालय, नई दिल्ली सहित देशभर के सभी क्षेत्रीय एवं विकास कार्यालयों में अंतरराष्ट्रीय योग दिवस का उत्साहपूर्वक आयोजन किया। इन कार्यक्रमों में अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने बड़ी संख्या में भाग लेकर योग को स्वस्थ जीवनशैली का आधार बनाने का संदेश दिया।



मुख्यालय में आयोजित कार्यक्रम में हडको के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, अधिकारियों तथा कर्मचारियों ने सहभागिता की। आयुष मंत्रालय के मार्गदर्शन तथा मोरारजी देसाई राष्ट्रीय योग संस्थान, दिल्ली विकास प्राधिकरण, आद्या कौशलम ट्रस्ट और समर्पण सेवा ट्रस्ट के सहयोग से आयोजित इस सत्र में प्रतिभागियों ने कॉमन योग प्रोटोकॉल के अनुसार विभिन्न योगासन, प्राणायाम और ध्यान का अभ्यास किया। शांत वातावरण में सामूहिक योगाभ्यास ने स्वास्थ्य, अनुशासन और सकारात्मक ऊर्जा का सुंदर संदेश दिया।

मुख्यालय के साथ-साथ हडको के सभी क्षेत्रीय एवं विकास कार्यालयों में भी योग दिवस पूरे उत्साह के साथ मनाया गया। विभिन्न कार्यालयों में अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने सामूहिक योगाभ्यास, प्राणायाम और ध्यान में भाग लिया। कई स्थानों पर योग विशेषज्ञों ने नियमित योगाभ्यास के लाभों पर प्रकाश डालते हुए बताया कि यह तनाव कम करने, कार्यक्षमता बढ़ाने तथा मानसिक संतुलन बनाए रखने का सरल और प्रभावी माध्यम है।



इन आयोजनों की विशेषता यह रही कि वे केवल औपचारिक कार्यक्रम बनकर नहीं रह गए। कुछ समय के लिए सभी कर्मचारी अपने दैनिक कार्यों से अलग होकर एक साझा उद्देश्य-स्वस्थ जीवन-के लिए एकत्र हुए। सामूहिक योगाभ्यास ने न केवल स्वास्थ्य के प्रति जागरुकता बढ़ाई, बल्कि सहयोग, आत्मीयता और सकारात्मक कार्यसंस्कृति की भावना को भी मजबूत किया।





आज अधिकांश कार्यस्थलों पर लंबे समय तक बैठकर कार्य करना, समयबद्ध लक्ष्य और बढ़ता मानसिक दबाव सामान्य बात हो गई है। ऐसे वातावरण में योग केवल शारीरिक स्वास्थ्य का साधन नहीं, बल्कि मानसिक संतुलन और कार्यकुशलता बनाए रखने का भी प्रभावी माध्यम है। नियमित योगाभ्यास से एकाग्रता, आत्मविश्वास और सकारात्मक सोच का विकास होता है, जिसका सीधा प्रभाव व्यक्ति के कार्य और व्यवहार में दिखाई देता है।

हडको सदैव यह मानता रहा है कि किसी भी संस्था की वास्तविक शक्ति उसके कर्मचारी होते हैं। स्वस्थ, ऊर्जावान और प्रेरित मानव संसाधन ही संगठन की निरंतर प्रगति का आधार बनते हैं। अंतरराष्ट्रीय योग दिवस-2026 के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम इसी सोच का प्रतिबिंब थे। देशभर के विभिन्न कार्यालयों में लगभग 600 से अधिक अधिकारियों एवं कर्मचारियों की सक्रिय सहभागिता ने इस आयोजन को और अधिक सार्थक बनाया।

योग का संदेश अत्यंत सरल है—यदि प्रतिदिन कुछ समय स्वयं के लिए निकाला जाए, तो जीवन में सकारात्मक परिवर्तन संभव है। स्वस्थ शरीर, शांत मन और संतुलित जीवन केवल व्यक्तिगत उपलब्धि नहीं, बल्कि परिवार, कार्यस्थल और समाज के लिए भी समान रूप से महत्वपूर्ण हैं।

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस-2026 के अवसर पर हडको परिवार द्वारा किया गया यह सामूहिक आयोजन स्वस्थ जीवन, सकारात्मक कार्यसंस्कृति और सामूहिक उत्तरदायित्व के प्रति संस्था की प्रतिबद्धता का सशक्त परिचायक है। आशा है कि योग का यह संदेश वर्ष के एक दिन तक सीमित न रहकर प्रत्येक कर्मचारी की दिनचर्या का हिस्सा बनेगा और स्वस्थ, सक्रिय तथा सशक्त भारत के निर्माण में अपना योगदान देता रहेगा।

**हरिषित खंडेलवाल**  
उप प्रबंधक (वित्त), हडको



## डिजिटल युग में गलत सूचना और फेक न्यूज़

आज का युग विज्ञान और प्रौद्योगिकी के तीव्र विकास का युग है। इंटरनेट, स्मार्टफोन और सोशल मीडिया ने पूरी दुनिया को एक-दूसरे से जोड़ दिया है। आज किसी भी घटना की जानकारी कुछ ही सेकंड में दुनिया के एक कोने से दूसरे कोने तक पहुँच सकती है। समाचार पत्रों और टेलीविजन के साथ-साथ फेसबुक, व्हाट्सएप, इंस्टाग्राम, एक्स तथा यूट्यूब जैसे डिजिटल माध्यम सूचना के प्रमुख स्रोत बन चुके हैं। इन माध्यमों ने सूचना तक पहुँच को लोकतांत्रिक बनाया है, लेकिन इनके साथ गलत सूचना और फेक न्यूज़ की समस्या भी तेजी से बढ़ी है। डिजिटल युग में यह समस्या केवल सूचना की विश्वसनीयता तक सीमित नहीं है, बल्कि यह समाज, लोकतंत्र, अर्थव्यवस्था और राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए भी गंभीर चुनौती बन चुकी है।

### फेक न्यूज़ का अर्थ और स्वरूप

फेक न्यूज़ से आशय ऐसी झूठी, मनगढ़ंत, भ्रामक या तोड़-मरोड़कर प्रस्तुत की गई सूचना से है, जिसे वास्तविक समाचार के रूप में लोगों के सामने रखा जाता है। यह किसी समाचार, तस्वीर, वीडियो, ऑडियो या सोशल मीडिया पोस्ट के रूप में हो सकती है। कई बार पुरानी तस्वीर को किसी नई घटना से जोड़ दिया जाता है, किसी वीडियो को गलत संदर्भ में प्रस्तुत किया जाता है या किसी व्यक्ति के बयान को काट-छाँटकर उसका अर्थ बदल दिया जाता है। आधुनिक तकनीक और कृत्रिम बुद्धिमत्ता के विकास ने डीपफेक जैसी तकनीकों को भी जन्म दिया है, जिनकी सहायता से किसी व्यक्ति के चेहरे, आवाज या बयान को इस प्रकार बदला जा सकता है कि वह वास्तविक प्रतीत हो।

हालाँकि गलत सूचना और फेक न्यूज़ शब्दों का अक्सर एक-दूसरे के लिए उपयोग किया जाता है, दोनों में अंतर भी है। गलत सूचना कभी-कभी अनजाने में भी फैल सकती है, जबकि फेक न्यूज़ अक्सर जानबूझकर लोगों को गुमराह करने के उद्देश्य से तैयार की जाती है। दोनों ही स्थितियाँ समाज के लिए हानिकारक हो सकती हैं।

### फेक न्यूज़ के फैलने के कारण

फेक न्यूज़ के तेजी से फैलने का सबसे बड़ा कारण डिजिटल माध्यमों की गति और व्यापक पहुँच है। सोशल मीडिया पर किसी भी सामग्री को साझा करने के लिए किसी संपादकीय जाँच की आवश्यकता नहीं होती। कोई भी व्यक्ति किसी संदेश को कुछ ही सेकंड में हजारों लोगों तक पहुँचा सकता है। सनसनीखेज, भावनात्मक और विवादास्पद सामग्री सामान्य समाचारों की तुलना में अधिक तेजी से फैलती है।

इसके अलावा, लोग अक्सर ऐसी खबरों पर विश्वास कर लेते हैं जो उनकी व्यक्तिगत मान्यताओं या पूर्वाग्रहों के अनुकूल होती हैं। सोशल मीडिया के एल्गोरिदम भी उपयोगकर्ताओं की पसंद के अनुसार सामग्री दिखाते हैं। इससे व्यक्ति एक ऐसे डिजिटल वातावरण में रह सकता है जहाँ उसे बार-बार एक ही प्रकार के विचार और सूचनाएँ दिखाई देती हैं। इसे



‘इको चेंबर’ की स्थिति कहा जाता है। परिणामस्वरूप, व्यक्ति वैकल्पिक दृष्टिकोणों और तथ्यों की जाँच करने से दूर हो सकता है।

फेक न्यूज़ फैलाने के पीछे राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक उद्देश्य भी हो सकते हैं। कुछ लोग राजनीतिक लाभ के लिए झूठी सूचनाएँ फैलाते हैं, जबकि कुछ लोग अधिक क्लिक, व्यू और विज्ञापन आय प्राप्त करने के लिए सनसनीखेज खबरें बनाते हैं। कभी-कभी व्यक्तिगत दुश्मनी, प्रसिद्धि प्राप्त करने की इच्छा या किसी समुदाय के प्रति नफरत भी गलत सूचना के प्रसार का कारण बनती है।

### समाज पर प्रभाव

फेक न्यूज़ का सबसे पहला प्रभाव लोगों में भ्रम और अविश्वास पैदा करना है। जब लोगों को एक ही घटना के बारे में अलग-अलग और परस्पर विरोधी सूचनाएँ मिलती हैं, तो उनके लिए सत्य और असत्य में अंतर करना कठिन हो जाता है। इससे मीडिया, संस्थाओं और सरकार के प्रति लोगों का विश्वास कमजोर हो सकता है।

गलत सूचना सामाजिक सद्भाव को भी प्रभावित कर सकती है। धर्म, जाति, भाषा या क्षेत्र से संबंधित झूठी अफवाहें समुदायों के बीच तनाव पैदा कर सकती हैं। कई बार सोशल मीडिया पर फैली अफवाहें वास्तविक जीवन में हिंसा और कानून-व्यवस्था की समस्याओं का कारण बन जाती हैं। इसलिए फेक न्यूज़ को केवल एक डिजिटल समस्या मानना उचित नहीं है; इसके वास्तविक सामाजिक परिणाम भी हो सकते हैं।

### लोकतंत्र पर प्रभाव

लोकतांत्रिक व्यवस्था में सूचित नागरिकों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। नागरिकों को सही जानकारी के आधार पर अपनी राजनीतिक राय बनानी चाहिए और मतदान करना चाहिए। यदि चुनावों के दौरान झूठी या भ्रामक सूचनाएँ बड़े पैमाने पर फैलती हैं, तो मतदाताओं के निर्णय प्रभावित हो सकते हैं। इससे लोकतांत्रिक प्रक्रिया की निष्पक्षता और विश्वसनीयता पर प्रश्न उठ सकते हैं।

फेक न्यूज़ राजनीतिक नेताओं और संस्थाओं की छवि को भी प्रभावित कर सकती है। किसी व्यक्ति के बारे में झूठी खबर कुछ ही घंटों में लाखों लोगों तक पहुँच सकती है, जबकि उसके खंडन को उतना व्यापक ध्यान नहीं मिलता। इस प्रकार डिजिटल युग में गलत सूचना लोकतंत्र के लिए एक गंभीर चुनौती बन गई है।

### स्वास्थ्य और व्यक्तिगत जीवन पर प्रभाव

स्वास्थ्य के क्षेत्र में गलत सूचना विशेष रूप से खतरनाक हो सकती है। किसी बीमारी, दवा या उपचार के संबंध में बिना वैज्ञानिक आधार वाली जानकारी लोगों को गलत निर्णय लेने के लिए प्रेरित कर सकती है। इससे व्यक्ति आवश्यक चिकित्सा सहायता लेने में देरी कर सकता है या असुरक्षित उपाय अपना सकता है।

व्यक्तिगत स्तर पर भी फेक न्यूज़ गंभीर नुकसान पहुँचा सकती है। किसी व्यक्ति के बारे में झूठी खबर, नकली तस्वीर या भ्रामक वीडियो उसकी प्रतिष्ठा और मानसिक शांति को प्रभावित कर सकता है। सार्वजनिक जीवन से जुड़े लोगों के साथ-साथ सामान्य नागरिक भी डिजिटल अफवाहों के शिकार हो सकते हैं।

### डीपफेक और कृत्रिम बुद्धिमत्ता की चुनौती

कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने फेक न्यूज़ की समस्या को एक नया आयाम दिया है। आज अत्यंत वास्तविक दिखने वाले नकली वीडियो और आवाज़ें तैयार की जा सकती हैं। किसी प्रसिद्ध व्यक्ति के चेहरे पर किसी अन्य व्यक्ति का चेहरा लगाकर या

उसकी आवाज की नकल करके ऐसा वीडियो बनाया जा सकता है जो देखने वाले को वास्तविक लगे। यदि ऐसी सामग्री बड़े पैमाने पर फैलती है, तो लोगों के लिए वास्तविक और कृत्रिम सामग्री में अंतर करना कठिन हो सकता है।

इस चुनौती से निपटने के लिए तकनीकी समाधान, तथ्य-जाँच प्रणाली और जनता में डिजिटल जागरूकता आवश्यक है। भविष्य में 'देखा और विश्वास किया' की प्रवृत्ति के बजाय 'देखा, जाँचा और फिर विश्वास किया' की आदत विकसित करनी होगी।

### समाधान और हमारी जिम्मेदारी

फेक न्यूज़ से निपटने का सबसे प्रभावी उपाय डिजिटल और मीडिया साक्षरता को बढ़ावा देना है। प्रत्येक इंटरनेट उपयोगकर्ता को यह समझना चाहिए कि सोशल मीडिया पर दिखाई देने वाली हर जानकारी सत्य नहीं होती। किसी खबर को आगे भेजने से पहले उसके स्रोत, तारीख, संदर्भ और विश्वसनीयता की जाँच करनी चाहिए।

किसी सनसनीखेज खबर को साझा करने से पहले यह देखना चाहिए कि क्या वही जानकारी विश्वसनीय समाचार संस्थानों या आधिकारिक स्रोतों पर उपलब्ध है। तस्वीरों और वीडियो के पुराने होने या गलत संदर्भ में इस्तेमाल होने की संभावना को भी ध्यान में रखना चाहिए। विशेष रूप से स्वास्थ्य, चुनाव, कानून-व्यवस्था या किसी समुदाय से संबंधित संवेदनशील जानकारी को बिना सत्यापन के साझा नहीं करना चाहिए।

शिक्षण संस्थानों में भी डिजिटल साक्षरता को शिक्षा का हिस्सा बनाया जाना चाहिए। बच्चों और युवाओं को केवल इंटरनेट चलाना ही नहीं, बल्कि इंटरनेट पर उपलब्ध जानकारी का आलोचनात्मक मूल्यांकन करना भी सिखाया जाना चाहिए।

सरकार और सोशल मीडिया कंपनियों की भी महत्वपूर्ण भूमिका है। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म को फर्जी खातों, संगठित दुष्प्रचार और हानिकारक डीपफेक सामग्री की पहचान करने के लिए आधुनिक तकनीकों का उपयोग करना चाहिए। साथ ही, गलत सामग्री को नियंत्रित करने के प्रयासों में अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और नागरिकों के अधिकारों का सम्मान भी आवश्यक है। कानून का उद्देश्य गलत सूचना को रोकना होना चाहिए, न कि वैध विचारों और आलोचना को दबाना।

अंततः, डिजिटल युग में सूचना एक शक्तिशाली साधन है। इसका उपयोग ज्ञान, शिक्षा, जागरूकता और सामाजिक विकास के लिए किया जा सकता है, लेकिन गलत सूचना के माध्यम से यही शक्ति समाज को नुकसान भी पहुँचा सकती है। फेक न्यूज़ से लड़ने के लिए केवल तकनीकी उपाय या सरकारी कानून पर्याप्त नहीं हैं। इसके लिए सरकार, मीडिया, तकनीकी कंपनियों, शिक्षण संस्थानों और आम नागरिकों को मिलकर काम करना होगा।

एक जिम्मेदार डिजिटल नागरिक वही है जो किसी भी सूचना को तुरंत स्वीकार या साझा करने के बजाय उसके सत्यापन का प्रयास करता है। हमें यह समझना होगा कि हर वायरल खबर सच नहीं होती और हर साझा किया गया संदेश विश्वसनीय नहीं होता। इसलिए डिजिटल युग का मूल मंत्र होना चाहिए—“सोचें, जाँचें और फिर साझा करें।” सत्य, जिम्मेदारी और जागरूकता पर आधारित डिजिटल संस्कृति ही एक सुरक्षित, स्वस्थ और सुदृढ़ लोकतांत्रिक समाज का निर्माण कर सकती है।

मयंक मोहन  
पूर्व प्रशिक्षु, हुडको



## जल : जीवन, विज्ञान और आध्यात्म का अद्भुत संगम

जल, नीर, वारि, तोय, सलिल, अम्बु, आपः, जीवन आदि - ये केवल शब्द नहीं, बल्कि जीवन के विभिन्न रूपों की अभिव्यक्ति हैं। "जीवन" शब्द पानी का पर्यावाची है - कहा भी गया है "जलमेव जीवनम्" अर्थात् जल ही जीवन है। इस ब्रह्मांड की उत्पत्ति और जीवन की निरंतरता में जल की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। ऋग्वेद में जल को "आपः" कहा गया है और उसे केवल एक पदार्थ नहीं, बल्कि जीवनदायी शक्ति के रूप में सम्मान दिया गया है। ऋग्वेद के ही "नारदीय सूक्त" में सृष्टि से पूर्व की स्थिति को "अप्रकेतं सलिलं" कहा गया है - अर्थात् एक गहन, अदृश्य, अथाह जल-राशि। आधुनिक विज्ञान भी मानता है कि पृथ्वी पर जीवन की पहली धड़कन समुद्र के जल में ही आरंभ हुई। पृथ्वी का लगभग 70% भाग में जल है, और हमारे शरीर में भी लगभग 70% जल है। यह केवल एक संयोग मात्र नहीं, यह प्रमाण है कि हम उस विराट चेतना का ही अंश हैं।

यह लेख जल के वैज्ञानिक, स्वास्थ्य, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक पहलुओं को संतुलित रूप से समझने का एक प्रयास है।

### शरीर में जल की भूमिका

जल मानव शरीर की लगभग हर महत्वपूर्ण क्रिया में भाग लेता है :-

- शरीर के तापमान को नियंत्रित करता है।
- रक्त के माध्यम से ऑक्सीजन और पोषक तत्वों को कोशिकाओं तक पहुँचाता है।
- पाचन और पोषक तत्वों के अवशोषण में सहायता करता है।
- किडनी के माध्यम से अपशिष्ट पदार्थों को बाहर निकालने में मदद करता है।
- जोड़ों, मस्तिष्क और अन्य अंगों की सुरक्षा में योगदान देता है।

### गर्म और ठंडे पानी का संतुलित उपयोग

आयुर्वेद और आधुनिक स्वास्थ्य विज्ञान दोनों ही यह स्वीकार करते हैं कि पानी का सेवन शरीर की आवश्यकता और परिस्थिति के अनुसार होना चाहिए।

- **हमारे पेट में "जठराग्नि" होती है** — भोजन पचाने वाली अग्नि। भोजन के समय यह अग्नि प्रबल होती है। ऐसे में ठंडा पानी उस अग्नि को मंद कर देता है जिससे पाचन बिगाड़ सकता है। इसलिए भोजन के तुरंत बाद पानी न पीने की सलाह दी जाती है। किंतु जब पेट में जलन हो या पित्त बढ़ जाए, तब शीतल जल अमृत का काम करता है क्योंकि वह अतिरिक्त गर्मी को शांत करता है।



- **सुबह खाली पेट गुनगुना पानी** - पाचन तंत्र को सक्रिय करने और शरीर को हाइड्रेट करने में सहायक होता है।
- **सामान्य तापमान का पानी** - दिनभर, शारीरिक गतिविधियों के अनुसार, शरीर को संतुलित रूप से हाइड्रेट रखने के लिए आवश्यक माना जाता है।

### जल सेवन की सही मात्रा

अक्सर यह कहा जाता है कि हर व्यक्ति को प्रतिदिन 3-4 लीटर पानी पीना चाहिए। वास्तव में पानी की आवश्यकता आयु, वजन, मौसम, शारीरिक गतिविधि और स्वास्थ्य की स्थिति पर निर्भर करती है। सबसे सरल नियम है — प्यास लगने पर ही पानी पीना और शरीर की आवश्यकता को शारीरिक श्रम के अनुसार समझना। अत्यधिक पानी पीना भी उचित नहीं है, क्योंकि इससे शरीर के इलेक्ट्रोलाइट संतुलन पर प्रभाव पड़ सकता है।

### ताँबे के पात्र का जल

भारतीय परंपरा में ताँबे के पात्र में रखा जल, जिसे "ताम्र जल" कहा जाता है, विशेष महत्व रखता है।

### वैज्ञानिक दृष्टि

ताँबे के संपर्क में आने पर पानी में ताँबे के सूक्ष्म आयन ( $Cu^{2+}$ ) आ सकते हैं। वैज्ञानिक अध्ययनों में पाया गया है कि ताँबे में कुछ रोगाणुरोधी गुण होते हैं, जो कुछ हानिकारक बैक्टीरिया की वृद्धि को कम कर सकते हैं।

### पारंपरिक दृष्टि

आयुर्वेदिक परंपरा में ताँबे के पात्र में रातभर रखा जल सुबह पीने की सलाह दी जाती रही है। इसे शरीर में संतुलन और शुद्धि का प्रतीक माना जाता है।

सावधानी: ताँबे के पात्र में पानी को अत्यधिक लंबे समय तक न रखें और ताम्र-जल का सेवन संतुलित मात्रा में ही करें, क्योंकि अधिक ताँबा स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हो सकता है।

### जल का आध्यात्मिक और सांस्कृतिक महत्व

भारतीय संस्कृति में जल को पवित्रता, शुद्धि और जीवन का प्रतीक माना गया है। पूजा, यज्ञ, स्नान, आचमन और संकल्प में जल का उपयोग इसी भाव को प्रकट करता है।

ऋग्वेद का प्रसिद्ध मंत्र में कहा गया है:

"आपो हिष्ठा मयोभुवः"

**अर्थात्** - जल आनंद और कल्याण प्रदान करने वाला है।

भगवद्गीता में जल

भगवद्गीता में जल का उल्लेख कई स्थानों पर हुआ है। भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं:

रसोऽहमप्सु कौन्तेय प्रभास्मि शशिसूर्ययोः।

प्रणवः सर्ववेदेषु शब्दः खे पौरुषं नृषु॥ — गीता 7.8



अर्थ: हे कुन्तीपुत्र! मैं जल में रस हूँ, चन्द्रमा और सूर्य में प्रकाश हूँ, समस्त वेदों में प्रणव (ॐ) हूँ, आकाश में शब्द हूँ और मनुष्यों में पुरुषार्थ हूँ।

विशेष रूप से प्रसो। हमप्सु कौन्तेयष् का अर्थ केवल यह नहीं कि भगवान जल में हैं, बल्कि यह है कि:

- जल की तृप्ति देने की शक्ति वहीं है।
- जल की शीतलता और जीवनदायिनी प्रकृति वहीं है।
- जल का जीवन-सार ही ईश्वर का स्वरूप है।

रहीमदास जी का प्रसिद्ध दोहा और "पानी" का गहरा अर्थ

**रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून।**

**पानी गए न ऊबरे, मोती, मानुष, चून॥**

यहाँ "पानी" का अर्थ केवल जल नहीं, बल्कि मान, सम्मान, विनम्रता और जीवन के सार से भी है। रहीम हमें सिखाते हैं कि जैसे जल के बिना जीवन अधूरा है, वैसे ही मान-सम्मान और मर्यादा के बिना मनुष्य का मूल्य घट जाता है।

क्रोध या दुःख में पीया गया पानी, नकारात्मक ऊर्जा को हमारे शरीर तक पहुंचा सकता है। वहीं, सकारात्मक विचारों के साथ या अभिमंत्रित जल रोगों को ठीक करने में सहायक हो सकता है। आधुनिक क्वांटम भौतिकी भी मानती है कि जल के अणु वातावरण और विचारों के कंपन से प्रभावित होते हैं। मंदिरों में चरणामृत, पवित्र नदियों का जल, तीर्थ स्थानों का जल और बीमार को अभिमंत्रित जल पिलाने की परंपरा इसी सिद्धांत पर आधारित है।

जीवन और मृत्यु की कड़ी: अंतिम बूंद

मृत्यु-शय्या पर गंगाजल या तुलसी-जल क्यों दिया जाता है?

गरुड़ पुराण के अनुसार मृत्यु के समय प्राण कंठ में आकर अटकते हैं और अत्यधिक गर्मी पैदा होती है और प्राण त्यागना बहुत कठिन और कष्टमय हो जाता है। जल उस तपिश को शांत करता है और प्राणों को सुगमता से शरीर त्यागने में मदद करता है। यह इस लोक का अंतिम भोजन है, जो आत्मा को शरीर से विदा होने का संकेत देता है।

जल से मिलने वाली शिक्षा

जल हमें जीवन का एक महत्वपूर्ण संदेश देता है:

- गर्म हो तो भाप बनकर ऊपर उठो।
- ठंड हो तो बर्फ बनकर स्थिर रहो।
- सामान्य हो तो निरंतर बहते रहो और हर परिस्थिति में अपना मार्ग स्वयं बनाओ।

**अर्थात्** – पानी के इन गुणों से प्रेरित होकर हम अपने जीवन को, सम / विषम परिस्थिति के अनुसार, स्वयं को उचित रूप से ढालकर / निर्णय लेकर, सुगम बना सकते हैं।



निष्कर्षतः जल केवल प्यास बुझाने का साधन नहीं, बल्कि जीवन का आधार, प्रकृति का अमूल्य उपहार और मानव सभ्यता का सबसे बड़ा शिक्षक है। वैज्ञानिक दृष्टि से यह हमारे शरीर की प्रत्येक महत्वपूर्ण प्रक्रिया के लिए आवश्यक है और सांस्कृतिक दृष्टि से यह पवित्रता, शांति और जीवन-मूल्यों का प्रतीक है। अतः हमें जल का सम्मान करना चाहिए, उसका संतुलित उपयोग करना चाहिए और उसे व्यर्थ बहने से बचाना चाहिए। यही जल के प्रति सच्ची श्रद्धा और आने वाली पीढ़ियों के प्रति हमारा दायित्व है।

**राकेश कुमार डागर**  
वरि. प्रबंधक (सचि), हुडको





## नए दौर में हिंदी: व्हाट्सएप, मीम्स और सोशल मीडिया

### प्रस्तावना: भाषा की बहती धारा और डिजिटल मोड़

भाषा कोई स्थिर शिलालेख नहीं, बल्कि बहती हुई नदी के समान होती है। समय, भूगोल और तकनीक के मोड़ पर इसका रूप बदलता रहता है। बीसवीं सदी तक जिस हिंदी का विकास मुद्रण माध्यमों (प्रिंट मीडिया), रेडियो और सिनेमा के सहारे हो रहा था, इक्कीसवीं सदी के दूसरे-तीसरे दशक में आकर उस हिंदी को एक अप्रत्याशित और अभूतपूर्व धरातल मिला-डिजिटल स्पेस।

इंटरनेट, स्मार्टफोन, व्हाट्सएप, मीम्स, इंस्टाग्राम, एक्स (पूर्व में ट्विटर) और यूट्यूब जैसे मंचों ने भारतीय समाज की संवाद शैली को पूरी तरह पुनर्गठित कर दिया है। आज हिंदी केवल समाचार पत्रों, साहित्यिक पुस्तकों या सरकारी दफ्तरों के राजभाषा कक्षों तक सीमित नहीं है; वह करोड़ों भारतीयों की उंगलियों के स्पर्श से स्मार्टफोन की स्क्रीन पर हर सेकंड टाइप, शेयर और लाइक हो रही है।

इस डिजिटल क्रांति ने हमारी रोजमर्रा की हिंदी को सिर्फ अभिव्यक्त करने का नया माध्यम ही नहीं दिया, बल्कि भाषा के व्याकरण, शब्दावली, शैली, लिपि और यहाँ तक कि उसके सामाजिक चरित्र को भी मौलिक रूप से बदल दिया है।

### 1. 'हिंग्लिश' और रोमन लिपि का वर्चस्व: नया भाषायी व्यवहार

डिजिटल युग में हिंदी भाषा में आए बदलावों में सबसे पहला और प्रत्यक्ष बदलाव है—देवनागरी लिपि का हास और रोमन लिपि के माध्यम से हिंदी का लिखा जाना, जिसे सामान्य बोलचाल में 'हिंग्लिश' या 'रोमन हिंदी' कहा जाता है।

#### (क) रोमन हिंदी का उभार

व्हाट्सएप और टेक्स्ट मैसेजिंग के शुरुआती दौर में कीबोर्ड मुख्य रूप से अंग्रेजी लेआउट पर आधारित थे। यद्यपि आज 'गूगल वॉइस टाइपिंग' और 'इंडिक कीबोर्ड' के माध्यम से देवनागरी में लिखना बेहद आसान हो गया है, फिर भी तेज गति से चौट करने की होड़ में अधिकांश उपयोगकर्ता रोमन लिपि में ही हिंदी लिखते हैं।

- उदाहरण: "Aap kahan ho\" (आप कहाँ हो?) या "Aaj का मौसम बहुत achha hai-"



## (ख) लिपि-निरपेक्षता और अर्थ की चुनौतियाँ

इस प्रवृत्ति ने एक नई प्रकार की 'लिपि-निरपेक्षता' को जन्म दिया है, जहाँ भाषा तो हिंदी है, लेकिन उसका आवरण अंग्रेजी का है। इसके अपने नुकसान भी हैं; देवनागरी के अनुस्वार, चंद्रबिंदु और तत्सम ध्वनियों का लोप हो जाता है। उदाहरण के लिए, रोमन में लिखा गया शब्द 'खाना' (भोजन) भी हो सकता है और 'खाना' (दराज/अंग) भी। इसके बावजूद, आम जनता के लिए यह संवाद का सबसे सहज और त्वरित माध्यम बन चुका है।

## 2. चैट कल्चर और भाषा का संक्षेपण

व्हाट्सएप और इंस्टेंट मैसेजिंग ने भाषा में 'गति' और 'सुविधा' को सबसे पहला स्थान दे दिया है। इसके परिणामस्वरूप भाषा का संक्षेपण और संकुचन हुआ है।

### (क) ध्वन्यात्मक संक्षेप

जिस प्रकार अंग्रेजी में 'You' का 'U' या 'Are' का 'R' बना, उसी तर्ज पर रोमन हिंदी में भी शब्दों को छोटा किया जाने लगा है:

- 'Kya' → 'K', 'Haan' → 'Hn', 'Nahi' → 'Nhi' / 'N', 'Aap' → 'Ap'

### (ख) वाक्यों का लोप और 'टुकड़ा संवाद'

पहले जहाँ पत्राचार या ईमेल में पूरे वाक्य लिखे जाते थे (उदाहरण "मैं कल समय पर पहुँच जाऊँगा"), वहीं अब व्हाट्सएप चैट में बात टुकड़ों में होती है:

उपयोगकर्ता A: Pahunch gaye?

उपयोगकर्ता B: Bas 5 min.

उपयोगकर्ता A: Ok, fast.

यहाँ भाषा से कारक चिह्न सहायक क्रियाओं और पूर्ण विरामों का लगभग पूरी तरह लोप हो गया है। संवाद अब विचारों के प्रवाह के बजाय 'सूचना के छोटे-छोटे पैकेट्स' में बदल गया है।

## 3. मीम्स: 21वीं सदी का नया भाषायी और सांस्कृतिक मुहावरा

यदि बीसवीं सदी में हिंदी के मुहावरे लोककथाओं, कबीर के दोहों या मुंशी प्रेमचंद की कहानियों से आते थे, तो डिजिटल युग में हिंदी के नए मुहावरे 'मीम्स' से आ रहे हैं। मीम संस्कृति ने हिंदी को एक ऐसा नया आयाम दिया है जहाँ दृश्य और पाठ मिलकर एक नया अर्थ पैदा करते हैं।

[ दृश्य/इमेज ] + [ चुटीली हिंदी पंक्तियाँ ] = [ सांस्कृतिक मुहावरा ]

### (क) सिनेमा और वायरल संवादों का 'मुहावराकरण'

फिल्मों, वेब सीरीज और वायरल वीडियो के संवाद अब रोजमर्रा की हिंदी में मुहावरों की तरह प्रयोग किए जा रहे हैं:



- "सह लेंगे थोड़ा!" (सहनशीलता या मजबूरी जताने के लिए)
- "अरे, कहना क्या चाहते हो?" (अस्पष्टता पर तंज कसने के लिए)
- "अलग ही लेवल है!" (किसी की अजीब या अनूठी हरकत बताने के लिए)
- "देख रहा है विनोद?" (किसी सामाजिक विडंबना की ओर ध्यान खींचने के लिए)

#### (ख) व्यंग्य और वक्रोक्ति का नया रूप



हिंदी साहित्य में जो काम 'वक्रोक्ति' या व्यंग्य रचनाएँ करती थीं, आज वही काम मीम्स पलक झपकाते ही कर देते हैं। राजनीति, खेल, ऑफिस की जिंदगी और पारिवारिक संबंधों की जटिलताओं को मीम्स के माध्यम से जिस तीखे और चुटीले अंदाज में व्यक्त किया जाता है, उसने हिंदी की व्यंग्य-क्षमता को दस गुना बढ़ा दिया है।

#### 4. इमोजी और स्टिकर्स: शब्दहीन संवेदनाएँ

व्हाट्सएप और सोशल मीडिया संवाद ने हिंदी भाषा में एक नया तत्व जोड़ा है—'गैर-शाब्दिक भाषा' या इमोजी और स्टिकर्स।

पारंपरिक संवाद: "आपकी बात सुनकर मुझे बहुत दुख हुआ और मैं आपके साथ हूँ।"

डिजिटल संवाद: "So sad 😞🙏" or simply [हाथ जोड़ने वाला इमोजी]

#### भाषा पर इसका प्रभाव:

**भावनाओं का सरलीकरण:** पहले जहाँ संवेदना व्यक्त करने के लिए शब्दों का चयन करना पड़ता था, अब एक इमोजी वही काम कर देता है।

**संवाद की गति में वृद्धि:** शब्द लिखने का समय बचता है, लेकिन इसके साथ ही भाषायी अभिव्यक्ति की गहराई कम होने का खतरा भी बढ़ता है।

**स्टिकर संस्कृति:** हिंदी में विशेष रूप से बनाए गए व्हाट्सएप स्टिकर्स (जैसे 'प्रणाम', 'जय श्री कृष्णा', 'शुभ प्रभात') ने पारंपरिक भारतीय शिष्टाचार को एक डिजिटल रूप दे दिया है।

#### 5. सोशल मीडिया और हिंदी का लोकतांत्रिकरण

अतीत में, किसी व्यक्ति के लिखे हुए शब्दों को हजारों-लाखों लोगों तक पहुँचाने के लिए किसी समाचार पत्र का संपादक होना, पुस्तक का प्रकाशक होना या किसी बड़ी पत्रिका का लेखक होना आवश्यक था। सोशल मीडिया (फेसबुक, एक्स, इंस्टाग्राम, थ्रेड्स) ने इस व्यवस्था को पूरी तरह ध्वस्त कर दिया है।

- (क) 'गेटकीपर' का खात्मा
- आज हर व्यक्ति जिसके पास स्मार्टफोन और इंटरनेट है, वह एक लेखक, पत्रकार और संपादक है। इसने हिंदी साहित्य और अभिव्यक्ति का लोकतांत्रिकरण किया है:



- गृहिणियाँ अपनी कविताएँ फेसबुक पर साझा कर रही हैं।
- गाँव के युवा यूट्यूब पर अपनी भाषा में अपनी कहानियाँ सुना रहे हैं।
- नए और स्वतंत्र कवि इंस्टाग्राम के माध्यम से लाखों पाठकों तक सीधे पहुँच रहे हैं।

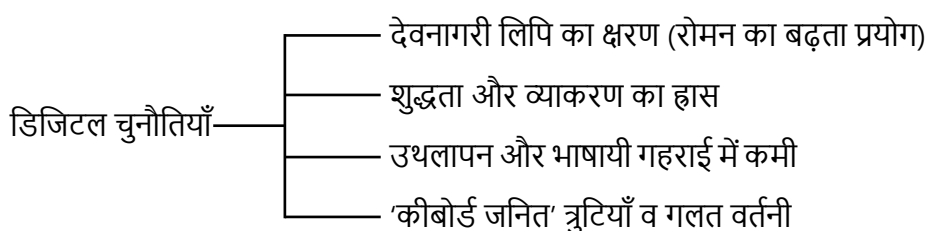
### (ख) आम आदमी की भाषा का मुख्यधारा में आना

इस लोकतांत्रिकरण के कारण अभिजात्य या पांडित्यपूर्ण हिंदी के बजाय 'जनभाषा' सामने आई है। लोग उसी तरह लिख रहे हैं, जैसे वे बोलते हैं। इससे भाषा में कृत्रिमता समाप्त हुई है और एक नया जीवंतपन आया है।

## 6. हिंदी के समक्ष उत्पन्न डिजिटल चुनौतियाँ

जहाँ एक तरफ डिजिटल युग ने हिंदी की पहुँच और लोकप्रियता को असीम विस्तार दिया है, वहीं इसने भाषा के समक्ष कई गंभीर चिंताएँ और चुनौतियाँ भी खड़ी की हैं:

### 1. शुद्धता और मानक व्याकरण का संकट



चैट और सोशल मीडिया पर गति को शुद्धता से अधिक प्राथमिकता दी जाती है। इसके परिणामस्वरूप:

- 'ष', 'श' और 'स' के अंतर का लोप हो रहा है।
- 'ड़' और 'ढ़' की बिंदियाँ गायब हो रही हैं।
- कारक चिह्नों और लिंग-भेद के नियमों की अनदेखी हो रही है।

### 2. शब्द-सामर्थ्य का सिकुड़ना

डिजिटल युग में लोग बहुत सीमित शब्दों का बार-बार प्रयोग कर रहे हैं। जटिल, सूक्ष्म और भावपूर्ण हिंदी शब्दों का स्थान 'अंग्रेजी के आम शब्दों' या 'इमोजी' ने ले लिया है। युवाओं की सक्रिय शब्दावली धीरे-धीरे कम होती जा रही है।

### 3. साहित्य से दूरी

शॉर्ट-फॉर्म कंटेंट के इस दौर में पाठकों का 'अटेंशन स्पैन' (ध्यान केंद्रित करने की अवधि) बहुत घट गया है। लंबी हिंदी कहानियाँ, निबंध या उपन्यास पढ़ने की आदत डिजिटल पीढ़ी में कम हो रही है, जिससे भाषा के गंभीर और वैचारिक पक्ष को नुकसान पहुँच रहा है।



## 7. तकनीक से समाधान: ए आई, वॉयस टाइपिंग और देवनागरी की वापसी

हालाँकि शुरुआती डिजिटल दौर ने रोमन हिंदी को बढ़ावा दिया, लेकिन पिछले कुछ वर्षों में तकनीक के विकास ने देवनागरी लिपि की जबरदस्त वापसी कराई है।

[ वॉयस-टू-टेक्स्ट → व्यक्ति बोलता है → स्क्रीन पर शुद्ध देवनागरी में टाइप होता है ]

- वॉयस टाइपिंग:** गूगल वॉयस और एलेक्साधिसिरी जैसे एआई टूल्स के कारण अब टाइप करने की भी आवश्यकता नहीं रही। लोग हिंदी में बोलते हैं और फोन उसे सटीक देवनागरी लिपि में लिख देता है। इसने उन लोगों को भी डिजिटल रूप से सशक्त बनाया है जो कीबोर्ड टाइपिंग में सहज नहीं थे।
- कृत्रिम मेधा और अनुवाद:** एआई मॉडल अब हिंदी के जटिल मुहावरों और वाक्यों का सटीक अनुवाद कर रहे हैं, जिससे हिंदी में कंटेंट निर्माण पहले से कहीं अधिक सरल और व्यापक हो गया है।
- डिजिटल फॉन्ट और डिजाइनिंग:** 'अमृत फॉन्ट', 'गूगल फॉन्ट्स' और कैनवा जैसे टूल ने देवनागरी को बहुत ही आधुनिक, सुंदर और आकर्षक बना दिया है।

### निष्कर्ष : एक नई 'डिजिटल हिंदी' का अभ्युदय

संक्षेप में कहा जाए तो डिजिटल युग, व्हाट्सएप, मीम्स और सोशल मीडिया ने हमारी रोजमर्रा की हिंदी को नष्ट नहीं किया है, बल्कि उसे पुनर्जीवित और पुनर्गठित किया है। आज की हिंदी कबीर के 'बहते नीर' जैसी है, जिसने डिजिटल माध्यमों के पथरों के बीच से अपना नया रास्ता बना लिया है। यह हिंदी भले ही व्याकरण की दृष्टि से शुद्धतावादियों को थोड़ा परेशान करे, लेकिन **यह जीवंत है, गतिशील है, समावेशी है और सबसे बढ़कर—यह करोड़ों लोगों के संवाद की धड़कन है।** डिजिटल युग में निर्मित हो रही यह 'नई हिंदी' अपनी पुरानी जड़ों (तत्सम व तद्भव शब्दों) और आधुनिक प्रभावों (अंग्रेजी, तकनीक और मीम्स) का एक अनूठा संगम है। आने वाले समय में जो भाषा इस डिजिटल स्पेस में खुद को ढाले रखेगी, वही दुनिया की सबसे मजबूत और प्रासंगिक भाषाओं में गिनी जाएगी और हिंदी यह काम बहुत ही बेहतरीन तरीके से कर रही है।

सुमित कुमार गुप्ता  
प्रशिक्षु, हुडको



## हडको में राजभाषा का वर्चस्व

हडको में राजभाषा विभाग, भारत सरकार द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम में निहित लक्ष्यों को प्राप्त करने तथा राजभाषा संबंधी अधिनियमों और नियमों का पालन करने हेतु प्रत्येक वर्ष अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक महोदय के हस्ताक्षर से जांच बिंदु जारी किए जाते हैं जिनकी अनुपालना हडको के सभी कार्मिकों द्वारा की जानी अपेक्षित है। हडको मुख्यालय में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठकें अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक महोदय की अध्यक्षता में नियमित रूप से प्रत्येक तिमाही में पूर्ण की जाती हैं।



संसदीय राजभाषा समिति द्वारा समय-समय पर हडको मुख्यालय तथा क्षेत्रीय कार्यालयों का राजभाषायी निरीक्षण किया जाता है। वर्ष 2025-26 में संसदीय राजभाषा समिति द्वारा लखनऊ क्षेत्रीय कार्यालय तथा संसदीय आलेख एवं साक्ष्य समिति द्वारा देहरादून एवं चंडीगढ़ क्षेत्रीय कार्यालय का राजभाषायी निरीक्षण किया गया। समिति द्वारा इन क्षेत्रीय कार्यालयों में हिन्दी के उत्कृष्ट कार्यों की सराहना की गई।

राजभाषा अधिकारी द्वारा एचएसएमआई में आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रमों में नवनियुक्त प्रशिक्षु अधिकारियों तथा इंटरनेशनल प्रतिभागियों को हिन्दी का प्रशिक्षण दिया गया।

हडको के राजभाषा अनुभाग में स्थापित हिन्दी पुस्तकालय में समय-समय पर वार्षिक कार्यक्रम में निहित लक्ष्य अनुसार हिन्दी पुस्तकों की खरीद की जाती है। इस संबंध में हडको का प्रत्येक कार्मिक निर्धारित राशि के अनुसार वर्ष में एक बार हिन्दी पुस्तकों तथा साप्ताहिक/पाक्षिक/मासिक पत्रिकाओं की खरीद कर सकता है।



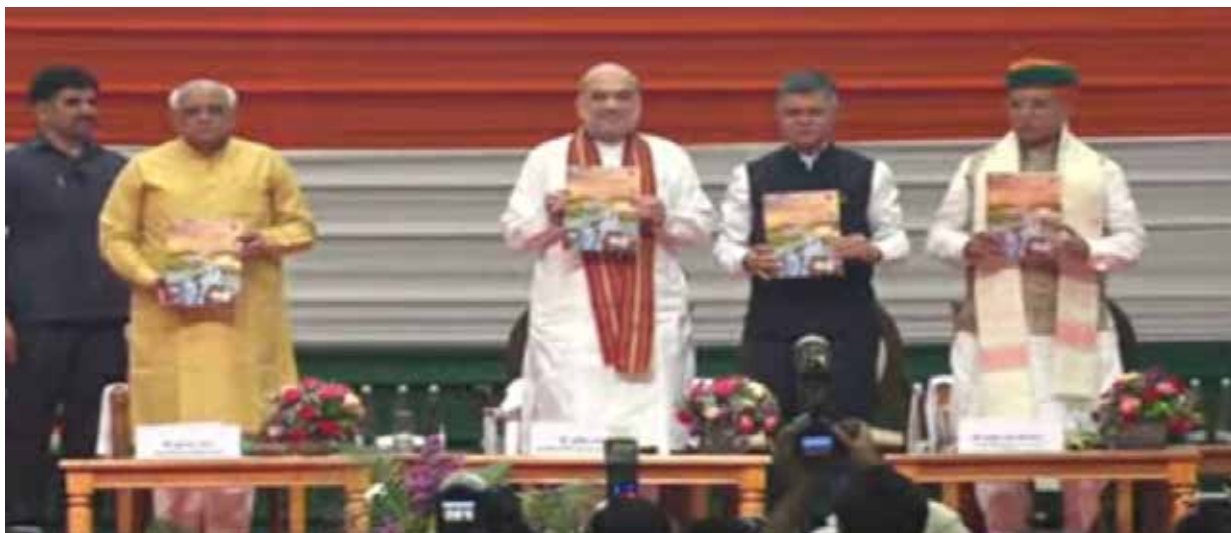
हडको में सभी कंप्यूटर/लैपटॉप पर यूनिकोड की सुविधा उपलब्ध है, जिसके द्वारा सभी अधिकारी हिन्दी में अपना कार्य सुगमता से करते हैं।

- इसके अतिरिक्त कंठस्थ, भाषिणी तथा भारती टूल्स की सहायता से अनुवाद कार्य सुगमता से किया जाता है।
- हडको वेबसाइट पूर्णतः द्विभाषी है। समय-समय पर राजभाषा अनुभाग द्वारा इसे अद्यतन किया जाता है।
- राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा हडको वेबसाइट के त्वरित द्विभाषीकरण की समय-समय पर सराहना की जाती है। यह हडको के लिए गर्व का विषय है।



## राजभाषा अनुभाग की उपलब्धियाँ

- वर्ष 2025 में हिन्दी दिवस के अवसर पर राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार तथा हडको के साझा प्रयासों से 'एआई' विषय पर आधारित पुस्तक का श्री अमित शाह जी, माननीय गृह एवं सहकारिता मंत्री के कर-कमलों से विमोचन किया गया। इस अवसर पर अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक महोदय ने भव्य मंच साझा किया।



- सितम्बर 2025 में श्री तोखन साहू, माननीय राज्य मंत्री तथा आवासन और शहरी कार्य मंत्रालय से संयुक्त सचिव, निदेशक (रा.भा.) तथा उपनिदेशक रा.भा. द्वारा हडको मुख्यालय का राजभाषायी निरीक्षण किया गया। माननीय मंत्री महोदय ने निरीक्षण के पश्चात हडको द्वारा राजभाषा के क्षेत्र में किए जा रहे कार्यों की सराहना की।
- हडको को राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा वर्ष 2017 एवं 2025 में राजभाषा कीर्ति पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

- नराकास दिल्ली उपक्रम-2 द्वारा मुख्यालय की 'आवास ध्वनि' पत्रिका को वर्ष 2025 प्रथम पुरस्कार प्रदान किया गया।
- हडको गृह-पत्रिका 'आवास ध्वनि' के पत्रकारिता पर आधारित विशेषांक को पत्रकारिता के दो सौ वर्ष पूरे होने पर समय से प्रकाशित होने वाली देश की अग्रणी पत्रिका मानी गई है। यह सम्पूर्ण हडको एवं विशेष रूप से राजभाषा अनुभाग की विशिष्ट उपलब्धि रही है।



- संसदीय राजभाषा समिति द्वारा दिनांक 19 जनवरी, 2026 को लखनऊ क्षेत्रीय कार्यालय का राजभाषायी निरीक्षण किया गया तथा अध्यक्ष महोदय ने हिन्दी कार्यान्वयन के क्षेत्र में 'उत्कृष्ट' प्रमाण-पत्र प्राप्त किया।



हडको प्रांगण में दिनांक 23 मार्च, 2026 को नराकास के तत्वावधान में राजभाषा ओलंपियाड प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें नराकास के सदस्य कार्यालयों के प्रतिनिधियों ने बढ़चढ़ कर प्रतिभागिता निभाई। हडको द्वारा एक नवीन पहल के रूप में यह प्रतियोगिता आयोजित की गई। इस अवसर पर एक उत्कृष्ट प्रदर्शनी भी लगाई गई। राजभाषा विभाग एवं दिल्ली विश्वविद्यालय से आमंत्रित वक्ताओं ने हडको के इस अभूतपूर्व सकारात्मक प्रयास की भरपूर सराहना की।

दिनांक 07 अप्रैल, 2026 को आवासन और शहरी कार्य मंत्रालय द्वारा आयोजित हिन्दी सलाहकार समिति का पूर्ण समन्वय कार्य हडको को सौंपा गया जिसके सफल निर्वहन हेतु माननीय मंत्री महोदय तथा संयुक्त सचिव ने हडको की भरपूर सराहना की गई



इसके अतिरिक्त हडको में तिमाही प्रगति रिपोर्ट का निश्चित समयावधि पर प्रेषण, संसदीय राजभाषा समिति द्वारा किये जाने वाले निरीक्षण के दौरान उत्कृष्ट प्रदर्शन, नराकास से संबंधित कार्यशालाओं तथा प्रतियोगिताओं में सहभागिता, ई-ऑफिस में हिन्दी टिप्पण हडको में विविध प्रोत्साहन योजनाएं लागू करना, हडको से इतर राजभाषा अधिकारियों को पुरस्कृत करना आदि सकारात्मक प्रयासों से हिंदी न केवल हडको में बल्कि वैश्विक पटल पर अपना वर्चस्व स्थापित करने में सक्षम होगी।



**डाँ. रेखा चन्दोला**  
वरि. प्रबंधक - रा.भा., हडको



## मैं अच्छा हूँ...

“मैं अच्छा हूँ...”  
और सिर्फ कहता ही नहीं,  
नगाड़े, ढोल, और शब्दों के शोर में  
खुद को साबित भी करता है।

मैं कई वर्षों से देख रही हूँ...  
जब से इस दुनिया ने मोबाइल की स्क्रीन में खुद को समेट लिया  
है,  
जब से अच्छाई पोस्ट बनकर लाइक्स में तौली जाने लगी है,  
तब से एक अजीब खोज शुरू हुई मेरी—

**“बुरा इंसान कहाँ है?”**

मैंने भीड़ में तलाशा,  
मंचों पर तलाशा,  
बड़ी-बड़ी बातों में,  
छोटे-छोटे कामों में...  
हर जगह लोग मिले—  
जो अपने आप को अच्छा बताते रहे।

दो-तीन साल पहले भी मैंने यही सवाल उठाया था—  
लोगों के बीच,  
अपनों के बीच...  
पर जवाब वही आया—  
“यहाँ कोई बुरा नहीं है।”

तब से मेरी खोज और गहरी हो गई।

मैंने सोचा—  
शायद बुरा इंसान वो है,  
जो अपने भीतर की सच्चाई से डरता है...  
जो आईने में खुद को देखने से बचता है...

जो गलतियाँ करता है,  
पर उन्हें मानने का साहस नहीं रखता।

और तब एक दिन—  
खामोशी में बैठकर  
मैंने खुद से पूछा—

**“क्या मैं पूरी तरह अच्छी हूँ?”**

वहीं...  
वहीं मेरी खोज रुक गई।

क्योंकि सच्चाई यह है—  
इस दुनिया में पूरी तरह अच्छा या पूरी तरह बुरा  
कोई नहीं होता।

हर इंसान के भीतर  
एक कहानी छुपी होती है—  
जहाँ अच्छाई और बुराई  
दोनों साथ रहते हैं।

तो शायद...  
जिस “बुरे इंसान” को मैं ढूँढ रही थी,  
वो किसी और में नहीं,  
हम सबके अंदर थोड़ा-थोड़ा मौजूद है।

और मेरी खोज...  
अब भी जारी है—  
लेकिन अब मैं लोगों में नहीं,  
\*खुद के भीतर देख रही हूँ।

**डॉ विभा द्विवेदी रत्नगर्भा**

राष्ट्रीय प्रभारी एवं राष्ट्रीय महामंत्री महिला प्रकोष्ठ  
राष्ट्रीय हिन्दू वाहिनी संगठन



ये रात काली ढल गई  
पर ज्वर अभी ढला नहीं  
ज़हर गले से उतर गया  
पर स्वर अभी गला नहीं।

अंगारे स्वरों में जल रहे  
झरने भी आग उगल रहे  
समंदर का रंग रक्त हुआ  
कछुओं के अंग जल रहे।

पावन धरा धधक रही  
बमों पे बम बरस रहे  
जनता करे तो क्या करे?  
सिंहासन पे राजे जमे रहे।

ना बसंत में वो महक रही  
ना आन्दोलनों की धमक रही  
जनता करे तो क्या करे?  
स्तंभ जनतंत्र के बिखर रहे।

कहने को रात ढल गई  
सूरज भी है निकल रहा  
दिन में भी कैसी रात है?  
उजाला अभी बिखरा नहीं।

निष्ठाओं की डोर थामकर  
कुंठाओं का दामन फाड़कर  
राज-धन-तंत्र को उखाड़कर  
विश्व-जन-तंत्र की स्थापना कर।

ओ! पृथ्वी माँ संतानों  
ये युग तुम्हें पुकार रहा  
राजाओं के तख्ती ताज उखाड़ दो  
प्रजाओं के सिरों पर साज दो।

-कुमार "ध्रुवपद"  
पूर्व संयुक्त निदेशक (कार्यान्वयन)





**हडको**  
**hudco**

A NAVRATNA CPSE

**हाउसिंग एंड अर्बन डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन लिमिटेड**  
**(भारत सरकार का उपक्रम)**

CIN: L74899DL1970G01005276

कोर-7-ए, इंडिया हैबिटेड सेंटर, लोधी रोड, नई दिल्ली 110 003

टेलीफोन: 91-11-24649610, फैक्स: 91-1124625308,

वेबसाइट: [www.hudco.org.in](http://www.hudco.org.in)